भावभूमि

देवना ठाकुर

BlueRose ONE .co.in
Stories Matter

© Devna Thakur 2022

All rights reserved

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

First Published in December 2022

ISBN: 978-93-5704-160-7

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

Cover Design:

Yash

Typographic Design:

Tanya Raj Upadhyay

Distributed by: BlueRose, Amazon, Flipkart

देवना ठाकुर

प्रेरणा- मेरी मां

जन्मस्थान- नाहन

शिक्षा: एम.ए

लेखन विधाएं- काव्य लेखन, आलेख और लघु कथाएं प्रमुखतय:

लेखक प्रकाशन- भाव भूमि मेरी आत्मिक पुस्तक है। इसकी कहानियां विभिन्नता लिए हुए हैं। एक पुस्तक में सभी भाव तो नहीं लाए जा सकते पर यथासंभव कोशिश की है कि जिंदगी के रंग बखूबी नजर आए।

इसमें भाव भूमि तो है ही दीक्षा, मन अब उदास नहीं होता, रूके हुए क्षण,जो कह न सके, तरंग या सपने, विश्वास जैसी कहानियों और अन्य कहानियों में कुछ ऐसी भी हैं, जब मोबाइल या इंटरनेट सेवा नहीं थी। दुनिया आज की मानिंद मुट्ठी में नहीं थी, दूरियां ज्यादा थी पर मन से जुड़े रहते थे। इन्हें लिखा ही नहीं, खुद से जीया भी है।

इससे पूर्व मेरी काव्य पुस्तक बिंब- प्रतिबिंब छपी थी, जिसका दूसरा संस्करण भी जल्द पाठकों के हाथों में होगा। एक अन्य काव्य पुस्तक अगर तुम कहो, भी प्रकाशित होने जा रहा है। घर-परिवार की जिम्मेवारियां के कारण 36 वर्षों के बाद मैंने कलम उठाई है।

रिटायर होने के बाद एक और नई जिंदगी शुरू की है। कॉलेज में कॉलेज मैग्जीन की संपादक रही थी, तब लघुकथाएं लिखना शुरू किया था।

मुझे उम्मीद है कथा का मूलभाव और प्रवाह पाठकों को पसंद आएंगे। इसमें पहाड़ों को अधिक फोकस किया गया है।

- देवना ठाकुर

मेरी नजर से....

सर्वप्रथम देवना ठाकुर को उनकी तीसरी पुस्तक कहानी संग्रह भावभूमि के लिए अनंत शुभकामनाएं देता हूं। एक साल में तीसरी पुस्तक का आना उस दृढ़निश्चय का प्रतिफल है, जिसमें उन्होंने अपने को बिना अविस्मरणीय बनाए निरंतर लिखते रहने का संकल्प लिया है। अपनी कलम के माध्यम से वे आम आदमी के जीवन की विडंबनाओं को कहानी के माध्यम से समझ सके, उनकी परेशानियों, उनकी छोटी-छोटी खुशियों को पहचान सके, उनकी भावनाओं को अपने लेखन के माध्यम से मूर्त रूप दे सके। आपका यह प्रयास सार्थक है। अपनी सोच का जीवन में अवधारण, एक ठोस और दृढ़ आत्मबल वाली नारीशक्ति ही कर सकती है। अध्ययन और लेखन में मगन रहने वाली देवना ठाकुर आत्मकेंद्रित रहकर ही अपने निश्चय को दिशा और गति देने में लगी रही। उनकी कहानी संग्रह भावभूमि में नारी की समस्याओं को सशक्ता से उठाया गया है। वे सामान्य लहजे में अपनी बात कहने की अभ्यासी हैं। बनावट से परहेज करने वाली देवना ठाकुर की कहानियां वास्तविकता के धरातल पर खरी उतरती हैं। उनका मानना है कि वर्तमान युग में गद्य का महत्व अधिक है, इसीलिए वे अपनी बात कहानी विधा के माध्यम से सहजता से कह पाती हैं।

कहानी संग्रह भावभूमि में छोटी-बड़ी 21 कहानियों को शामिल किया गया है। इसमें भावभूमि, समयकाल, नागदंश, दीक्षा, ये अंधेरों की रोशनी, भंवर, जो कह न सके, रूके हुए क्षण, पीला लिफाफा, सपने, न जाने क्यो, श्वास-विश्वास, मन से मन तक आदि कहानियों में उनके लेखन की स्पष्टवादिता साफ दिखाई देती है। सामाजिक बुराइयों को उन्होंने कहानियों के माध्यम से इंगित किया है। साथ ही समाज में रिश्तों के ढीले होते सिरों को जोडऩे का भी प्रयास किया है।

इस पुस्तक के माध्यम देवना ठाकुर ने अपनी साहित्यिक भावों को उजागर किया है। इसलिए ही इस पुस्तक का नाम भावभूमि है। यह पुस्तक आम पाठकों द्वारा पसंद कीजाएगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

- यशपाल कपूर
पत्रकार, कवि एवं साहित्यकार, सोलन, हिमाचल प्रदेश।

कहानी संग्रह भावभूमि

भाव भूमि.....1
समयकाल.....9
नागदंश.....19
दीक्षा.....23
ये अंधेरों की रोशनी.....28
अक्सर.....34
ओह.....39
भंवर.....44
रूके हुए क्षण... 47
जो कह न सके 52
पीला लिफाफा -11.....56
मन अब उदास नहीं होता.....64
तरंग.....67
सपने.....70
न जाने क्यों.....73
मन से मन तक.....84
तुम पलका हो.… 90
श्वास-विश्वास.....96
याद आएंगे वो पल.....101
मालती.....105
जिन रिश्तों के नाम नहीं होते 110

भाव भूमि

उम्र की इस दहलीज पर आ कर लगा वह पहली बार अपने लिए, अपने बारे में गंभीरता से सोच सकी है। जब उसने सबसे अलग अपने बारे में सोचा तो हकबका कर रह गई कुल जमा वह शून्य ही तो थी। अपनों के साथ रहने पर भी वह आज अकेली थी। उसका अपना कोई नहीं, क्या यही जीवन है जो उसकी ढलती उम्र की सांसों पर थिरक रहा है और कभी भी दिल-दिमाग से होता हुआ यह जीवन समाप्त हो जाएगा।

आज इसी दिन से, इसी पल से वह मात्र अपने लिए जी कर तो देखें- उन्मुक्त होकर हंसे, दूर- दूर तक अकेले उगते या डूबते सूर्य को देखते हुए टहले। उसे तो यह भी हीं पता उसे खाने में क्या पसंद है. पर्दों का कैसा रंग होना चाहिए, दीवारों में खूबसूरत कारीगरी कौन सी हो। न उसे यह पता कि क्या शौक हैं उसके। गला सुरीला है तो गुनगुनाती है। नृत्य की कोई भी शैली हो, वह नृत्य कर लेती है। पड़ने में उसका मन लगता है। वह सब कर लेती है पर खुद उसे कौन सा शौक पसंद है- बस वह यह नहीं जानती।

जब-जब वह ऐसा सोचती- उसकी मां उसके सामने आ खड़ी होती। काली सलवार, मटमैले कमीज, सिर पर बंधा ढाठू। कड़ाके के सर्द दिन हों या गंधाती गर्मी मां इसी वेश में आज भी उसी तरह मूर्तिवान हो उठती जैसी वह मरने के अंतिम क्षण तक थी। मां ने ही एक बार बताया था कि विवाह के वर्षों के बाद जब उसने गोरी चिट्टी पुत्री को असहनीय पीड़ा के बीच जाया था तो नन्हीं सी पुत्री के निर्दोष चेहरे को ताकते हुए अनायास ही सोच सोच उभरी थी- हे ईश्वर इसे भी तो एक दिन इसी दर्द से गुजरना होगा। तब मां कहां जानती थी कि वह

तो दर्द लेकर ही जन्मी, पली, खेली और यह सिलसिला उम्र के साथ बढ़ता ही जाएगा।

कितना चाहती थी अपनी मां को, एक ज्योतिपुंज की तरह थी। मां जिसके चारों तरफ सब कुछ व्यवस्थित और निखरा -निखरा रहता था। मां बस कामों में जुटी रहती, मां कब सोती, कब जागती, उसने नहीं जाना। भोर अंधेरे से ही मां की दिनचर्या शुरू हो जाती। ढोर डंगरों का चारा, दूध दुहना, छाछ बिलौना और दूर से बंटे- घड़े में पानी भरकर रखना। जब मां चुल्हे-चौके पर जाती, तब वह जागती थी। कभी-तभी रात को सोचती जब तक मां नहीं आएगी, तब तक वह नहीं सोएगी और मां के जागने से पहले ही जाग जाएगी पर कभी ऐसा नहीं हो पाया। बस रात को जरूर अहसास होता मां उसके पास है।

पहाड़ों के दुर्गम संघर्ष की आदि मां जब ऊंचे-ऊंचे ब्यूल के पेड़ों पर चढ़ कर पत्ते काटती या गहरी-खाइयों में घुस कर लड़कियां चुनती या घास और लकडिय़ों का बोझ उठाये संकरे पत्थरीले रास्ते पर पग-पग उतर कर आती तो उसे ही पुकारती। उसे प्यार करती हुई स्नेह से बिछ जाती मानो थकान उतार रही होती है। उसे और बाबा को खाना दे खुद ढोर- डंगरों को नदी पर पानी-पिलाने चल पड़ती।

कितनी ही भूखी और थकान से निढाल होती मां पर ढोरों को पानी पिलाए बिना खुद नहीं खाती। हम तो सुन लेते हैं नाजो, पर ये बेचारे हमारे ही आसरे रहते हैं ना, इन्हें तो हमें ही देखना होता है, जब वह मां से पहले खाना खाने पर जोर देती , तब यह जवाब होता।

ऐसी ममतामयी मां की मृत्यु ने उसे एकदम से स्तब्ध कर दिया था, फिर मौत भी कैसी। न जाने कैसे पहाड़ों की अभ्यस्त मां पैर फिसलने से सीधे चट्टान पर जा गिरी थी। मां की खून से नहाई लथपथ देह वह कभी न भुला पाई न भुला पाएगी।

चारों तरफ पहाड़ों से घिरा बसा था उसका गांव। मां जब तक जीवित थी बाबा दिनभर तंबाकू की चिलम लिए घर के आंगन में बैठे मां के कामों में नुक्ता-चीनी निकाला करते। घास बढिय़ा है, थोड़ा और काट लेती। लकडिय़ां इतनी छोटी क्यों बटोर लाई, बड़ी देर लगा गी ढोर बांधने में, गुड़ नहीं आज चीनी की चाय बना दे- जैसे जुमले उनके मुंह से निकलते रहते जैसे ये कोई बड़ा भारी काम हो।

मां निर्विकार बनी अपने कामों में जुटी रहती थी। जब-जब फसल बोई जाती तब ही बाबा फसल बोने के समय हल चलाने का काम करते या घर का बना घी बेच दारू पीते।

मां की मृत्यु से सब बिखरने लगा। बाबा को तो कभी कुछ काम करते नहीं देखा। खुद वह बहुत छोटी थी। पहले बाबा ने ढोर-डंगर बेचने शुरू किए। घर का सामान बेचने की नौबत आ गई। बाबा ने फिर जमीन बेचने का ही फैसला ले लिया। फिर पता नहीं किसने उन्हें सलाह दी कि मां की बरसी से पहले बाबा ने दूसरा ब्याह रचा लिया। यह विवाह क्या हुआ कि घर ही तमाशाई हो गया।

कहीं-कहीं के लोग घर में जुटने लगे। मां के प्रति डर और सम्मान के कारण जिस घर को इज्जत की नजर से देखा जाता था, आज वही घर उपहास और व्यंग्य का आधार हो गया। रोज ही घर में नए-नए पकवान बनते।

पहले भी जब मां थी किसी संक्रांति को पतले महीन गोल-गोल पंटडे- खीर बनती, ऊपर से घर के बने ताजे घी की खुशबू, किसी सक्रांति को भारी पत्थर की सकाली में चावल-गेंहू के मिले-जुले आटे की असकलियां बनती और नमकीन मीठे पूड़े तो मां इतने स्वादिष्ट बनाती थी कि अब तक फिर उतना स्वादिष्ट खाना कभी नहीं खाय। पता नहीं उन हाथों में ममता का आधिक्य था या निपुणता की कुशलता। अब रोज ही ऐसे पकवान बनने लगे हैं, पर इसमें न वो सुगंध है, जो भूख बढ़ा दे, न वो ममत्व, जो विभोर कर दे।

मां हमेशा कहती थी- मेरी बेटी पढ़ेगी-लिखेगी। बाबा ने शायद इसलिए नाजो को स्कूल में दाखिल कर, मां का सपना साकार करने की कोशिश की। नाजो साथ ही लगते दूसरे गांव में स्कूल जाने लगी।

अपनी दूसरी मां को तो वह कभी समझ ही नहीं पाई। वह न उससे प्यार करती थी, न ही नफरत। दूसरी मां के लिए उसके होने न होने का कोई मतलब नहीं रखता था। वह तो अपने बनाव-श्रृंगार, खाने पीने और अपने आने वाले मेहमानों के साथ उश्रृंखल व्यवहार में ही व्यस्त रहती। बाबा घर में कभी रहते, कभी कहीं चले जाते। वह खुद भी निर्विकार रहने लगी। इसी तरह पल, माह, वर्ष बीतते गए और उसने 15वें वर्ष में कदम रखा। घर में बदलाव यही आया कि दूसरी मां और बाबा के झगड़े शुरू हो गए। एक - दूसरे पर लांछन लगाते, लड़ते झगड़ते, जब दोनों थक कर सो जाते तब ही शांति होती। यह वातावरण दिन- प्रतिदिन विषैला, तनाव से भरपूर होने लगा था पर शाम होती माहौल गर्मा उठता। अब आने वालों की संख्या पहले से कम हो गई थी पर समाप्त नहीं हुई थी। स्वयं को जानी अंजानी नजरों से बचाती वह घर के पिछवाड़े चली जाती। घर गांव के एक किनारे में था और आने-जाने वालों का रास्ता ठीक घर के सामने ही पड़ता था। कोई भी पानी पीने या यूं ही सुस्ताने कुछ देर रूक जाता था। इन्हीं में एक थे मधुसूदन बाबू। वे वकील थे और अपने मुवक्किलों के मुकद्दमों के कारण उन्हें शहर से दूर इस गांव में आना पड़ा था। वापसी में वे भी घड़ी भर यहां ठहरे थे।

कुछ दिनों बाद वहीं मुवक्किल नाजो के लिए उन्हीं मधुसूदन बाबू के साथ विवाह का पैगाम लेकर आया था। उम्र कुछ ज्यादा है तो क्या, शहर में अच्छी खासी वकालत चल रही है। घर अपना है। फिर उन्हें अपने लिए नहीं पांच वर्षीय पुत्री के लिए नाजो की जरूरत है। .... वैसे भी पहाड़ में इस पढ़ी-लिखी के लिए खेती हर ही जुटेंगे। मां की तरह यहीं मर-खप जाएगी, लडक़ी को अच्छी तरह रखेगी तो वकील साहब भी इसे हाथों हाथ रखेंगे। बस हां कह दो।

दुश्मनी निभानी हो तो बेशक इंकार कर दो। न जाने मां बाबा और उस मुवक्किल के जुड़े सिरों में फिर क्या बातें हुई और उससे बिना पूछे ही हां कर दी।

पांच जनों की बारात में वकील साहब में दुल्हें जैसी कोई बात नहीं थी। धीर-गंभीर दुल्हा, मानो जड़वत रस्में निभाने आया था। फिर पड़ोस की औरतों ने वकील साहब की तरफ से आई दो दर्जनभर चूडिय़ों जो निहायत ही ढीली थीं, उसे पहना दी, चांदी के कड़े, सोने की अंगूठी और चंद गहने और भारी सी साड़ी पहना उसे तैयार कर दिया। फिर चेहरे पर ढेर सारा पाउडर, खूब बड़ी सिंदूर की बिंदी, आंखों में काजल की मोटी रेखा, होठों पर गहरी लिपस्टिक की परत चढ़ा दी और हो गया मेकअप। दपर्ण देख क्षण भर अपने आपको देख वह हैरान सी रह गई, फिर फिस्स करके हंस दी। अग्नि के चारों ओर फेरे लेते हुए काकी का बार-बार कानों में कहना बावरी धीमे चल, धीमे। उसे समझ नहीं आया अब इससे ज्यादा धीमे कैसे चलूं काकी। प्रैक्टिस क्यों नहीं करवाई, काकी बाकी बात तो समझ आई..... पर ये क्या नहीं करवाई। तभी पीछे से दूसरी मां ने काकी का हाथ पकड़ रोक लिया। आपभी क्या साथ ही फेरे लोगी। आसपास की खिलखिलाहट सुन काकी चिढ़ कर बोल ही गई। इस बच्ची को कहां ब्याह दिया इससे तो सच में मेरे ही हो जाते फेरे। दूसरी मां अचकचा गई बाकी सबको घूरते देख काकी आराम से बैठ गई। देखा नाजो अब फेरे लेते हुए धीमे- धीमे सुर में चल रही थी। उसकी मां याद आई तो काकी की आंखों भी भर आई। पंडित के मंत्रोच्चार और फेरे पूरे हो गए थे और हो गया विवाह। विदाई के समय उसे अपनी मां की याद आई और उसकी बातें याद कर बड़ी देर तक रोती रही।

शहर आकर उसे पति से भी अधिक भायी नन्ही मयूरी। वह भी तो इतनी ही होगी, जब मां नहीं रही थी। उसने सोचा और अपरिचित ममता से नन्हीं मयूरी को अपने आंचल में समेट लिया।

धुआंते घर, कच्चे गोबर से लीपे आंगन और सुरमई पहाड़ों से अलग थी यह दुनिया। उसे पति से प्यार की नहीं अभिभावक की ज्यादा अनुभूति हुई थी। पति की इच्छा- अनिच्छा को सर्वोपरि मान उसने अपनी अनुभूतियां दफन कर दी थी। उसे शांति मिलती थी मयूरी के सानिध्य में। उसी में उसने अपना बचपन पा लिया। मधुसूदन बाबू को यह तो अच्छा लगा कि वह मयूरी का इतना ध्यान रखती है पर इस कदर लाड़-लड़ाऩा उन्हें अपने प्रति लापरवाही महसूस होती थी। पर वे शिकायत किस मुंह से करते आखिर ब्याह उन्होंने अपने लिए नहीं अपनी पुत्री के लिए किया था। उसके अपरिमित सौंदर्य से भी वो कभी-कभी असहज हो उठते थे। जो रूप नाजो को पहाड़ों से खींच लाया था, वहीं रूप उसके और वकील साहब के मन का पुल न बन सका। मयूरी बड़ी हो रही थी। वकील साहब अपने मित्रों में व्यस्त रहते या वकालत में। नाजो इन वर्षों दो बार मां बनी पर मृत पुत्रों का दर्द उसे तोड़ऩे लगा था। उसके मन का दर्द सुनने का समय न वकील साहब को था न मयूरी को एहसास था। नाजो कितना चाहती कि एक बार तो मयूरी कह दे कि उसे मां से कितना प्यार है। नाजो की चिंताएं मयूरी का उपहास बनने लगी। मां जरूरी तो नहीं हर बात बताई जाए। अब तुम समय-असमय परेशान करने लगी हो। जब भी वह मयूरी से कुछ पूछना चाहती या बात करना चाहती ऐसे ही दो टूक जवाब मिलने लगे। क्यों मयूरी मैं तुम्हारी मां हूं। तुम्हें अच्छा बुरा बताना मेरा फर्ज है। क्या मैं तुम्हें प्यार नहीं करती, तुम्हारे लिए कोई कमी नहीं रखी। फिर बात बेबात पर ऐसे झुंझलाना आखिर किस लिए। मन का गुब्बार काफी संयमित रहने पर भी फूट पड़ा। पर मयूरी के शब्दों ने उसे धरातल पर ला पटका। आखिर हो तो सौतेली मां, मेरी मां होती तो अहसान तो न जताती, पर तुम्हारा भी क्या कसूर। पापा ने भी तो अपना सुख देखा। अश्रुपुरित नेत्रों से नाजो ने मधुसूदन बाबू की तरफ देखा, पर वह तटस्थ भाव से आंखे बंद किए लेटे रहे।

वर्षों पहले देखी मां की क्षत-विक्षत देह की तरह नाजो का मन भी क्षत-विक्षित हो गया।

आखिर किस लिए अपनी इच्छाएं, सपने, भावनाएं, कुचलती रही। इसलिए कि जो ममत्व, स्नेह, फिक्र वह पा न सकी। मयूरी को दे दे या मधुसूदन बाबू का अनायास एकाकी हो जाना, वह दूर कर सके। पर स्वयं उसके लिए मात्र क्षणभर को किसी ने सोचा। अपने बारे में सोचना स्वार्थ हो सकता है पर खुद को मिटा देना, भुला देना भी तो बिडम्बना ही है। अब खुद के लिए भी जिएगी शेष जिंदगी का हिस्सा शून्य में नहीं बिखरने देगी। प्रात: मधुसूदन बाबू के अदालत जाने और मयूरी के कॉलेज जाने के बाद उसने गीताबेन से मिलने का निश्चय किया। गीताबेन एक स्कूल चलाने के साथ ही समाजसेवी भी थी। कभी कभार आते-जाते कुशलक्षेम पूछने के साथ ही हल्की- फुल्की बातचीत भी हो जाती। उन्होंने ही कभी चर्चा की थी कि जहां समाज के दुत्कारे, प्रताड़ित, शोषित. अपाहिज लोग आश्रय पाते हैं, उसी आश्रम में किसी नियुक्ति की बात की थी। मिलने पर उन्होंने उत्साहित करते हुए कहा , तुम्हें कहीं भी जाना पड़ सकता है आश्रम की पूरे देश में दूर- सुदूग शाखाएं हैं। नाजो ने कहा मैं जाउंगी गीताबेन। उन लोगों का दुख मैं क्यों न समझ पाऊंगी, इस तरह मुझे खुद की भी तो तलाश करनी है।

कुछ दिनों बाद चंद जरूरी सामान समेटते हुए उसने मधुसूदन बाबू और मयूरी के सामने घोषणा कर दी। मैं जा रही हूं, गीताबेन के साथ. कब आऊंगी या न आऊंगी पता नहीं। अगर चाहो तो मेरे आने पर दरवाजा खोल देना, न चाहो तो बंद दरवाजे से ही मैं समझ जाऊंगी।

आज उस घटना को बीते हुए बहुत ज्यादा समय तो नहीं हुआ। पर आश्रम में रहते हुए, जिस आत्मसंतोष और शांति का अनुभव किया। इससे हट कर पुन: उस निर्विकार और स्वार्थी माहौल में जाने का साहस नहीं जुटा पाई और न ही

फिर उस दरवाजे पर दोबारा दस्तक दी। मन में यह सोच तो थी कि मयूरी या मधुसूदन बाबू को जब जरूरत होगी, मुझे ढूंढ लेंगे।

……..000000000……..

समयकाल

कोई भी कहानी कहां से शुरू होती है और कहां पर समाप्त होती है। यह तो कोई नहीं जान पाता पर जिंदगी कब पैदा होती है। कब समाप्त होती है,यह हम तिथियों में गणना कर सकते हैं।

अब हम किसी भी साधारण घटनाक्रम कहानी से प्रभावित नहीं होते क्योंकि इतना कुछ असहनीय और अविश्वसनीय घट चुका होता है। हमारी भावनाएं स्थिर हो कर रह गई है, पर फिर भी सब कुछ समाप्त नहीं होता।

दुनिया जी रही है- समय अपनी चाल चल रहा है। हम खुश होते हैं तो मानो जल्द चलता है। हम उदास दुखी होते हैं तो मानो रूक कर चल रहा है।

कितने काल, कितने युग और कितने-कितने वर्ष बीत चुके हैं। सबके अपने महत्व थे और अपने उसूल और पाबंदियां थी। इंसानियत

थी, पर धीरे-धीरे इंसानियत कम होने लगी और जानवरों के अंश इंसानों में पैदा होने लगे- आज- आज भी इंसान हैं पर उनके शरीर ही इंसान होने का आभास देते हैं, पर मन, आत्मा कहीं खो सी गई है।

कहते हैं कलयुग जब समाप्ति पर होगा तो जो विश्वास करेगा, वही मरेगा- शरीर से भी और मन से भी. तब जीना कितना कठिन होगा, अपने आगे खेलते-पढ़ते, कभी-कभी खिलखिलाते बच्चों को देखकर मन सोचता है।

नाम । आखिर क्या रखूं अपनी नायिका का, नायक का या और भी जो पात्र होंगे। उन्हें किस नाम से पुकारू। लोगों के नाम कुछ होते हैं और बताते कोई और नाम हैं। पसंद कोई नाम है तो चाहते हैं कोई उन्हें किसी और नाम से

पुकारे। नाम के अर्थ उन्हें स्वयं मालूम नहीं होते- पर मालूम भी हों तो वे उन पर भी खरे नहीं उतरते- अजब पहेली है, पर नाम पहचान भी तो होते हैं।

मेरी नायिका का नाम रावी ठीक रहेगा। नदी की तरह बहती हुई सी- ठहरी हुई सी,जो यदि सूख न गई तो उसे समुद्र में ही मिलना है। वह पैदा हुई तो अवांछित, अनचाही सी। पैदा होती ही मर जाती या बाद में भी मर जाती तो भी क्या फर्क पड़ता। पर भाग्य रेखाएं यहां पर आकर ही तो प्रबल हो उठती है। वह जीवित थी और खूब जीवित रही। अन्य साधारण लड़कियों की तरह पली पर वह उनके अलग तो थी ही आखिर मेरी नायिका है, उसे सबसे कुछ भिन्न तो होना ही चाहिए। पर भिन्न वह सिर्फ ज्ञान अपने गौरांग, बलिष्ठ शरीर सौष्ठव और बहुत ही कम बोलने में ही नहीं थी अपितु अपने संतुलित हाव-भाव और सोच में अलग-थलग थी। जब उसकी उम्र की लड़कियां गुड़ियों से खेलती थी, वह अपनी दुनिया में खोई रहती थी। रात को जब सभी बहसबाजी में उलझे रहे, दिनभर का लेखा-जोखा करते, उस समय वह घर के आंगन में चारपाई पर लेटी तारों को गिनने का उपक्रम करती।

रावी का बचपन सुख से ही बीता। उसकी कोई भी इच्छा- अनिच्छा तो थी नहीं, जो उसे परेशान करती। तो जैसा मिला उसे स्वीकार्य हुआ।

घर जमीन, जायदाद, रुपया-पैसा सभी होते हैं पर इनके रूप बदलते -बनते रहते हैं। जीने के लिए तो सबसे जरूरी हवा-जल होते हैं। शेष हम इंसानों को बनाए हुए आडंबर ही तो हैं। एक की जगह दो और दो की जगह चार का सिलसिला बढता ही रहता है। कहां से हुआ, इसका मतलब नहीं, बस होना ही चाहिए। सो रावी इन सब बातों से अलग अपनी पढ़ाई और दुनिया में मस्त रहती। कौन क्या बोल रहा है, किसे किसकी क्या पड़ी है, उसे इससे कोई मतलब नहीं। इकलौती पुत्री को जो चाहिए माप-तोल के हिसाब से उसे प्राप्त ही था।

उस छोटे से शहर में ही मानो उसकी दुनिया थी। माता-पिता और ये नौकर-चाकर ही उसकी दुनिया के बाशिंदे थे और वह वहां की राजकुमारी। इकलौती थी सो मां का ध्यान तो रहता ही था। उसे सर्वगुण संपन्न कैसे बना दूं। ऐसे नहीं ऐसे चलो। पहले ऐड़ी धरती पर टिकाओ, धीरे से फिर पंजा रखों। रोटी को तवे पर इस तरह सेको। पहले जल्द पलटो, फिर थोड़ी देर के बाद, इससे रोटी फूलेगी समेत और भी कितनी बातें। मां ने उसे आर्शिवाद, संस्कारित और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने जैसे न जाने कितने गुण भरे। अपनी पुत्री में मानो वह इंसानियत के साथ ही देवत्व गुण भी भरती चली गई। आस-पास के इलाकों में भी उस गुणी पुत्री का गुणवान होने पर मां मानो स्वयं को भी उससे कमतर आंकने लगी। काश वे उसे दुनियादारी भी समझा पाती तो आज भी रावी नदी सी अविरल बह रही होती पर यह तो बहुत बाद की बात है। उदारमना रावी की पुस्तकें परिस्थिति के साथ ही मनपसंद वस्त्र भी कब उसकी सहेलियों में बंट जाते,उसे पता भी न चलता। अजब सा सुकुन मिलता है उसे यह सब करने में।

रवि से उसकी भेंट भी अनायास ही हुई थी। तेज-तर्रार रवि उन लड़कों में गिना जाता था, जिसके पीछे कॉलेज की अधिकतर लड़कियां फिदा हुई जाती थी। फ्लर्ट करने में उस्ताद रवि से पहली भेंट उस समय हुई थी, जब रावी अपनी मां के साथ किसी सिलसिले में उनके घर गई थी। उसकी मां की मां की सहेली थी। उसके संस्कारित व्यवहार से जहां क्षितिज की मां प्रभावित हुई , वहीं रवि मुंह बिचका लिया था। कॉलेज में पढ़ते-पढ़ते एक वर्ष हो गया था पर अभी तक दोनों में कोई जान-पहचान नहीं हो पाई थी। हां, इसके बाद जब कभी कॉलेज में टकरा जाते तो हाय-हैलो होने लगी।

रवि का पढ़ने से दूर-दूर का कोई भी रिश्ता नहीं था। यह उसके लिए समय बिताने का एक बहाना मात्र था। पिता का बिजनेस ही तो उसे संभालना था। रवि उससे एक वर्ष सीनियर था।

उसके अंतर्मुखी स्वभाव के कारण उसके मित्रों की संख्या नगण्य ही थी। खासकर पुरूष मित्रों में सिर्फ एक चैतन्य ही था, जिससे बातें करने में उसे हिचक तो नहीं होती थी पर एक रात सी जरूर मिलती थी।

मानसिक और बौद्धिक स्तर पर उसे चैतन्य अन्यों से भिन्न लगता था। उसकी सोच का दायरा घर-परिवार से हुए हुए भी दीन-दुनियां से विस्तृत था।

उम्र बढ़ने के साथ ही उसके रूप-गुणों की महक बढ़ती जा रही थी। इतने धनवान माता-पिता की इकलौती पुत्री वो भी इतनी संस्कारवान।

समय अपनी रफ्तार से चलता है। कभी लगता है कि प्रलय आने पर भी यह चलता रहेग। समय का न रूप है, न रंग, जिस तरह पानी और वायु का भी कोई रूप है, न रंग। ये हमारी जिंदगी के ऐसे पन्ने हैं तो, जो हमारे बिना तो रह लेते हैं पर हम इनके बिना समाप्त हो जाते हैं।

इस दुनिया में रहने के लिए जिस चातुर्य, काइयांपन और स्वार्थी होने की जरूरत होती है, उसमें रावी जैसी पुत्रियां को या तो स्वयं को समय की धार पर छोड़ देना होता है या स्वयं को चुनौती स्वीकार कर मुकाबला करना होता है।

मां कठोर और अनुशासन की जिस डोर से उसे बांधती रही, वह इस दुनिया की डोर से बिल्कुल अलग है। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद भी उसकी दुनिया का आकाश विस्तृत नही था। दूर-दूर तक फैला हुआ और निर्मल आकाश। इस पढ़ाई में भी तो कहीं पर नहीं लिखा था कि जीने के लिए और कितना संघर्ष करना पड़ता है। साफ सपाट रास्ते पर कांटे होते ही नहीं, बिछा भी दिए जाते हैं। फूल तोड़ते ही नहीं मसल भी दिए जाते हैं। पेड़-पौधों, फूलों में जिंदगी मानने वाले वाले भी जब अपनी असलियत पर आते हैं तो इंसानों तक नहीं को नहीं छोड़ते।

अपनी सहपाठियों की जरूरतों को पूरा करते हुए उसे कभी भी नहीं लगा होगा कि ये उससे भिन्न भी हैं। सोचती रावी अभी तो मन की तारें भी नहीं झंकृत हुई और चैतन्य भगा ले जाने की बात भी सीधे ही बोल देता है। विचारों को झटक वह इस बात को नकार ही देती।

इस छोटे से शहर में तकरीबन हर सुविधा थी पर जिंदगी में लिए , जिसे फैलाव की जरूरत होती है, वह यहां नहीं था। जिंदगी सिमटी, सकुचाई सी थी और इसके दायरे से निकलना भी मुश्किल ही था पर जो निकला वह कहीं न कहीं पहुंच ही गया। कहते हैं यह शहर शापित है, यहां पर बाशिंदे जी तो लेते हैं पर पनप नहीं पाते।

पिता को तो नहीं पर रावी की मां को लगता था कि उनकी बेटी बस आगे बढ़ती ही रहे। अनंत सीमा तक उड़ती रहे। वह उसे अपने आंचल में भी समेट कर रखना चाहती थी और उसके उड़ने के लिए आकाश भी देना चाहती थी। रावी हमारे समय से अच्छा तुम्हारा समय तो है पर बेटा संभल कर रहना। मां नसीहत भी देती तो रावी उसे संभाल कर तो रखती पर कौन सी बात किस मतलब की है, वह क्या जाने। चलते समय पांव टिका कर चलती, कहीं पांव रपट न जाए। बेवकूफ रावी क्या जानती थी कि जिंदगी का सीधा सपाट रास्ता जैसा दिखता है, वैसा होता नहीं। रास्ते में पड़े पत्थर कांटे दिख जाए तो हटा भी लिए जाएं पर यदि न दिखें तो इसका मतलब रास्ता इतना भी सरल सीधा नहीं है। उसके सीधेपन, सरलता को समय ने एक बेवकूफ बना दिया। जो जैसा दिखता है, वैसा नहीं होता । चाहे वह किसी का चेहरा हो या रास्ता हो। धीरे-धीरे चैतन्य से उसकी मुलाकातें बढ़ने तो लगी पर मर्यादित ही रही। चैतन्य तुम मुझे भगाना चाहते हो पर मेरा दिल तो तुम्हारे लिए धड़कता ही नहीं। वह कहती तो चैतन्य भी हंस पड़ता, लगता है जनाब को सही-गलत की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। वैसे भी मैं तुम्हें भगा कर नहीं, उठा कर ले जाऊंगा- समझी।

समय के गुजरने का अहसास तो बाद में ही होता है, जब वह गुजर चुका होता है। वर्ष बीते। इस वर्ष जब उनका कॉलेज में अंतिम वर्ष था तो अनायास ही घटनाक्रम घट गया। रावी को पता भी न चला कि कब रवि ने उसके जीवन में प्रवेश किया। लड़कियों से घिरा रहने वाला रवि अनायास ही उसे सबसे अलग-थलग पा कर भी उसकी ओर आकर्षित हुआ। पर क्या यह आकर्षण था, प्यार था या यूं ही रिश्ता था , पर कुछ तो था ही। एक दिन खूबसूरत कार्ड पर एक पत्र उसके हाथ में थमा कर वह चला गया। हैरान परेशान रावी की समझ में पहले तो कुछ भी न आया। फिर उसने खोला तो अजब सी भाषा में लिखा उसका पत्र उसके जीवन को महका गया। लगा रवि जैसा दिखता है, वैसा है नहीं। उसका इतना भी साहस न हुआ कि वह उसे डांटे- पत्र लौटा दे या फिर चैतन्य को ही दिखा दें। वह डरी-सहमी काफी देर शून्य में बैठी रही। रवि की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी, वह अब कॉलेज में पढ़ने नहीं उसे या लड़कियों को देखने या बात भर कर पाने का मौका देखने ही आता। पर पता नहीं क्यों वह उसकी ओर न चाह कर भी आकर्षित होने लगी थी। रावी के शांत भाव से भिन्न रवि का भाव मानो पहाड़ी नाले-खाले जैसा ही था। पूरी उग्रता से बरसात में जब खाला बहता है तो अपने आस-पास की सभी वस्तुओं को अपने में समाहित कर लेता है। उसकी भयंकर गर्जना, उग्रता मानो रावी के शांत-शीतल नदी की चाह में और उग्र हो उठती। आखिर यह अपने आप को समझता क्या है, रवि की नजरों का अहं कई बार उसे कचोटता। पर फिर भी वह उसे दबी-छुपी नजरों से ताकने लगी थी। कॉलेज आते ही उसकी नजरें रवि को ढूंढने लगती, जब वह कहीं से अचानक आ कर खड़ा हो ता तो बस एक नजर देख वह मानो पूर्णता से भर उठती। पर यह सब बाते इतनी धीरे-धीरे घटित होती कि किसी और को तो क्या स्वयं, उन्हें मालूम नहीं पड़ा कि वे किस अंजाम पर पहुंच रहे हैं।

जिंदगी की रफ्तार समय के साथ चलने की कोशिश तो करती है पर उतनी निरंतरता से नहीं चल पाती। कितने चेहरे रोज मिलते हैं, कई बार- मिलते हैं और कई एक बार मिलकर कभी नहीं मिलते हैं। हम भी तो कितने चेहरे याद रख पाते हैं। बस वही चेहरे जो हमें दुख दें, सुख दें या कई बार यूं ही से चेहरे जो जिंदगी को जुड़ा भी देते हैं। रावी को अपनी जिंदगी में जितने भी चेहरे याद रहे, उनमें मानो बस एक ही चेहरा उस पर छाता चला गया। मन की थाह पाना कभी-कभी कितना दुश्वार होता है? चाह कर भी कभी हम ऐसी बातें कर उठते हैं, जो जिंदगी का रूख बदल कर रख जाती हैं। यह तो उसके अंजाम तक पहुंचने पर ही पता चल पाता है कि यह सही है या गलत। कभी-कभी हम खुद कुछ नहीं होते पर परिस्थितियां ही उसे सही-गलत ठहरा देती हैं।

यह कॉलेज का अंतिम वर्ष था। इसके साथ ही भविष्य की संभावनाओं के द्वार थे। यह वह समय था, जब लड़कियां पढ़ती थी, नौकरी भी करती थी, जिम्मेवारियां भी संभालती थी पर फिर भी सबसे पहले उनके विवाह की बात ही चलती थी। रावी को इससे कोई मतलब नहीं था कि उसे अपने भविष्य के बारे में क्या सोचना है। मां हैं- पिता हैं जैसा जो भी चाहेंगे, उसे मान्य होगा। रोज आते रिश्तों के बीच उसे मानो क कहीं न कहीं रवि से रिश्ते का इंतजार रहता। तब न इतने फोन थे , न मोबाइल। बस कभी-कभार, इधर-उधर, आते-जाते कभी रवि दिख भर भी जाता जाता तो उसे राहत मिलती। उसे इंतजार रहता कब मां अपनी सहेली से मिलने जाती और वह भी साथ जाती।

हां तब रवि कहीं भी होता , वह जरूर सामने आने की कोशिश करता- कोई बात भी करनी होती तो ऐसे व्यवहार करता मानो वह रावी से बाते करते हुए बड़ा अहसान कर रहा हो। वहीं लड़कियों की बातें कैसे कौन और कितना उस पर मरती है, पर वह भाव नहीं देता। किसी भी घटना को इतने रोचक ढंग से सुनाता कि वह एकटक झूठी-सच्ची बातों को मानो अपने अंदर ही समाहित कर रही होती है। अपने बड़प्पन और अंह की जिस बेदी पर रवि चढ़ बैठा था

उससे उतरने में जिंदगी की सांझ भी आ जाएगी पर वह वहीं बैठा रहेगा। पर किस बात पर रावी कभी भी समझ नहीं पाई। तब तो उसने यही सोचा था कि रवि कितना बुद्धिमान है, कितना परोपकार भरा पड़ा है, उसके भीतर और वह खुद को कमतर आंकती। सचमुच रवि बात भी कर ले तो यही उसकी निधि है। उसकी आकाश छूती बातों में बह कर वह खुद को हीन ही समझने लगी थी।

मां हमेशा कहती थी मेरी बेटी का भाग खूब बड़ा है। वह तो पारस है, जिससे भी जुड़ती है, उसे ही मानो सोना बना देती है। पर खुद के लिए उसका भाग कैसा रहा- यह तब न मां ने सोचा न उसे महसूस हुआ था। पारस तो पारस ही रहेगा वह तो सोना नहीं न बनेगा। सोना तो पत्थर बनेगा और रावी तो सिर्फ पारस रही।

एक दिन पता चला रवि की नौकरी लग गई है पर उसने तो उसे तरजीह नहीं दी। पिता का इकलौता वारिस या

परंपरा के अनुसार उसे ही भवन-निर्माण कार्य संभालने थे। शौकिया कुछ माह नौकरी करने के बाद उसने इस्तीफा दे दिया और अपनी कंपनी से जुड़ गया।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। इसी बीच उसे कभी-कभार चैतन्य का ध्यान तो आता पर उसके बारे में जानने का और कोई जरिया भी तो न था। इधर-उधर से कुछ पूछना, जानना भी चाहा तो किसी से भी पता न चला कि वह कहां है। उसके घर-परिवार केबारे में तो वैसे ही किसी को भी ज्यादा पता नहीं था। ऐसे ही बात उड़ी थी कि पिता बचपन में ही मर गए थे और वह विधवा मां का बेटा है, जो पिता की मौत के दो वर्षों बाद पैदा हुआ था। सामाजिक बहिष्कार के बाद मां ने आत्महत्या कर ली थी। वह दूर-पार के रिश्तेदारों में पला- बढ़ा। तब रिश्तेदार इतने संगदिल और तंगदिल भी नहीं थे। उनमें से किसी-किसी के बीच यह भाव रहता ही था। है तो इंसान की औलाद, पल बढ़ जाएगा तो इसका भाग्य। हमारा क्या, दो रोटी खा लेगा तो पुण्य ही मिलेगा।

इसी तरह वह पला-बढ़ा पर बुद्धि विधाता ने इतनी तीव्र दी थी कि जिसका कोई सानी नहीं था। दीन-दुनियां की बातों से दूर इसे अपनी मृत मां से बहुत प्यार था। अपनी मां के पति से भी और अपने पिता से भी लगाव था। इन तीन धुरियों के बीच वह स्वयं को कभी भी लांछित न कर पाया। विधाता ने उससे सब छीना पर उसे जीने का रास्ता भी दिखाया। टॉप पर आने के बाद, वह कहां गया कोई नहीं जानता था। तुम्हें उठा कर ले जाऊंगा, कभी ये शब्द रावी के कानों से टकराते तो दूसरे ही कान से बाहर निकल जाते। काश उसने ऐसा न किया होता पर समय भी तो इंसान को उसी के रास्ते से समझाता है। वह चमत्कार नहीं करता पर कई बार जब इंसान समझता है तो बहुत देर हो चुकी होती है।

बेटियां घरवालों को इतनी नहीं जितनी बाहर वालों को शादी करने लायक लगती है। रोज कोई न कोई अपने- अपने तरीके से मां से पूछते। इसी बीच रवि की मां भी आई। पर ये रावी को यकायक क्या हुआ उसने घोषणा कर दी कि वह विवाह नहीं करेगी। वह चली गई तो मां-पापा का क्या होगा। फिर तो रवि भी आया उसे सब कोई समझाने पर लगे थे, जो घटनाएं घटी ही नहीं उनका भय दिखाते रहे। पर जो एक बार इंकार किया तो फिर वहीं उसका सबको जवाब था। बरसों इसी तरह बीत गए उसने सब कुछ संभाल लिया था। इसी बीच मां चल बसी और कुछ समय बाद पिता भी, उनका अंतिम संस्कार भी उसी ने किया।

जिंदगी सीधी सपाट मार्ग पर नहीं, उबड़-खाबड़ और तीखे मोड़ों से गुजर कर ही मंजिल तक पहुंचती है। रावी ने अपने भीतर की औरत को भी मरने नहीं दिया। भावनाओं,विचारों और कामनाओं के बीच ही उसने अपना रास्ता बनाया। बाहर से वह कठोर और दुनियादारी में दक्ष थी। लोग एकसार जो भीतर और बाहर से एक जैसा मन या सोच रखने वालों को बेवकूफ समझते हैं।दो चेहरे मानो संसार रूपी नदी को पार करने के लिए दो पतवार हैं या तैरने की दो

बाजुएं। कितना अजीब सोचते हैं कि नदी पार करने केलिए पहले खुद की इच्छाशक्ति और साहस होना जरूरी है। रावी को याद है उस शाम जब आंगन में अकेली बैठी आकाश को ताक रही थी तो कहीं से कोई धीरे से आकर उसका सिर थपथपाने लगा। क्षण भर भी नहीं लगा, रावी के हाथ में खुखरी थी। पर जब चेहरा देखा तो हैरान रह गई। इतने बरसों में तो चेहरे बदल जाते हैं पर चैतन्य वैसा ही था। रावी चलो मैं तुम्हें उठा कर ले जाने आया हूं। पल भर रावी की भावनाएं वहीं पर उसने खुखरी लहराते हुए कहा-दोबारा मत आना, जान बचानी तो अभी के अभी निकल जाओ। मैं नहीं जानती तुम कौन हो। रावी तुमने भी अभी तक विवाह क्यों नहीं किया। गिड़गिड़ाया चैतन्य।

यही लोगों की गलतफहमी है कि मैने किसी कारण विवाह नहीं किया। मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी। रावी का स्वर उत्तेजना से ऊंचा हो गया था। आखिर ये समाज में लोग समझते क्या हैं,नारी की सोच से क्यों उन्हें मतलब नहीं अपनी जिंदगी क्यों वह अपनी मर्ज़ी से नहीं जी पाती... आखिर क्यों इन्हीं की इच्छा अनिच्छा से जीना पड़े , उसके इंकार करने पर रवि ने उसे उस दिन अपने दोस्तों के साथ उसे जबरदस्ती गाड़ी में घसीट कर जो कुछ किया था उसे आज बरसों बाद चैतन्य ने याद दिला दिया तभी चौकीदार दौड़ा हुआ आया। बीबी जी क्या हुआ।

चौकीदार कई बार डिप्टी कमीशनर साहब के कार्यालय में उनसे मिल चुका था। देखा बड़े साहब सिर झुकाए पिछले गेट की तरफ से लौट रहे थे और बीबी जी आराम से लेट फिर आकाश ताक रही थी...बीबी बेटी बाहर लोग आए हैं आपसे मिलने कुछ शिकायतें ले कर डीसी साहब से मिलना है आपको साथ लेकर। यकायक रावी सब भुला कर अपने गांव की कर्मठ प्रधान बन उठ बैठी

……..000000000……..

नागदंश

मैं नहीं जानती विश्वास का टूटना अधिक पीड़ादायक होता है या विश्वास टूटने का कारण अधिक पीड़ा देते हैं। पर माधुर्य के साथ जब ऐसा हुआ तो उसे लगा हिमालय पर्वत के साथ जब ऐसा हुआ तो उसे लगा हिमालय पर्वत से ज्वालामुखी के फटने या समुद्र के ज्वार-भाटा सी ये भावनाएं कितनी आहत कर देती हैं।

उम्र के पूरे 35 साल गुजर जाने पर भी मानो समय, वहीं ठहर -भर गया था। न चेहरे की रौनक में बासीपन आया था और न ही शरीर की व्याख्या बदली थी। लगता है चांद की शीतलता और सूर्य की प्रखरता तुममें अभी भी है। अक्सर संभव उसे कहता तो वह मात्र मुस्कुरा पड़ती पड़ती क्या सच । पर ये तुम्हारे प्यार और मेरे विश्वास की चमक है संभव वरना डियर अब इन भावनाओं की कौन कद्र करता है।

जानती हो मंजरी वह अक्सर अपनी मित्र से कहती- जिंदगी में अगर कोई कीमती चीज है तो वह है मेरा पति संभव- अमूल्य और बेशकीमती हीरा- उसी प्रखरता से चमकता हुआ नगीना।

घर में अपने विवाह की चर्चा चलने पर एक दिन वह संभव को घर ले गई थी। मां-बाप बचपन में ही गुजर चुके थे। एक बड़े भाई और भाभी थी सो माधुर्य ने संभव को उन्ही के सामने खड़ा कर दिया था। एकाएक सामने पडऩे से भैया-भाभी अचकचा गए थे। न प्रभावशाली व्यक्तित्व न गरिमा। न बोद्धिकता का मापदंड और न ही ऐश्वर्य सा जीवन देने वाला पैसा। आखिर इसमें उसकी बहन ने ऐसा क्या खोज निकाला। उसकी जिद्द के आगे उनकी एक न चली और

सचमुच विवाह के बाद एक औरत जो भी कल्पना कर सकती संभव ने उसे पूरा कर दिया।

सरकारी कॉलेज का एक प्राध्यापक, उसे कितना प्रसन्न रख सकता है, उसके भाई-भाभी ने भी तब जाना था कि वास्तव में पैसा ही सब कुछ नहीं होता। मान-सम्मान, प्यार श्रद्धा जो भी मानवीय भाव संभव ने माधुर्य को दिए, उससे न सिर्फ वह स्वयं भाई-भाभी भी संतुष्ट हो चले थे।

पिता की छोड़ी संपति का एक बड़ा हिस्सा, पति का असीमित मान-मनुहार बच्चों की मासूमियत और रिश्तों की गरिमा। सभी कुछ तो था माधुर्य के आसपास। फिर कहां चूक हो गई उससे। उसने मनोविज्ञान पढ़ा था, जो वह स्वयं नहीं हो सकती, स्वयं नहीं जान पाती। वह भी उसने पढ़ा और समझा था। उस गणित के आधार पर कहीं कुछ ऐसा नहीं था, कि उसे कभी अहसास भी हो पाता कि उसके नीचे की जमीन कहीं दरक रही है।

संभव जैसा पति पाने की आकांक्षा उसके आस-पास सभी को थी। एक आदर्श दंपति, एक विश्वसनीय मित्र उन्हें सभी मानते रहे हैं फिर क्यों यह अनहानो हो गई। काश संभव कभी तो उससे शिकायत करता कोई शिकवा करता, पर वह तो मानो परम तृप्ति से रचा-बसा मनुष्य बना रहा या वह उसे पहचान ही नहीं पाई।

आखिर क्यों कोई इंसान संपूर्णता संतुष्ट और परितृत्त नहीं होकर रह पाता। क्यों संबंधों में बिखराव आते हैं- किसी गलती को ठीक किया जा सकता है तो क्यों हम इंसानों की तरह नहीं रह पाते। एक राक्षस, दानव और आततताई क्यों हमारे भीतर पैदा हो जाते हैं।

जिंदगी कितनी खूबसूरत है- वह हमेशा सोचा करती थी पर वह जिंदगी को किस रूप में लें, यह प्रश्न उसके समक्ष खड़ा हो गया। आखिर काफी कशमकश के बाद उसने संभव से सीधा पूछ ही लिया। संभव जब प्रिया, तुम्हारे लिए

इतनी ही प्रिय थी तो तुमने मुझसे विवाह ही क्यों किया। वाह माधुर्य तुम भी खूब हो। इतना पैसा, इतनी अच्छी पत्नी और इतना प्यारा घर मुझे और कहां मिल सकता था। न उसने सफाई दी, न टाल-मटोल की और न ही उससे किसी तरह की मान-मनुहार की। बस दो टूक जवाब दे ढिठाई से हंस -भर दिया। उसकी ढिठाई ने माधुर्य को और भी कहीं से तोड़ कर रख दिया। एक हल्की सी किरण भी उसे विश्वासघात की गुफा में दिखाई न दी। क्या सचमुच यह आदमी इतना भंयकर था, वह पहले क्यों न जान पाई। जिंदगी के इतने-इतने पल उसने एक छलावे में ही गुजार दिए।

माधुर्य, आखिर तुम इतनी बेचैन, उदास और परेशान सी क्यों रहती हो। अक्सर पूछे जाने वाला यह प्रश्न एक दिन मन्मथ के आगे उत्तर बन ही गया। कॉलेज का सहपाठी जो संभव का भी मित्र था- माधुर्य उसके आगे बिखर ही गई। संभव का विश्वासघात, उसकी निर्दयता और अक्सर प्रताड़ित करने वाली कटुक्तियां उससे कह गई। न जाने किन पलों में वह बह गई कि कुछ भी छिपा न रह सका। एक औरत, उनके विवाह से पहले उसके समानान्तर संभव की जिंदगी में बनी रही। यही कचोट उसे भीतर तक हिला गई थी। अब तो संभव का बेहयापन और भी बढ़ गया था। बच्चे हॉस्टल में थे, पैसों की माधुर्य को कोई तंगी न थी। संभव का होना न होना, उसके लिए कोई मजबूरी नहीं थी। पर क्या यहीं समब कुछ होता है। कभी उसे लगाता वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठेगी। भैया-भाभी विदेश चले गए थे और उन्होंने बच्चों को भी बुलाने के लिए माधुर्य से सहमति ले ली थी। वे भी चले जाएंगे। बस रह जाएगी माधुर्य और कभी न समाप्त होने वाले सिलसिले।

मुझसे विवाह करोगी माधुर्य। एक दिन मन्मथ ने उसे आंखों से सहलाते हुए पूछ ही लिया- क्या मैं ऐसा कर सकती हूं मन्मथ , एक टूटी हुई औरत, आहत माधुर्य और औहत हुई। हां माधुर्य अड़चनों को दूर कर हम एक होंगे। मेरी कोई जिम्मेवारी भी नहीं है।

तुम जो भी हो, जैसी भी हो मुझे तुम्हें निभाने का एहसास है पर स्वीकृति तो तुम्हारी चाहिए ना।

भाई-भाभी के लाख आग्रह पर भी वह न तो विदेश जाने को तैयार हुई और न ही संभव को आजाद करने के लिए। एक अदम्य इच्छा उसके भीतर पैदा हुई। संभव को अपने सम्मान, समाज की कितनी परवाह है, उसके लिए, इससे बड़ा धन कोई नहीं- कुछ नहीं। प्रिया के बारे में भी चंद को छोड़ कर किसी को भी पता नहीं पर वह जो भी करेगी- सरेआम करेगी।

ठीक मन्मथ , पर मेरी एक खर्त है

कहो

मैं तुमसे विवाह नहीं करूंगी, पर रहूंगी तुम्हारे साथ माधुर्य यह निर्णय उसे क्या सारी उम्र राहत दे पायेगा ,

……..000000000……..

दीक्षा

मन- मानव मन- कब बुद्धि भी उसके आगे हार मान ले कहना कठिन है। इससे भी कठिन है मानव स्वभाव को गूढ़ उलझने का आभास देती हुई गुह्य हैं, ग्राहय नहीं।

तापसी , न जाने क्या सोच कर नानी ने उसका नाम रखा था। क्या वह पहले ही जान गई थी कि शांत सुशील पुत्री को बेटी जिंदगी भर तपस्या की अग्नि में जलती रहेगी। उसे जन्म देने के दो मास के भीत ही तापसी की मां चल बसी थी। उसका पिता, वह तो सदैव ही फक्कड़ और साधु रहा था। उसे न अपनी पत्नी का दुख था और न ही पुत्री का ख्याल।

उहं... कमल तो कीचड़ में ही खिलता है, जोगृ हस्थ धर्म निभाकर भी उससे विरत रहे, वही सच्चा साधक। अपनी जिम्मेवारी से भागा आदमी भले ही साधु बन जाए, वह साधक नहीं बना रहता। तापसी हालांकि अपने पिता को ज्यादा न जान पाई थी पर, छुटपन से ही उससे अजब विरिक्त हो गई थी। यदाकदा जब साधक सदानंद कभी उनके दरवाजे से भी गुजरता, तो नन्ही तापसी भड़ाक से दरवाजा बंद कर लेती थी। बूढ़ी नानी तब अनुमान लगा देती थी कि सदानंद आया है।

प्रथम परिचय अपने पिता से कब हुआ, तापसी को याद नहीं। पर जब नानी आत्मश्रद्धा से अभिभूत जब एक सन्यासी को फलाहार कराया था और तापसी को खींच उसके पैरों में पटक-सा दिया था। साथ ही बोली ये हैं तेरे पिता, इन्हें प्रणाम कर। आवाक, स्तब्ध तापसी पलभर शांत रही फिर न जाने किसी आवेश में वह उन जोड़ा आंखों में छाए स्नेहभाव को तिरस्कृतकर, अंदर भाग गई थी। खिसीयाये सन्यासी ने हरिओम- की टेर लगा अपना निरपेक्ष भाव

जाहिर तो किया था पर पुत्री का भाव उन्हें भीतर तक कचोट भी गया था। फिर सदानंद महीनों नहीं लौटे।

और समय-समय एक उम्र तक बढ़ता लगता है फिर माने घटने लगता है। तापसी अपूर्व ...रमसी.. न थी पर उसकी आंखों के भाव उसके चेहरे को ओजपूर्ण बना देते थे। छुटपन से ही उसने नानी को ही देखा और समझा था। उसके प्यार, दुलार और गुस्से सभी भावों की स्रोत नानी ही थी। मां के लिए उसे कोई अनुभूति न थी पर एक अस्तित्व उसने सदैव अपने आसपास मौजूद पाया था। पिता के लिए विरिक्त के सिवाय और कोई भाव मन में नहीं था। अन्य संगी-साथियों के जिम्मेवार पिताओं का व्यवहार देखा। उसने जिस स्नेहशील पिता की कल्पना की थी वह बाल बिखराए, अस्त-व्यस्तकपड़े पहले, उस तंबाकू की बू भरे सन्यासी से कतई सामंजस्य नहीं करती थी। नानी के दूसरों के कपड़े सी कर, छोटे-मोटे घरेलू कार्य करके अपनी नातिन को स्कूल में दाखिल करा दिया था। मात्र एक कक्षा से दूसरी कक्षा में चल जाना ही नानी के लिए खुशी.....। इस इलाके में तूफान ला दिया था। किताबें तो एक बार पढ़ते ही कंठस्थ हो जाती थी। अब क्या करें तापसी। उसने खेलों में भी हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। छरहरी, दो जून का रूखा-सूखा खाने वाली तापसी में मनोबल की पराकाष्ठा थी, तभी तो वह वर्ष में ही अपने स्कूल की टीम का प्रतिनिधितत्व करने लगी थी। वह कुशाग्र बुद्धि थी सो वजीफे से उसकी पढ़ाई पर नानी को खर्च नहीं करना पड़ता था पर अन्य जरूरतें भी तो थी ही। एक ही स्कूल वर्दी को यथासंभवन सांझ को धोकर, बिछौने के नीचे तह कर यत्न से रखती तो नानी की आंखों की कोरों में ठहरा पानी भी वह नहीं देख पाती थी।

पर काश समय बंधा रह पाता। तापसी इतनी- इतनी ही रहती। नानी की झुर्रियों और सफेद बालों की रंग और बढ़ती। पर भला ऐसा भी कभी हो पाया है। सबकी चेहती तापसी 15 वर्ष को होते ही मानो पहुंच से दूर होती जा रही थी। अब कहीं विवाह हो जाए। वर-घर अच्छा मिले। इसी सोच में नानी की रातों

की नींद उड़ रही थी। दूसरी बार अपने जामाता की की महानता उन्हें कचोट गई थी। पहली बार जब पुत्री मरणासन्न पड़ी थी। उसने कहा तो कुछ नहीं पर बाहर ही देखती उसकी आतुर नजरें नानी के सीने में चोट किए जा रही थी। चुपके- चुपके कई जगह ढूंढा- पूछा पर सन्यासी बने जामाता का कहीं पता नहीं चला। और जब वह आया तो पुत्रों की नजरें उसके इंतजार में रास्ता देखते-देखते पथरा गई थी। अब तापसी का विवाह तो करना ही होगा, फिर ऐसे-वैसे से थोड़े हो। तापसी दुनिया में बुद्धि थी। वाक चातुर्य था, परंतु व्यवहारिकता न थी। इस पथरीली दुनियां में व्यवहार का जूता पहने बिना कोई कितनी दूर चल सकता है। तीखे-नुकीले पत्थर को छलनी बना कर चलने वाले को ही अपाहिज कर देते हैं।

और तभी मानो कहां से अवतरित हुए आए थे सदानंद। इन कुछ वर्षों में चेहरा कितना अजीब-सा हो आया था। ढांचा सा शरीर बस किसी तरह चल फिर ही रहा था। अब न वह ओजस्वी भाव था न वैसा शारीरिक उठान। अब तो मानो कंकाल था, जिसमें जान तो थी पर जिस्म नहीं था।

पहले नानी को समझ नहीं आया। इस गैर जिम्मेदार जामाता का स्वागत करें या दुत्कार दें। दुत्कारने का विचार पलभर में ही तिरोहित हो गया। इस समाज में पुरूष की महत्ता भला कौन नकार सकताहै। स्वर्गवासी बेटी का नालायक पति ही सही। तापसी का भी बाप तो है, फिर तापसी से विवाह पर उसकी उपस्थिति भी जरूरी है। तापसी का कन्यादान उसी के हाथों होना है।

आश्चर्य, जिस जामाता को पलभर ही सही नानी दुत्कारने की सोच रही थी, उसी सदानंद के लौटते ही कलाकल्प होने लगी। लोगों की बढ़ती भीड़ हर क्षण सदानंद को घेरे रहती। इसके प्रवचन जिन्हें लोग जीवन का सार मानते थे। नानी को सच्चाई से दूर लगते। उसने अपनी नातिन को तिल-तिल टूटकर,तिनका-तिनका जोड़ कर मूर्तिमान रूप दिया। क्या सदानंद के प्रवचनों में उसकी तपस्या

से अधिक जीवन-सार है। सदानंद के प्रवचन तो सिफज़ शब्द हैं पर उसने तो तापसी को गढ़ा है, बनाया है। सदानंद ने जीवन के इतने वर्षों में नया क्या तत्व खोजा। उसके प्रवचन- उपदेश जो भी, कह लो क्या तापसी का अभावों से भरा बचन, उसकी पुत्री की इच्छाओं को पूर्ति कर सकता है। पर वह तो किससे सभी ने तो उसे गुरू मान लिया।

तापसी ने उस वर्ष यूनिवर्सिटी में टॉप किया था। उसके आगे जिंगदी में कई रास्ते थे। नानी को उससे उम्मीदें बढ़ गई थी। तब वह सदानंद को दिखाएगी। देख सदानंद तू इसका पिता आवश्य है पर इस पौधे को सींचा, पाला मैंने और तेरे बुढ़ापे में इसी वृक्ष को छाया होगी, जहां तू चैन से रह पाएगा। उस समय जब तेरी वाणी भी तेरासाथ न देगी। ये घेरने वाले भी तुझे भूल जाएंगे। हर वर्ष हजारों साधू बनते और डूब जाते हैं, लेकिन मेरी तपस्या जो मैंने तापसी के भविष्य के लिए हमेशा प्रकाशमान रहेगी।

भावविभोर नानी के ये आत्मप्रवचन ही नानी का सच्चा जीवन दर्शन थे। तभी तुषारापात हुआ, तापसी का पत्र पा कर। मेरी प्यारी और अच्छी नानी, तुम्हें पता चल गया होगा कि मैंने टॉप किया है। तुम्हारी और मां की इच्छा मैंने पूरी कर दी है। पिछले दिनों ही बाबू जी आए थे। उन्होंने कहा कि जीवन की सच्चाई जानना चाहो तो मेरा अनुकरण करो। नानी मैंने सोचा था कि किसी प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होकर जनसेवा करूंगी या इसी यूनिवर्सिटी में अध्यापन कार्य कर ऋण चुकाउंगी। नानी यह सभी रास्ते भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर ही जाते हैं। ईश्वर ने हमें यह जीवन इसीलिए दिया है कि हम उन्हें समर्पित ही कर जाए और मोक्ष प्राप्त कर, इस बार-बार के जीवन मृत्यु झंझट को समाप्त कर दें। इसके लिए हमारे लिए सारी पृथ्वी ही अपना घर होगी। लोगों को मन और बुद्धि के जीवनसार को बताना ही मेरा उद्देश्य होगा। फिर न कोई दुखी होगा और नहीं रोग, शोक, भय रहेगा। सारा संसार कितना सुखी होगा नानी और भी न जाने क्या- क्या लिखा था तापसी ने। पर अंत में किया गया निश्चिय नानी को

तापसी ने स्पष्ट कर दिया था। नानी मैं बाबूजी के कहे अनुसार दीक्षा लेने जा रही हूं। मैंने बाबूजी को हामी भर दी है। वह तुम्हें सब कुछ विस्तार से बताने आएंगे।

पत्र दिन में आया था। उसके बाद शाम ढली और अब रात का अंधरा भी छाने लगा था। नानी को समझ नहीं आ रहा था कि उसने कहां लगती की। उसकी तपस्या में कहां से यह विघ्न आ ग.या। उम्र के ढलते दौर में जब उसे स्वयं सहारे की जरूरत थी, वह तापसी का सहारा बनी। यही तीन पीढिय़ों का आधार स्तंभ थी। जिस सदानंद ने अपनी पत्नी को यूं ही छोड़ दिया। अपनी पुत्री की किसी भी जिम्मेवारी का निर्वहन नहीं किया, वह कैसे जीत गया। इतनी तपस्या, इतने विश्वास और इतनी आशाओं का यह कैसा.. अंत है। मेरे भगवान नानी जैसे कही अंधेरे कुएं में धकेल दी गई थी। वह किसी सहारे के लिए हाथ-पांव मार रही थी , लेकिन कहीं भी कुछ नहीं था, सिवाये अंधेरे के।

अगले दिन अलसुबह में ही किवाड़ खुले देखा। सदानंद और तापसी जैसे ही भीतर आए। तापसी के भेजे पत्र के छोटे-छोटे टुकड़े बिखरे पड़े थे और उनके बीच नानी चिरनिंद्रा में विलीन हो चुकी थी।

……..000000000……..

ये अंधेरों की रोशनी

आज रोशनी की हंसी रूक ही नहीं रही थी। बहुत कोशिश करने के बावजूद भी वह हंसे जा रही थी। आखिर में उसे नल से अपना चेहरा भिगोया ताकि हंसते हुए जो आंसू निकल रहे थे वो किसी को नजर न आए- खुद को भी नहीं। आज तमस चाह कर भी उसे प्रताड़ित नहीं कर पा रहा था। उसकी आंखों की भयंकरता देख कर भी रोशनी को कोई भय नहीं था। रोशनी तनिक पास आओ न, देखो मैं तुम्हारा पति हूं और तुम हंसे जा रही हो।

बिल्कुल नहीं मैं तुम्हारे पास तो क्या, इस कमरे में भी नहीं आने वाली, वो जो भी अस्पताल से नर्स आएगी, वही तुम्हारी सेवा करेगी। यह कह कर अपनी आंखे मिचमिचाई तो गुस्से के मारे तमस ने उठने की कोशिश तो की, पर उठ नहीं पाया। रोशनी उसे ठेंगा दिखाते हुए उसी के सामने डटी रही। प्लीज रोशनी पानी तो पिला दो। एकाएक खुंखार हो उठा तमस गिड़गिड़ाने लगा। आने वाली है तुम्हारी नर्स। वही पिलाएगी पानी भी और....। आगे शब्द अधूरे छोड़ रोशनी ने फिर उसे कोंचा। अब तमस को लगा सच में रोशनी अब उसके काबू नहीं आने वाली, लेकिन कोशिश तो करनी ही होगी। रास्ता यही है कि उसे प्यार से मनाया जाए। क्रोध से फिर तमस की आंखे जलने लगी। इस दो कौड़ी की औरत के लिए क्या-क्या नाटक करने पड़ेंगे।

कुछ समय बाद जब नर्स आई तो एकाएक तमस से प्यास भूली गई। उसने आज तक ऐसी औरत देखी ही नहीं थी,निहायत निग्रो टाइप की। मोटी और आवाज में अजीब सी सरसराहट। उसने रोशनी की तरफ देखा तो वह फिर अपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रही थी। ओह तो ये रोशनी ने किया। नर्स

पानी का गिलास उसे थमा रही थी। पानी पी कर राहत तो मिली पर चैन कहीं छिने जा रहा था।

समय व्यतीत हो रहा था। तमस अब रोशनी के आगे नतमस्तक रहता। उसने उसका विरोध करना ही छोड़ दिया। वह पूरी तरह से हार गया था, तब भी उसकी नजरें, जब इधर-उधर घूमती तो उसे रोशनी की व्यंग्य भरी निगाहें ही नजर आती। अभी उसे काफी समय बैड पर ही रहना था। जिस दिन की ये घटना घटित हुई उस दिन भी उसने किसी मामूली बात पर रोशनी की अच्छी खासी ठुकाई कर दी थी और पुरूषोचित अंहकार में गाड़ी ले ऑफिस की तरफ चल पड़ा था। अचानक कार अनियंत्रित होने लगी थी। स्पीड तेज थी सो जब तक समझ पाता कार तेजी से किसी शख्स से टकराकर पलट गई थी, जब अस्पताल में में होश आया तो धीरे-धीरे पता चला उसकी टांगों में तो फ्रैक्चर हुआ ही बाकि शरीर का कोई हिस्सा बिना घाव के नहीं बचा था। बची थी तो सिर्फ जान। इतना भयंकर हादसा होने के साथ ही रोशनी का व्यवहार भी उसे परेशान किए जा रहा था।

धीरे-धीरे अब लोग रिश्तेदार भी हालचाल पूछने आने लगे थे। रोशनी उनकी खूब खातिरदारी करती पर तमस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती। गौधुली का पता नहीं है कि कहां चली गई। पता नहीं रोशनी ने उससे कैसा व्यवहार किया होगा। अक्सर जब भी वह सोचता रोशनी उसके सामने आकर घूरने लग जाती जैसे उसे पता चल जाता, कब वह क्या और किसके बारे में सोचता है।

रोशनी की मां आई, पर बेटी का व्यवहार दामाद के प्रति उनकी अनुभवी आंखे समझ रही थी। उन्हें हैरानी और ठेस इस बात से पहुंची कि उन्होंने ये संस्कार तो अपनी बेटी को नहीं दिए थे। जब कभी रोशनी तमस की ज्यादतियों पर रोते हुए बताती वह उसे समझाती, बेटा पति से बढक़र कोई सहारा नहीं होता।

मानती हूं तुम सही कह रही हो, पर बेटा तुम उसको मौका क्यों देती हो। प्यार से रहा करो। इसमें हम सबकी इज्जत है और वह मान जाती व वापिस तमस के पास चली जाती। पर अब, जब तमस को उसकी सबसे ज्यादा जरूरत है, उसके प्रति व्यवहार उनकी समझ से परे था।

जब लोग चले गए उन्होंने देखा तमस सो चुका था। नर्स भी तब नहीं थी। मौका बेहतर जान उन्होंने बड़े प्यार से रोशनी को बुलाया और जो उन्हें अनुभव हुआ कह सुनाया। झटके से रोशनी ने उनकी बांह पकड़ी और अंदर दूसरे कमरे में ले जाकर खड़ा कर दिया। वाह मेरी मैया खूब ज्ञान बांटती हो, संस्कार तो दिए पर डरपोक बना दिया। ये न कर, वो न कर। कभी तो कहा होता जान पर बन आए तो रक्षा भी करनी होती है... मुकाबला भी करना होता है और वार भी होना चाहिए। मां सकपका गई। क्या हो गया। इस शांत सरल बेटी को। कभी ऊंचा भी नहीं बोलती और आज मेरा दिया, मुझे ही लौटाने चली है।

तुम्हारे दिमाग को क्या हो गया। मुझे बिल्कुल भी अच्छा महसूस हो रहा है। पुरूष तो मनमानी करते पर औरतें सब संभालती हैं। एकाएक खुखांर सी हो उठी रोशनी। बस चुप करो मां, बेटी को जहन्नुम में देखकर भी तुम्हारी आंखें नहीं खुली , न ममता जागी। वैसे भी मां तुमने पापा को क्या कभी आराम से जीने दिया था। आज वो होते तो मुझे सहारा देते न कि तुम्हारी तरह ज्ञान। इतना ही बुरा लग रहा है तो जा सकती हो। उस क्रूर आदमी का अब और बुरा हाल करूंगी समझी।

मां रूआंसी हो उठी थी जिस पुत्री के आचरण से वे सर उठाये रहती थी, आज सिर उठ नहीं पा रहा था। किसी तरह कुछ समय और व्यतीत कर, मां बिना कुछ बोले निकल पड़ी।

रोशनी एकाएक अकेली रह गई थी। वह देख रही थी कि सब कोई उम्मीद कर रहा था कि वह रात-दिन एक कर , बस तमस की सेवा करती रहे। उसका

अस्तित्व न पहले था और न अब है। बहनें आई उसे समझा गई , भाई आया उसे डांट गया। मां ने सभी को उसकी चार दिवारी बना भोगा था। पर वह भी कम जिद्दी नहीं थी। उसका व्यवहार तमस के प्रति उपेक्षित ही रहा।

अगले दिन उसका बयान लेने पुलिस आई कि दुर्घटना हुई कैसे। तमस ने सब बताया पर बस ये नहीं बता पाया कि उसकी गाड़ी किसी के टकरा गई थी, जिससे ये हादसा हुआ। रोशनी सब सुन रही थी। उसे याद आ गया था कि कितनी छोटी सी बात पर तमस उस पर टूट पड़ा था।

नर्स भले ही नीग्रो टाइप थी, पर मन से बहुत अच्छी थी। वह समझ तो गई थी कि दोनों पति- पत्नी के बीच बहुत ही गहरी बात है पर क्या, ये जानने की उसने कोशिश नहीं की। अपने कार्य में वह दक्ष थी और ममतामई भी। धीरे-धीरे ही सही पर तमस में सुधार आने लगा था और पुलिस के चक्कर भी बढऩे लगे थे।

हमारे समाज की पुरूष को लेकर खासियतें कुछ ज्यादा ही हैं। क्या हुआ परेशान करता था। अरे भाई मांग का सिंदूर है वो... सिर पर एक हाथ है। खुशियां तो पति से जुड़ी है। तमस चाहे कैसा भी हो आखिर पति ही है।

कुछ सुनती, कुछ बुनती, कुछ कहती, अब कभी-कभी। उसे देखकर तमस भी मुस्कुरा जाता। उसे उम्मीद थी वह जल्दी पूरी तरह भले ही स्वस्थ न हो सके पर जितना भी स्वस्थ होगा, उतना भी कम नहीं।

आखिर एक दिन तमस से रहा नहीं गया। उसने गौधूली के बारे में पूछ ही लिया। वह जानता था कि रोशनी वैसे कमी नहीं रखती और अधिक परेशान करेगी। कौन गौधूली आंखें तरेरते हुए रोशनी ने तमस की ओर देखा तो तमस, करवट बदल कर लेट गया।

पड़ोस की गौधूली सुंदर तो नहीं थी पर कुछ तो था उसमें कि तमस न चाह कर भी आकर्षित हुआ। उसका पति दुबई गया था कि कुछ ज्यादा कमा सकें। दो

बच्चों को संभालने में ही उसका वक्त निकल जाता था। आते-जाते तमस उसे किसी न किसी काम में व्यस्त ही देखता। एक-दो बार बात करने की भी चेष्टा की पर उसने ध्यान नहीं दिया। एक दिन जब वह रोशनी पर डंडों की बरसात कर, उसे घर से बाहर निकला। उसी समय बाहर उसे गौधूली दिखाई दी। वह चौंक उठा, कहीं उसे पता तो नहीं चला कि मैं अपनी पत्नी से कैसा बर्ताव करता हूं। लगते पढ़े-लिखे... नौकरी भी ठीक-ठाक लगती है। औरत क्या कोई चीज है, इंसान नहीं। जब चाहो जानवरों की तरह बर्ताव करो। तमस उसकी सिर्फ आवाज सुन रहा था। उसने क्या कहा वह तो बस उसके लिए डायलॉग मात्र थे।

फिर इसी बहाने वह बातें करने लगा। धीरे-धीरे कब उसने रोशनी को खलनायिका बना दिया और खुद सताया हुआ हीरो बन गया। धीरे-धीरे... कब जल्दी-जल्दी में बदल गई पता नहीं चला। कहते है कि स्त्री को ईश्वर ने तीसरी नस दी है कि उसे अहसास हो कि कुछ अनोखा घटित हो रहा है।

आसपास भी फुसफुसाहटें शुरू हो गई थी। अब बाजार का काम हो या कहीं आने-जाने का। ये तमस का ही काम था। वह गौधूली और उसके दोनों बच्चों को गाड़ी में बिठा कर चला जाता। धूल का गुब्बार खिडक़ी में से झांकती रोशनी को चिढ़ा कर उड़ जाता। आखिर ऐसा क्या है आप उनके लिए फिरते रहते हो। एक दिन दुखी रोशनी के मुंह से क्या निकलना था कि तमस ने न जाने उसे कितने जख्म दे दिए। उस पर दो दिन उसे खाने भी नहीं दिया। रात को जब भी तमस की आंख खुलती वह थकी निढाल रोशनी के ऊपर पानी से भरा गिलास उड़ेल देता। भयंकर सर्दी में फर्श पर लेटी रोशनी अब रो भी नहीं पा रही थी।

आखिर तमस ने उससे कुछ कागजातों पर हस्ताक्षर करवा कर, फिर कभी मुंह न दिखाने का ताकिद देकर उसके मायके भिजवा दिया।

ये तो जब उसकी गाड़ी की दुघर्टना हो गई तो मां ने जबरन दुनियादारी की दुहाई देकर, उसे तमस के पास भेजा था। आखिर कुछ समय बाद तमस बैसाखियों के सहारे चलने लगा था पर उसकी आंखों का जहर रोशनी अब भी महसूस कर रही थी। उधर, तमस रोशनी से छुटकारा पाने के उपाय ढूंढ रहा था। वह अकेला कुछ नहीं कर सकता था। उसने अपनी नर्स को बहुत भावुक और परेशान हो कर मदद मांगी, लेकिन नर्स ने सरल शब्दों में इंकार कर दिया और अस्पताल से सेवाएं वापिस लेने का आवेदन भी दे दिया। इंसानियत के नाते उसने जाते-जाते रोशनी को इशारा भी कर दिया था।

तमस कुछ कर पाता अगले ही दिन,पुलिस उसे गिरफ्तार करने आ गई। कारण जानकर वह बोल नहीं पाया। आपकी गाड़ी जिस शख्स से टकराई थी, वह आपका ही पड़ोसी था। गौधूली का पति। वह मौके पर ही मृत हो गया था। नतीजतन लोगों ने उसकी पत्नी और आपको लेकर, जो कुछ बताया उससे भी लगता है आप दोनों की मिलीभगत थी, उसे मारने की। इसके बाद गौधूली ने बच्चों सहित नहर में कूद कर आत्महत्या कर ली थी। इन सभी के इल्जाम आप पर हैं और आप हमारे साथ अब तुरंत पुलिस स्टेशन चलिए। पुलिस लंगड़ाते तमस को लेकर चली गई और रोशनी की हंसी फिर से फूट पड़ी.....।

……..000000000……..

अक्सर

अरे मौली तुम। उस अपरिचित शहर में अपनी सहपाठिन को देख मैं अनायास पुलक उठी। अगले ही क्षण एक-दूसरे से गर्मजोशी से मिलते हुए आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता से हम सारे वातावरण से अलग-थलग हो कर पास के पार्क में ही बैठ गए। तभी मुझे अपने खिसियाए खड़े पति का ध्यान हो आया। इनसे मिलो मौली, ये मेरे श्रीमान जी हैं। याद है तुम्हें कॉलेज के दिनों में हमसे नोट्स मांग कर ले जाते थे और वापसी में ढेरों प्रेम पत्रों का बंडल पकड़ा जाते थे। हंसते हुए मौली ने जोड़ा, और फिर भी तुम हर बार नोट्स दे देती थी।

अच्छा तुम लोग बात करो, मैं चलता हूं।

इनके जाते ही मैंने मौली से होटल चलने का आग्रह किया। वर्षों बाद मिली हम सेहेलियों के पास बातों का इतना अकूत भंडार था । अपनी शेष दिनचर्या को तिलांजलि देकर, हम फिर से वर्षों पहले की घनिष्ठता को जीवंत करने की चाह न छोड़ पाई।

मेरे पति अपनी वार्षिक बैठक के सिलसिले में यहां आते ही रहते थे। मनाली हिमाचल का विख्यात पर्यटन स्थल है। अत: इस बार यहां आने का लोभसंवरण न कर पाई। यहीं मौली से मेरी अनायास भेंट मानो पहाड़ों का मेरे लिए तोहफा थी। तब की मौली और आज की मौली में परिवर्तन तो आ गया था। लंबे एलोकेशी बालों के स्थान रूखे कटे बालों ने ले लिया था। चेहरे पर स्निग्घता का जो भाव था, उसका स्थान कठोरता ने ले ली थी। तब की धीर-गंभीर और अन्तर्मुखी मौली आज मुखर और व्यवहारिक हो गई थी तो भी मुझे उसे पहचानने में विलंब न लगा। उसने जिंदगी का जो रंग जिया वह मेरे लिए अकल्पनीय था। अगर उसने अपनी जिंदगी के पन्ने मेरे आगे न खोल

दिए होते। टॉप यूनिवर्सिटी से अर्थशास्त्र में एम.ए. की डिग्री करने के बाद व्यापारी पिता की इकलौती पुत्री ने उन्हीं के कार्यों में हाथ बटाना शुरू कर दिया था। मां बचपन में ही चल बसी थी। पिता- पुत्री का रिश्ता अपरिमित ममता, अधिकार और कत्र्तव्यबोध से भरा था। तभी व्यवधान आया था, दिशांत के कारण। दिशांत ने छात्रवृति के बल पर अपनी शिक्षा समाप्त की थी। उसकी व्यवहारिकता और बुद्धिमत्ता के बल पर ही मौली ने उसे अपने जीवन के रूप में पिता के सामने ला खड़ा किया था। पारखी पिता ने भी उसे घरजमांई के रूप में स्वीकार कर लिया।

पिता अस्वस्थ रहने लगे थे। सोचा था उन्हें कुछ हो गया तो पुत्री का क्या होगा। दिशांत से विवाह होने से वे कुछ निश्चिंत हो हुए थे। पर शीघ्र ही हृदयघात से उनकी मृत्यु हो गई। इस आघात को सहना मौली के लिए असहनीय।

पिता की मृत्यु के बाद दिशांत ने ही कारोबार संभालना शुरू कर दिया था। कुछ ही वर्षों में दिशांत ने कारोबार को शिखर पर पहुंचा दिया। मौली निश्चिंत थी। कभी-कभी उसे लगता कारोबारी व्यस्तता से दोनों की दूरी बढ़ती जा रही है। कभी दिशांत के लंबे टूअर पर साथ भी जाना चाहती तो, दिशांत उसी की तबीयत और परेशानी को लेकर समयाभाव की नपी-तुली व्याख्या कर उसे रोक देता। वह समझती अपनी इतनी व्यस्तता में भी दिशांत को उसका कितना ख्याल है। अपने हर स्टेशन से उसे अपना ख्याल रखने और कोई भी चिंता न करने बारे पत्र अवश्य लिखता। साथ ही लौटते हुए कोई न कोई कीमती उपहार लाना नहीं भूलता था।

दिशांत को जूट व्यापार के सिलसिले में अक्सर कोलकाता जाना पड़ता था। इस बार उसका तार आया कि वह अपने मित्र को भी साथ लेकर आ रहा है। कोई विशेष ही होगा जो निशांत ने पूर्व सूचित किया, सोच कर मौली ने नौकरों की मदद से कोठी का कायाकल्प ही कर डाला। वैसे वह निर्णय भी ले चुकी थी कि वह अबकी बार दिशांत को लेकर पहाड़ पर जाएगी। भले ही उसे जिद्द

करनी पड़े। कितनी मेहनत करता है दिशांत तब क्या पैसों की खातिर जिंदगी ही एकसार जी जाए।

अगले दिन जब दिशांत आया तो उसके साथ नई इम्पाला भी थी। एक सांवले पर तीखे नैन नक्श वाली बंगाली युवती। उसी रात विस्फोट हुआ कि वह मित्र नहीं सहपत्नी थी, मौली की।

रात के एकांत में मौली के आगे गिड़गिड़ता दिशांत विषैले सर्प से भी अधिक भयंकर लगा था मौली को। विश्वास की जो महीन डोर दिशांत ने तोड़ डाली लाख चाहने पर भी मौली इसका कारण नहीं समझ पा रही थी।

यह कभी भी तुम्हारी जगह नहीं ले पाएगी मौली, जितना तुम चाहोगी उतना ही उसे मुझसे अपेक्षित होगा। तुमने हमेशा मुझे सहारा दिया है। बस यह अंतिम अहसान कर दो मुझ पर- पल्लवी को मुझसे अलग होने को मत कहना।

ठीक है दिशांत अगर वह तुम्हारी जिंदगी के लिए इतनी महत्वपूर्ण हो गई है तो मुझे सोचने का मौका दो। कठिनाई से निकले ये शब्द भावहीन थे।

दिशांत तो वैसे ही व्यापार संभालने के बाद मुझसे दूर चला गया था। उसकी व्यस्तता व्यापार से ज्यादा पल्लवी को लेकर थी। ऐसा मुझे अहसास ही न हुआ और मैं थी कि दिन-प्रतिदिन दिशांत को लेकर अधिक भावुक और अनुग्रहित होती जा रही थी। साथ ही मेरे किस अधिकार की बात कर रहा है दिशांत। इस दौलत के अंबार की, कोठी में रहने की या अदालती पेचिदगियों की। चाहती तो उसे कानून के शिकंजे में जकड़ कर रख देती। पर लगा इससे तो मेरा प्रतिशोध शांत नहीं होगा। जिस गहराई से मैंने दिशांत के प्रति प्यार, विश्वास का अमृत सींचा था। उसी गहराई से प्रतिशोध का नागदंश मेरे मनोमस्तिष्क में उभर आया था।

अगले ही सप्ताह मैंने आग्रह कर दोनों को पहाड़ पर घूमने भेज दिया, जहां खुद दिशांत को लेकर जाने वाली थी। जिस शांत और उत्साह भाव से मैंने खुद को

उनके सामने प्रस्तुत किया था। उससे भला उन्हें अपने परिणाम का अनुमान भी तो कैसा होता। अपने वकील और मैनेजर की सहायता से मैंने अपना सारा कारोबार समेटना शुरू कर दिया। कागजों में मेरा ही नाम था और जैसे ही वो लोग वापिस आए, मैं स्वयं लंबे टूअर पर चली गई थी। दफ्तर तो क्या कोठी के गेट को भी चौकीदार ने उन्हें लांघने नहीं दिया। जिस सडक़ से उठा कर मैंने उसे ऊंचाई पर ला खड़ा किया था। उसी सडक़ पर उसे उसकी प्रेयसी पत्नी के साथ आवाक, हैरान और परेशान ला खड़ा कर दिया था।

और तुमने तलाक नहीं लिया मौली

नहीं जीवनभर जिस अग्नि में मैंने जलना था, उससे उसे क्योंकर मुक्ति दे देती। मैंने उसे इंसानियत की उस अदालत का मुजरिम बनाया, जहां वह खुद अपनी अग्नि में जलता रहे।

फिर वह कहां गया, मुझे नहीं मालूम। पर नियति उसे दोबारा मेरे पास ले आई। गोद में था छ: माह का बेटा। दिशांत ने कहा, मौली कानूनन और सामाजिक रूप से आज भी मैं तुम्हारा पति हूं। जानता हूं, तुम जब चाहोगी, मुझे इस अधिकार से भी वंचित कर सकती हो, मैं फिर भी बहुत कुछ भुगतने को तैयार हूं। तुम नारी हो मौली और नारी के कई रूप होते हैं। मैं तुम्हारे एक रूप से, जो ममता कहलाता है। मांगना चाहता हूं इस पुत्र को अपना लो। और पल्लवी...।

उसी की अंतिम इच्छा लेकर आया हूं।

इससे ज्यादा कुछ भी जानना मेरे लिए विशेष नहीं था। न जाने किस भावना से अभिभूत होकर मैंने उस मासूम को अपने आंचल में समेट लिया। ठीक है दिशांत अगर तुम फिर कभी भी अनाधिकृत रूप से न मिलने का वादा करो तो मैं इसे पाल लूंगी।

वह चला गया। कर्ण अब मेरा बेटा है। शहर के सबसे अनुशासित कॉन्वेंट में पढ़ता है। जब भी छुट्टियों में घर आता है मेरे बिना एक पल भी नहीं रह पाता।

कर्ण की बात करते हुए अनोखे ओज से मौली का चेहरा चमक रहा था। भावुकता से उसकी आंखों में पानी भर आया था।

मौली मुझे नहीं मिलवाओगी अपने बेटे से। क्यों नहीं वह आज रात की फ्लाइट से आ रहा है। उसके लिए ही तो खरीददारी करने तो निकली थी। सहसा उसे अपनी छोड़ी हुई दिनचर्या का ख्याल हो आया। अगले दिन मिलने का वायदा कर वह चली गई।

वर्षभर अपने कारोबार को संभालने के लिए देशभर में घूमने वाली मौली चंद दिन व्यतीत करने ही यहां पहाड़ पर आती थी। मनाली से कहीं आगे एकांत में अपने रहने के लिए बंगला चुना था। तभी छुट्टियों में वह कर्ण को भी वह वहीं बुला लेती थी। जीवन की गहन गुत्थियों को समझ पाना इतना आसान नहीं होता, जिस दिशांत को वह इतनी गहराई से चाहती थी, उसे पल भर में झटकने में भी विलंब नहीं किया। कर्ण को अपनाकर उसने अपनी जिंदगी का अर्थ ही बदल कर रख दिया।

अगले दिन दोपहर को ही वह अपने पुत्र कर्ण को लेकर मिलने आई। उसके गुजरे वक्त से अनभिज्ञ मेरे पति ने उसे गोद में उठाते हुए पूछा। बेटे तुम्हारे डैडी नहीं आए। नहीं अंकल, डैडी मेरी मम्मी के सामने कभी नहीं आते।

उसके अटपटे उत्तर से इन्होंने मेरी तरफ आश्चर्य से देखा और मैं देख रही थी मौली को। उसके हल्के दर्द भरी मुस्कान मानो कह रही हो। मेरा बेटा बहुत समझदार है। समझता है सब कुछ भी और वो भी जानती है दिशांत, कर्ण से वह कैसे छिपकर मिलता है। यहां पल्लवी कहीं नहीं थी, न मौली की कहानी में, न दिशांत की जबानी।

……..000000000……..

ओह

देखिए मैंने आपकी चंद रचनाएं पढ़ी, कमाल लिखती हो आप

जी शुक्रिया रौली मुस्कुराई।

वैसे कुछ पूछ सकता हूं मैं- प्रश्न

जी, पत्रकार है, ना भी कैसे करूं- सोचा रौली ने

कब से लिख रहे हो आप, प्रेरणा स्रोत तो आपका परिवार से शुरूआत हो। अब प्रश्न घर में कौन-कौन हैं आदि तक पहुंचने लगे तो रौली अलर्ट हुई।

हो गया आपका इंटरव्यू पूरा। उसे टोकते हुए रौली ने अपनी सीधी नजरें उसकी ओर घुमाई। वह पल भर में छटपटा गया। इतनी काली और गहरी आंखें तो कभी नहीं देखी। सहज हो कर संवत के मुंह से निकला। हां जी हो गया इंटरव्यू। कुछ रह गया तो आपसे ही पूछ लूंगा-प्लीज नंबर। कुछ पल रौली के समझ नहीं आया दें या न दें नंबर फिर उसने दे दिया।

शहर में राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित समाचार पत्र में इतनी प्रभावशाली रिपोर्टिंग ने मौली को भी प्रभावित कर दिया। कभी हंसना तो क्या मुस्कुराना भी पसंद न करने वाली रौली के रंगे होठों पर मुस्कान आ कर चली भी गई। राष्ट्रीय समाचार पत्र में दमदार रिपोर्टिंग ने मौली को भी प्रभावित कर दिया। फिर समारोह, गोष्ठियों और यदाकदा कहीं भी मुलाकात हो ही जाती। संवत से वह प्रभावित थी। उसकी बुद्धिमत्ता, हाजिरजवाबी और व्यक्तित्व से भी। देश-दुनिया, गली- मोहल्ले से लेकर फिलॉस्फी, मनोवैज्ञानिक के साथ ही मानव के व्यक्तिगत स्तर तक उसका बौद्धिक स्तर अनुकर्णीय था। रौली इन्ही बातों से कुछ सीखने की कोशिश करती मानवीय और मानवता के स्तर की बातें,

उसे और भी दिलचस्प लगती। संवत को श्रोता तो बहुत अच्छी मिली थी पर वह रौली की थाह नहीं पा रहा था। उसे अपने बारे में या घर के बारे में बात करना बिल्कुल पसंद नहीं था। संवत कहां से सीखा इतना कुछ। वह अक्सर पूछती।

इतना कुछ अपने अनुभव से। इतना गहरा- किन्ही आंखों के समुद्र में डूब कर।

इतना विस्तृत- आवारागर्दी कर।

संवत का जवाब होता। शरारती भाव से पर रौली उसे अनदेखा कर देती।

अच्छा संवत मेरे कुछ प्रश्नों का समाधान तो कीजिए।

बोलिए, मुझे भी इंतजार है, आपके मुखारबिंद से कुछ शब्द सुनने का।

सुनो संवत मैं कुछ जानना चाहती हूं।

क्या विवाह इतना ही जरूरी होता है। मात्र दोस्ती भी हो सकती है।

फिर तो डियर जंगलराज हो जाएगा। जहां तक मैं समझता हूं। नारी में है इतनी इच्छाशक्ति कि वह केवल मित्र रह सकती है, पर पुरूष बहुत कम हैं, समझो है ही नहीं। फिर ये पुरूष से ज्यादा नारी की जरूरत है। सुरक्षा के लिए भी और परिवार के लिए भी।

पर कई लोग बिना विवाह के साथ रहते हैं, जब तक उन्हें सही लगता हो।

क्या तुम इस बात से इंकार करोगी कि इसमें भी नारी का उत्पीडऩ है। देखो अगर वो पति-पत्नी की तरह बिना विवाह के रहेंगे तो नारी को तो वैसे ही घर के काम भी करने होंगे। अगर पुरूष हाथ भी बटाएगा तो भी एक अहसान की तरह। दोनों आपस में काम बांट भी लेते हैं तो पुरूष को तो शहर से बाहर जाना ही है। दोस्तों से मिलने, घूमने या अपनी किसी गर्लफ्रेंड से मिलने। वह प्लीज, प्लीज कह कर उसी से खाना बनवा लेगा और अपनी दोस्त के साथ फिल्म

देख आ जाएगा। फिर इसमें भी तीन विकल्प है। पहले जिसके साथ रूम शेयर करें उसी से विवाह भी हो । दूसरा दोनों की या एक ही कोई दोस्त होगी या होगी। तीसरा- दोनों आपस में विवाह कम ही करते हैं, फिर विवाह किसी ओर से। बताओ रौली समाज किधर जा रहा है और इस मार्ग का अंतिम सिरा क्या होगा।

तुम्हार मतलब विवाह होना चाहिए।

बिल्कुल होना चाहिए।

आखिर बच्चों का भी भविष्य क्या रह जाएगा, पर विवाह होने पर पारिवारिक सामाजिक दबाव तो होते ही हैं पर कानून भी बेहतर निर्णय लेते हैं।

अच्छा रौली बताओ तुम मुझे क्यों पसंद करती हो। वैसे तो संवत ने गंभीरता से पूछा पर रौली का व्यवहार उसे अचंभित कर गया।

मुझे पता नहीं तुम्हारी बातों से दुनियां की अनदेखी, अनसुनी बातें समझ आने लगी है। वैसे किसी गलतफहमी में मत रहना। वह तमतमाती हुई उठी और चली गई।

अजीब है ये लडक़ी। कुछ समझ नहीं आता आखिर ये इतनी रहस्यमयी क्यों है। सिवाय नाम के, अपने बारे में बात करना तक पसंद नहीं था। घर-परिवार की तो दूर की बात है। एक दिन पूछा भी था, चलो आपको आपके घर छोड़ दूं। वह चिढ़ गई तुम आदमी लोग औरतों को इतना कमजोर क्यों समझते हो। फिर कुत्तों की तरह इर्द-गिर्द घूमने का बहाना ढूंढते हो।

संवत ने इधर-उधर देखा कोई सुन तो नहीं रहा पर उसके बाद उसने फिर उसके या परिवार के बारे में कभी नहीं पूछा। पर न उसने आना छोड़ा, न संवत ने दूरी बनाई। वह उसकी नजरों का सामना नहीं कर पाया। कोशिश की जानने की

आखिर इसके मन मस्तिष्क में है क्या पर वह जान गया था कि वह कुछ भी नहीं बताने वाली।

वह एक बरसाती रात थी। कहीं दुर्घटना हो गई थी। परिवार मृतप्राय: था। वहां बारिश में भी कुछ लोगों का जमघट लगा हुआ था। पता नहीं हम लोग कब सुधरेंगे। वैसे किसी काम के लिए दस बहाने बनाएंगे पर कोई घटना घटी नहीं कि कहां-कहां से आ जाते हैं फिर देखने- जानने। संवत मन ही मन सोचता हुआ भीड़ धकेल कर पहुंचा तो एकदम सामने ही रौली बेहोश हुई दिखी, पर सांस चल रही थी। एक युवक शायद भाई था और बुजुर्ग महिला मां होगी। पुलिस के साथ लग कर संवत तुरंत हॉस्पिटल पहुंचा। छोड़ी देर बाद डाक्टर ने पुलिस को बताया कि सिर्फ लडक़ी जीवित है, लेकिन होश आने में काफी समय लग सकता है। उनकी कार से जरूरी कागजात से घर का पता चला। संवत साथ-साथ रहा । घर क्या था, भूतहा बंगला जैसा था। ताला लगा हुआ था। भीतर गए जब ताला तोड़ कर तो घर में अजीब सी बदबू आ रही थी, जैसे घर कई दिनों से बंद हो। रसोई में बना बनाया खाना सड़ रहा था। अजीब बात है, ये लोग क्या करते होंगे। कैसे रहते होंगे। कई प्रश्न संवत के दिमाग में दौड़ रहे थे।

तभी एक सिपाही को एक पुराने गंदे ट्रंक में से कुछ कागज और फोटो मिली। जब उनका निरीक्षण किया तो पता चला कि घर का मालिक सरकारी तौर पर जल्लाद था, जो कैदियों को फांसी पर लटकाता था। बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाई। बड़े सपने पूरे होते देखता किसी ने उसको भी फांसी पर लटका कर मार डाला था, इसी घर के बरामदे में। रौली अपने पिता की बहुत लाड़ली थी। वह सब जानती थी कैसे कैदियों को फांसी दी जाती है। तभी उसके भीतर एक आजीब सी शैतानी- बैचेनी थी।

जिसके कारण वह कभी स्थिर नहीं रह पाती थी। एक अजीब सा दहशतपन उसकी खूबसूरत आंखों को भी भयंकर बना देता था। कोई भी जीव देखती तो मारते हुए उसे अजीब सी खुशी मिलती थी। पिता ती मृत्यु का आघात, उसे विद्रोही बना गया था।

संवत से मिलने से वह कुछ सामान्य हो गई रही थी कि उसकी मां ने उसके विवाह की बात शुरू कर दी कि शायद विवाह के बाद बेटी संभल जाए।

मां कभी-कभार लिखती थी। उन्हें वह अपने नाम से छपवाने लगी थी, पर अभी भी बहुत कुछ जानना था।

पुलिस वापिस हॉस्पिल पहुंची तो इंस्पेक्टर का फोन बज रहा था कि रौली कहीं नहीं है। सब हैरान थे, इतनी गंभीर हालत और अर्धबेहोशी में वो कैसे दीवार फांद गई होगी। इसके बाद उसका कोई पता नहीं चला कि वह कहां गई।

हमारे आसपास कभी ऐसी अविश्वसनीय घटनाएं घट जाती है कि जिनके सिर्फ प्रश्न होते हैं, उत्तर नहीं मिलते कभी भी। आखिर बात यह सुनने में आई कि वह युवक उसका भाई नहीं, मंगेतर था और कार का एक्सीडेंट नहीं बल्कि सुनियोजित हादसा था। गाड़ी मंगेतर नहीं, बल्कि रौली चला रही थी।

……..000000000……..

भंवर

संदेह के ऐसे ही भंवर से निकली थी मान्यता शर्मा। समस्या इतनी आसानी से सुलझ जाएगी, उसे अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। , पर ऐसा हुआ था प्रमाण थी दिव्येश की निश्चिंत भावमुद्रा।

वैसे तो बात इतनी ज्यादा गंभीर नहीं थी पर दिव्येश का अति अनुशासित आचरण मान्यता को क्षुब्ध कर देता था। वह जानती थी कि दिव्येश उसका बहुत ध्यान रखता है। चाहने पर भी उसे समय नहीं दे पाता था।

असल में गड़बड़ तब शुरू हुई जब दिव्येश की ड्यूटी दूसरे विभाग में लग गई थी। वहां पर बॉस मिस बंगाली थी। वह दिव्येश की कार्यकुशलता पर खासी मुग्ध थी। दिव्येश को विश्वास था, उसकी मेहनत रंग लाएगी और उसकी शीघ्र ही प्रमोशन हो जाएगी। वह और भी व्यस्त रहने लगा। यहां तक कि कभी-कभी मिस बंगाली के घेरलू कार्य भी कर देता। कभी ऑफिस में ओवर टाइम तो कभी शॉपिंग के कारण घर लौटने में और भी विलंब हो जाता।

वैसे मृणाल घोष एक बंगाली अधिकारी थी प्रौढ़ आयु की सांवले रंग की ममतामयी महिला थी। वे बाल विधवा थी और अकेली रहती थी।

वह कहीं से भी मान्यता के आगे टिक नहीं पाती थी। शंका का जो जहर मान्यता के दिलोदिमाग में छा गया था। वह लाख तर्कसंगत वाकयुद्धों से भी दूर नहीं हो पाया। मन ही मन उसने तलाक लेने का मन बना लिया था।

अब प्राय: ही दिव्येश को मान्यता की व्यंगोक्तियां तो सुननी ही पड़ती । साथ ही कभी-कभी भूखे ही ऑफिस का रास्ता लेना पड़ता। बात अधिक तूल पकड़े, इसलिए दिव्येश ने उसकी बातें सुन कर अपना आपा नहीं खोया। वह

समझता था, समय आने पर मान्यता को अपनी भूल का अहसास होगा, फिर वह बेकार की माथापच्ची क्यों करें।

एक दिन मायके जाने का निर्णय लेकर वह शॉपिंग करने बाजार भी चली गई।

यहीं उसकी भेंट हुई रजत से वह उसका सहपाठी था। मान्यता के न चाहने पर भी वह उसके साथ घूमता रहा, फिर कॉफी हाउस चलने का आग्रह करने लगा। मैंने फिर कभी सही, रजत कहा। मेरे पति इंतजार में होंगे। मान्यता ने टालने की कोशिश की। अरे भई कॉफी पीने के बाद तुमने अपने घर ही तो जाना है। अबकी बार तुम आठ-दस वर्षों बाद मिली हो, फिर न जाने कब मिलना हो। मित्र के नाते न सही भाई के नाते मेरी बात मान लो। अब उसका आग्रह टालना मान्यता के लिए संभव नहीं हुआ। जैसे ही वे कॉफी पी कर बाहर निकले। सामने ही दिव्येश खड़ा टैक्सी का इंतजार कर रहा था।

यद्यपि पिछले कई दिनों से दोनों में वाकयुद्ध तो हो रही रहे थे,फिर भी बात बंद ही थी। विशेषकर मान्यता ने हां, हूं के सिवा वाकयुद्ध ही किया था। दिव्येश हमेशा से व्यवहार कुशल रहा। अत: उन्हें देखते ही पास आ गया। वाह खूब सामान खरीदा मान्या। कहो तो साथ ही घर चलें।

कई दिनों की साधारण बंद बोलचाल के बाद मान्यता को दिव्येश के शब्द अमृत से लगे। हां, हां क्यों नहीं। दिव्येश इनसे मिलो यह हैं रजत, मेरे सहपाठी रह चुके हैं। अरे वाह तो आप ही मिस्टर रजत। आपसे मिलकर खुशी हुई। मान्या आपका जिक्र करती रहती है। दिव्येश की आंखों में शरारत झलक रही थी, जिससे अंजान रजत ने फिर कभी मिलने का वादा कर, विदा ली।

घर आते ही मान्यता ने अपना सामान खोलना शुरू कर दिया। क्या बात मान्या अब दोबारा सामान बांधोगी। नहीं दिव्येश मैं कहीं नहीं जा रही हूं। तुम चाहते तो प्रश्नों के कटघरे में मुझे भी खड़ा कर देते पर तुमने ऐसा नहीं किया। भर्राये

गले से मान्यता पूर्ववत व्यवहार पर लौट आई और हां रजत अपनी मिस बॉस को घर कब ला रहे हो।

……..000000000……..

रूके हुए क्षण...

उस नई बनी दोस्त की खूबसूरत तस्वीर पर शिखा ने ढेर सारे कॉमेंट्स कर दिए थे। वे कुछ दिन पहले ही मिली थी। सोचा चलो दोस्ती का रंग कुछ और गहरा किया जाए।

खूबसूरत सुबह की शुभकामनाएं शिखा ने बड़े प्यार से तो बिना किसी भाव के जवाब आया, तुम्हें भी।

बात बढ़ाने के लिए भाव को किनारे कर शिखा ने पूछा,

आपने बताया था आप दिल्ली से हो

हां, फिर वही भावहीन आवाज

गर्म महानगर , शिखा बोली

और तुम

हिमाचल प्रदेश से।

इसलिए तुम कूल हो और प्यासी भी

मतलब, शिखा समझ नहीं पाई

सुना है, जहां मौसम कूल होता है,

वहां के लोग प्यासे होते हैं।

पता नहीं हमारी तरफ तो ऐसा नहीं है

चलो अच्छा है, मजे करो, खुश रहो

वो बोली आप भी

मैं तो रहती हूं हमेशा, मानो वो शिखा को चिढ़ा रही थी

आपकी बातों से लगता है आप किसी खुन्नस में हो। शिखा ने कह ही दिया।

खुलकर बोलो जो बोलना है, मैं ऐसे ही बिंदास रहती हूं।

फिर ठीक है, शिखा ने बात खत्म करनी चाही।

आपकी तरह बात करने वाला कोई नहीं मिला,

इसलिए पूछा आपसे

अच्छा जी, व्यंग्य था उसके स्वर में

चलिए घर चलते हैं, शिखा आदतन बोल उठी।

नहीं जी इतना टाइम नहीं है, फिर घर देख कर क्या करूंगी मैं।

बात टाइम की नहीं आपसी समझ की है।

शिखा न मुझे समझना है और न ही समझाना है

और समझ कर भी क्या करूंगी, मैं कभी कभार मंजिल से निकलती हूं घूमने के लिए। इससे ज्यादा मुझे और कुछ पसंद नहीं है।

मैं जॉब करती हूं, आज जल्दी फ्री हो गई तो खरीददारी करने आ गई और आपसे मुलाकात भी हो गई। बस कभी- कभी इच्छा होती है..।

किस चीज की इच्छा, अबकी बार उसका स्वर छोड़ा नरम था।

अच्छे- अच्छे लोगों को संपर्क में लाने की इच्छा।

पर मैं अच्छी नहीं हूं, गंदी हूं, इसलिए आप अच्छे लोगों से ही बातें करें।

एकाएक वह फिर चिढ़ सी गई।

क्यों आप खुद को गंदी क्यों कह रही हो।

क्यों, आप खुद को गंदी क्यों कह रही हो।

आप पढ़ी-लिखी सुंदर और व्यवहारिक हो

मेरी दोस्त, कभी गंदी नहीं हो सकती।

अच्छा जी

हां जी, सौ प्रतिशत सही, कभी आपका मन हुआ तो मैं आपके बारे में जानना चाहूंगी। वा- वैसे बातें अच्छी कर लेती हो तुम और किस मन की बात कर रही हो। मैं दिखावे में नहीं दिल से बोलती हूं, आप बहुत अच्छी हो। शिखा बोली।

मैं आपको पसंद करती हूं, आप मुझे पसंद करो चाहे न करो।

क्या करूं मैं प्यार या नफरत

बस दोनों के बीच की बात यानि नॉर्मल।

आपको पता तो है पवित्रा का अर्थ ही पवित्र होना है, जैसे गंगा की तरह, तुलसी की तरह, वैसी ही हो आप। शिखा ने पवित्रा के नाम की ही व्याख्या कर डाली।

मैं नहीं हूं वैसी, वह मानों हार मान रही थी,

और आपका हृदय बहुत कोमल और निर्मल है।

अब मस्का मत लगाओ, वरना चूम लूंगी।

वह अब सामान्य होने लगी थी।

अरे मस्का क्यों लगाना, आपकी बातों से लगा आप खुन्नसी हो, सो इतनी बातें हो गई। लगता तो नहीं है, अब वह मुस्कुरा रही थी।

जी बिल्कुल अच्छा घर आ गया , अब मैं निकलती हूं। फिर मिलेंगे बाय- बॉय

उसे मुस्कुराते देख मुझे खुशी हुई, मैं थोड़ी ही सही पर किसी को खुखी दे पाई।

शिखा की जॉब बहुत कठिन तो थी, पर समय की भी कोई सीमा नहीं थी, कभी -कभी पूरे दिन रात की ड्यूटी हो जाती थी।

उस रात बारिश हो रही थी। बिजली मानो पूरी अकड़ के साथ कडक़ रही थी। शिखा को शाम से ही कुछ हरारत महसूस हो रही थी, लगता है बुखार भी है- शिक्षा ने सोचा कि तभी बाहर से कडक़ती आवाज सुनाई दी। चलो-चलो भीतर चलो। सालियां नखरे दिखा रही हैं, हंसो खूब हंसो। अब देखो कैसे आखों से खा रही है, वो तुम्हारे यार-वार छोड़ेंगे नहीं किसी को भी। एकदम लाइट चली गई। इंवर्टर भी ज्यादा काम नहीं कर रहा था। उठ कर शिखा दरवाजे के पास गई तो बरामदे में कुछ चेहरे चमके।

क्या हुआ, पूछा शिखा ने

क्या बताएं मैडम जी, धंधा चल रहा था, बड़ी मुश्किल से पकड़ में आए ये लोग। अब हवालात की हवा खाएंगे तो सारी यारी-वारी भूल जाएंगे।

तभी एकाएक बिजली चमकी और शिखा की तेज नजरों ने उसे देख लिया। वह दांत फिटकिटाते हुए हवलदार को घूरे जा रही थी। उसका ध्यान शिखा की तरफ नहीं गया। शिखा मानो गिरते-गिरते बची। दरवाजे का पल्ला हाथ की पकड़ में आ गया। बुखार बढ़ गया था, सिर और भारी हो गया था। शिखा मुड़ी, शरीर का सारा खून मानो निचुड़ कर सिर में जमा हो गया था। आखिर वह एक जिम्मेदार पुलिस अधिकारी है। आखिर वह एक जिम्मेदार पुलिस अधिकारी हैं। कितने ही अटपटे केस हल किए उसने। पर पवित्रा को देख सब कुछ भूला जा रहा था। वह अपनी मेज तक पहुंची। तबीयत लगता है खराब होती जा रही

थी। उसने हवलदार को बुला जरूरी निर्देश दिए और पिछले दरवाजे से बाहर निकल गई।

……..000000000……..

जो कह न सके ...

जिंदगी में कई बार ऐसा होता है कि बीते पल हमारे वर्तमान पर हॉवी होते चले जाते हैं और जानते समझते हुए भी उन पलों को जीने लगते हैं। बेतरतीव यादें जो टुकड़े- टुकड़े हो कर जी जाती हैं, फिर वे कसैली हों या खुशनुमा

ऐसे ही पलों में जी रही थी श्रीमती दास। उनकी आलीशान कोठी का गेट अब पहले की तरह बंद नहीं रहता। उसके चौड़े पाट मानो भीतर आने का निमंत्रण देते रहे हों पर अब कोई नहीं उस गेट की तरफ जाता दिखता सिवाय दूध और अखबार वाले। श्रीमती दास का वर्षों का कठोर स्वभाव, अब इस कद्र नरम हो चुका होगा। यह शायद मेरे सिवा किसी ने जानने की भी कोशिश नहीं की। उनके बच्चों ने भी नहीं। जब भी मैं उनके पास जाती तो, गेट पर जमी उनकी निगाहें कुछ खोजने की चाह में बौराई होती। डाकिए के इंतजार में या किसी के आने की आहट में। आप उन्ही से किसी एक के पास क्यों नहीं चली जाती। एक बार सहानुभूति से भर कर मैंने सलाह देने की कोशिश की थी। उपरी तौर पर तुम्हारी बात सही है अपूर्वा, पर भला कब तक। अब उनका अपना संसार है, जिम्मेवारियां हैं, व्यस्तताएं और हालात हैं। फिर अब वे बच्चे भी नहीं रह गए,जो मेरी बात उसी तरह डरे-सहमे मानेंगे। वे हंसी फिर कहने लगी।

अपना घर-परिवार है, जानती हो अपूर्वा अब जब भी वे लोग कभी-कभार बच्चों की छुट्टियों में आते भी हैं, तब भी घर डरा-सहमा सा ही लगता है। न बच्चों का शोर न बड़ों के कहकहे। बच्चे भागते दौड़ते तो महीम और कलिका के चेहरे कैसे तो मलीन हो जाते हैं, जैसे बचपन में उनकी जरा सी आहट पर भी मैं, गुर्रा उठती थी। अब अगर मैं चाहूं भी वे यहां ऐसे ही रहते हैं। गुमसुम और शांत। मैं जानती हूं अर्पूवा अपने घरों में वे उन्मुक्त हंसते हैं और बिना

छीना-झपटी के खा तक नहीं सकते। स्वर रूंधने पर वे रूक गई। दुर्घटना में व्यापारी पति की मृत्यु हुई थी। तब महीम और कलिका छोटे ही थे। बच्चों के प्रति श्रीमति दास का व्यवहार जहां अनुशासित और कठोर था, वहीं पिताकी गोद में नरमी का अहसास था। पति की अचानक मौत के बाद श्रीमति दास का व्यवहार और भी कठोर होता गया। उनका विचार था, इससे वे अपने बच्चों को सुरक्षित और ज्यादा दुनियादारी के लायक बना देगी। आज उनके बच्चे सच में लायक हैं, योग्य हैं और उन्होंने अपनी अहमियत भी बनाई।

कलिका वह चंचल शरारती पर सहमी सी नहीं रही, जिम्मेदार डाक्टर कलिका है और महीम ने इंजीनियरिंग में टॉप कर अपने पिता का अनुसरण करते हुए, उनकी कंपनी संभाल ली थी, जिसे बच्चे के बड़े होने तक श्रीमती दास ने ही संभाला था।

श्रीमती दास सब कोई- सब कुछ होते हुए भी अकेली रह गई हैं। कभी जब उनका मन प्रफुल्लित होता तो बड़े हो चुके महीम- कलिका की नन्ही यादों में उलझी रहती।

जानती हो अपूर्वा महीम तब 4-5 वर्ष का रहा होगा। मैं जब उसे स्कूल छोडऩे जाती तो वह रो पड़ता। मम्मा तुम पापा के ऑफिस मत जाया करो स्कूल से लौटने पर मुझे घर में अच्छा नहीं लगता। आंसू भरी उसकी आंखे देख पल भर को मैं भी सिहर उठती। पगला गए हो महीम अगर मैं कंपनी का काम नहीं देखूंगी तो पैसे कैसे आएंगे। फिर हम बड़ी गाड़ी भी नहीं खरीद सकेंगे। तुम इसी छोटी सी गाड़ी में स्कूल जाते रहोगे। जैसे महीम हिल-मिल गया तो पैदल भी स्कूल जा सकता हूं। हमें नहीं चाहिए गाड़ी-बाड़ी। गहरी सांस ले श्रीमती दास यकायक मौन हो गई, फिर मानो नींद से जाग कर कहने लगती। इसी तरह कलिका अड़ जाती थी। तब बच्चों को समझाते बुझाते कभी डांटते पीटते पल्लू छुड़ा ऑफिस जाती पर मन दिन भर अशांत रहता। ऑफिस से आते ही

महीम-कलिका झपट कर आते और बहुत कुछ बताने लगते थे। झगडऩे लगते। तब दिनभर का जमा वात्सल्य फिर क्रोध में बदलने लगता। कितने गंदे कपड़े कर दिए लगता है, स्कूल से आकर पलभर भी चैन नहीं। कब वह रोती-रोती सो गई और कब महीम बंद कमरे में भूखा- प्यासा ही सो गया। आज मन कर रहा है कि उन पलों की पुर्नावृति हों और मैं दोनों बच्चों को सीने से लगा लूं। कलिका के जले हाथ को दुलार दूं और महीम के भूख से निढाल चेहरे को चूम लूं।

वे पल जो बंद मुट्ठी से रेत की तरह निकल गए थे, उन्ही कणों को ढूंढती सी उनकी आंखों के वे भाव काश महीम और कलिका भी देख पाते। पर वे तो अब भी अपनी मां का व्यक्तित्व उसी रूप में देखते हैं। कठोर और अनुशासित। वे महसूस ही नहीं कर पाए कि उनकी मां कितनी आहत और अकेली हो। श्रीमती दास ने अपने कमरे में सोना छोड़ दिया, जब रात-रात भर नींद नहीं आती तो बच्चों के कमरे में चली जाती हूं। उनकी चीजें छूती हूं, तस्वीरें निहारती हूं। सीने से लगाती हूं तो ऐसा लगता हैं। वर्षों पीछे आ गई हूं। अबकी बार मैनें भी निश्चय किया कि छुट्टियों में जब महीम और कलिका आएंगे तो उन्हें श्रीमती दास की मन: स्थिति से आवश्य अवगत कराउंगी। भला यह कहां का तुक है कि जवान हो चुके बच्चों के बचपन को ढूंढती ये बूढ़ी आंखे आहत होती रहे। फिर ख्याल आया। छुट्टियों तक ही क्यों इंतजार की जाए। उसके लिए तो काफी समय हैं। कुछ दिनों बाद ही श्रीमती दास का जन्मदिन भी है। उसी दिन दोनों बच्चे आ जाएं तो उपहार स्वरूप, उनकी मुस्कुराहटें निश्चित ही श्रीमती दास को खुशी से सराबोर कर देंगी। मन ही मन निश्चय कर मैंने महीम और कलिका को पत्र लिख दिए।

जिस दिन बच्चों ने आना था, मैंने श्रीमती दास के लाख मना करने पर भी उनकी खानसामा सहित पूरे घर की सफाई कर डाली। उन्हें तैयार किया। उनके सफेद पड़ते जा रहे चेहरे और निढाल शरीर की पीड़ा भी महसूस नहीं कर पाई।

कुछ ही घंटों में यह घर कितना भरा-भरा होगा, फिर श्रीमती दास का यही चेहरा उल्लासित हो, चमकने लगेगा। स्वयं तैयार होने को कह, मैं लौट आई।

थोड़ी देर बाद गाडिय़ों की आवाज सुन लगा महीम-कलिका हीए आए होंगे। मैं प्रसन्नता भरे माहौल की परिकल्पना में डूबी बढ़ी जा रही थी कि एकाएक कलिका का स्वर चीख में बदल गया है। वहां पहुंची तो लगा वातावरण एकदम स्तब्ध हो गया है। अपनी आरामकुर्सी में निढाल पड़ी श्रीमती दास सीने को दबाए, मानो कुछ कहना चाह कर भी कुछ न कह पाने का अहसास लिए जा चुकी थी। उनके पीड़ादायक चेहरे पर आंसुओं की ताजी लकीरें थी और फर्श पर एलबम खुली पड़ी थी- महीम और कलिका के मुस्कुराते चेहेरे उसमें से झांक रहे थे।

……..000000000……..

पीला लिफाफा -11

दोनों से मेरे रिश्ते अलग-अलग थे। एक मेरी पत्नी थी और दूसरी मेरी दोस्त। एक मेरी जीवन संगिनी थी, दूसरी मेरी आत्मिक दोस्त थी। हमारी किसी भी गंभीर विषय पर कई बार लंबी बहस हो जाती थी, वह भी कभी बच्चों की तरह नाराज हो जाती थी तो मैं खुद कॉफी बना कर उनके सामने रख देता और वो मुस्कुरा कर कॉफी का मग उठा लेती। अक्सर वह कहा कहती थी नीरेन ये कॉफी का मग ही हमारा शिमला समझौता है। ये न होता तो हम दोस्त नहीं बने रह सकते थे। मैं मुस्कुरा जाता।

यूं तो मेरी पत्नी काफी समझदार और व्यवहारिक थी। पहले वह भी खूब बहसबाजी होती थी। जब मेरी दोस्त नाराज होती, वहीं कॉफी बनती मैं तो बस कॉफी बनाने का नाटक कर पत्नी को छेड़ता रहता था। कॉफी बनने पर ट्रे मैं ले जरूर जाता था।

बाजार का काम हो, सिनेमा देखने की धुन हो या कहीं आउटिंग हो, हम तीनों साथ जाते, कभी ऐसा भी होता कि मेरी दोस्त कार की अगली सीट पर बैठ जाती। खासकर उस दिन जब उनके धुटने ज्यादा दर्द कर रहे होते हैं। मैं थोड़ा असहज तो हो जाता पर पत्नी मुस्कुराते हुए, उनको सांत्वना देते हुए पिछली सीट पर बैठ जाती और मैं राहत महसूस करता।

दिन, महीने, वर्ष खुद में कुछ नहीं है। ये समय के लिए किए हुए हिस्से हैं, जिससे इंसान को गणना करने में सुविधा होती है।

मेरी दोस्त के पति पहले विदेश चले गए थे, वहीं उन्होंने शादी भी कर ली थी। बाद में भात आकर इनसे विवाह किया। बच्चे बड़े हो गए थे। अपनी-अपनी

जॉब में, परिवार में व्यस्त थे। दोनों बेटे वर्ष में एक- दो बार मां से मिलने इसलिए आते थे कि संपति सुरक्षित रहे। मां कहीं बेच न दे या दान न कर दें। मेरी दोस्त का मानसिक ब्लेकमेल खूब करते और उनकी जमा पूंजी या कोई नए बनवाए जेवर ले जाते। आखिर में भी तो सभी कुछ दोनों भाईयों का ही होगा। वह कुछ नहीं कहती पर आंखे कुछ बयां कर रही होती।

इधर मैं महसूस कर रहा था। मेरी दोस्त ज्यों-ज्यों असहाय हो रही थी, मेरी पत्नी का रूख बदलने लगा था। अब वह मुस्कुराती नहीं थी। अनदेखा करने लगी थी। जब मेरी दोस्त लाठी के सहारे आती । यदि घूमने जाना होता तो पहले ही कार में आगे बैठ जाती। फिर घर में लॉक लगाने से बचा काम मुझे ही करना पड़ता। यहां तक कि अब कॉफी मुझे खुद ही बनाकर, अपनी दोस्त को पिलानी पड़ती। ये सब मुझे अनायास ही अनुभव हो रहा था पर मैं पूर्ववत ही व्यवहार करता। मेरी मित्र को इस समय हमारी सबसे ज्यादा जरूरत थी और पत्नी का रूख देख मैं एक सीमा तक ही, उनका साथ दे पा रहा था। इतने वर्षों का साथ कैसे उन्हें उपेक्षित कर दूं।

ये हालात अभी सुधरे ही नहीं थे कि पत्नी बीमार रहने लगी। मैं ज्यादा परेशान हो गया। पत्नी को संभालने में मेरी दोस्त बिल्कुल छूट गई थी। अब फोन पर बातें होती और मिलना तो कई-कई दिनों तक होता ही नहीं।

अस्पताल के चक्कर काटते पता चला कि मेरी पत्नी के हार्ट और किडनी में प्रोब्लम थी। सच में पहली बार किसी ऐसे रिश्तेदार के न होने का अफसोस हुआ, जो कुछ समय को आ पाता। मेरी पत्नी बिल्कुल मौन हो गई थी। पता नहीं उसे क्या हो गया था।

पर एक रात मेरे बहुत पूछे पर वह फूट-फूट कर रो पड़ी थी कि चाचा-चाची ने एक बार गुस्से में कह दिया था कि वह नाजायज औलाद है। जिन्हें अपना मां-बाप समझे हुए थी, वह तो चाचा-चाची थे, जिन्होंने अपने बच्चों के साथ उसे

पाला। आज उसे वहीं अपने मां-बाप याद आ रहे थे, जो अब इस दुनियां में ही नहीं थे। ये मेरे लिए भी झटका था, पर मैं संभल गया- जो भी हो ये मेरी पत्नी है।

अगले दिन सुबह मेरी दोस्त का फोन आया, मुझे उनकी आवाज कहीं बहुत दूर से आती लगी। चिंता से मैं परेशान हो उठा पर पत्नी को अकेला नहीं छोड़ सकता था। मेरी दोस्त ने पूछा मेरी आवाज में उदासी क्यों है। जो कभी एक आंसू तक नहीं बहाता था, वह फूट पड़ा। मैंने उन्हें सारी बातें बता दी। उनकी डांट भरी आवाज सुनकर मैं चौंका। तुम मुझे लेने आओ, मुन्नी को मेरी जरूरत है। तुरंत अभी इसी समय आ जाओ। मैं हैरान हुआ उन्हें मेरी पत्नी के भूले-बिसरे नाम का कैसे पता चला, तभी ध्यान आया। कभी-कभार अपनी पत्नी को छेडऩे के लिए मजाक में उसे म से मुन्नी बोल देता हूं।

मैंने पत्नी को समझाया। उसके चेहरे पर राहत देख मुझे भी तसल्ली हुई और अपनी दोस्त को लेने चला गया। वो भली मानस एक थैले में चंद कपड़े और जरूरत भर का सामान लिए तैयार थी। मेरे सर पर हल्की सी चपत मार बोली, पहले बता देते तो अच्छा होता। मैं कुछ न बोल पाया। इस समय हमें एक ऐसे ही इंसान की जरूरत थी।

घर पहुंचे तो चौंका, मेरी पत्नी हाथ जोड़े दरवाजे पर खड़ी हो मेरी दोस्त का स्वागत कर रही थी। मेरी दोस्त ने क्षण भर भी देर नहीं की। मेरी पत्नी का हाथ पकड़ कर पलंग पर लिटा दिया और मुझसे कहा- जहां से ईलाज चल रहा है, वहां से कॉन्ट्रेक्ट पर किसी मेडिकल पर्सन को ले आओ ताकि वह मुन्नी का ख्याल रख सकें। ये बात मेरे तो दिमाग में आई नहीं थी। मैं तुरंत अस्पताल भागा। जब औपचारिकताएं पूर्ण कर लौटा तो देखा घर का सारा माहौल बदल गया था। पूरे घर में भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी। रसोई गुलजार थी। मेरी दोस्त डाक्टर से पूछकर पत्नी के खाने-पाने का शैड्यूल नोट कर लिया था।

अब दोनों उसी शैड्यूल के अनुसार विचार कर रही थी। मेरा मन यकायक उल्लासित हो गया। इतने दिनों की उदासीनता, कहीं गायब हो गई थी।

अगले दिन अस्पताल से सेवादार भी आ गया। सब कुछ बेहतर ढंग से चल रहा था कि पत्नी की तबीयत ज्यादा खराब हो गई, तुरंत अस्पताल लेकर जाना पड़ा। पूरी चिकित्सीय जांच कर डाक्टर ने अपने साथियों सहित निर्णय हमें बताया कि इनकी दोनों किडनियां फेल हो चुकी है। जल्दी बदली होगी, वरना इनकी जान को खतरा है। इनकी जान बचानी है,तो इनका किडनी ट्रांसप्लांट करना नितांत आवश्यक है।

तभी मेरी दोस्त बोल पड़ी,नहीं डाक्टर साहब आप खून का सेंपल मिलान कर लें, मेरी दोनों किडनियां बिल्कुल सही हैं, मैं एक किडनी दे सकती हूं।

डाक्टर ने कहा, मैं मैडम आपकी उम्र देखते हुए ये रिस्की होगा। कुछ नहीं होगा। आप प्लीज देरी न कीजिए।

इन सबमें एक सप्ताह कब निकल गया पता नहीं चला। धीरे-धीरे मेरी पत्नी रिकवरी कर रही थी. मुझे लगा मेरी दोस्त की हालत में सुधार नहीं आ रहा।

मैंने डाक्टर से बात की, वो बोले हमने तो बहुत समझाया था पर ये नहीं मानी। अगर कल तक होश आया तो ठीक वरना....। मैं निशब्द हो गया। मैंने पत्नी को कुछ नहीं बताया कि उसे भी तकलीफ होगी।

रात को मैं दोनों ही कमरों में बारी-बारी से चक्कर लगा रहा था। पत्नी गहरी निंद्रा में थी। तभी मुझे लगा मेरी दोस्त होश में आ रही है। मैं तुरंत उनके पास गया। सच में उनकी आंखे खुल रही थी। मुझे देख उन्होंने मानो मुस्कुराने की चेष्टा की, पर मुस्कुरा नहीं सकी। इशारे से अपने सामान कपड़ों के बारे में पूछा। मैंने कहा स्टाफ से पूछता हूं। बैग कहां रखा। उन्होंने एक कोने की तरफ इशारा किया मैं दोड़ कर गया और बैग उठा लाया। उन्होंने बड़ी ही कठिनाई से बस

यही कहा कि मेरी कमीज की जेब देख। मैंने ढूंढ कर जेब निकला ही ली। उन्होंने इशारा किया जेब में देखूं। मैंने देखा एक बंद लिफाफा था। अपनी दोस्त को देखा तो लगा अब उनके चेहरे पर राहत थी। उन्होंने कहा अब मुझे नींद आ रही है। इस लिफाफे को आराम से रखना।

कई क्षण मैं लिफाफा हाथ में लिए खड़ा रहा,जब देखा वो सो गई है। मैं उनके ममतामय चेहरे को महसूस करता हुआ पत्नी के कमरे में उसे देखने चला गया। लिफाफा मैंने संभाल कर रख लिया था कि कल पढ़ूंगा। अब मैं भी पूरी बुरी तरह थक गया था और कब कुर्सी पर ही सो गया, पता ही नहीं चला।

प्रात: ही हलचल की आवाजें सुन आंख खुली, देखा एक नर्स मुझे ही उठा रही थी। पत्नी अभी भी आराम से सोई हुई थी। नर्स ने पत्नी की ओर देखते हुए फिर मेरी तरफ देखा और कहा जो आपके साथ आई थी, जिन्होंने आपकी पत्नी की जान बचाई वो नहीं रही- सॉरी, शी इज नो मोर।

मैं एकदम उठकर भाग। जिस तरीके से सोते हुए मैंने उन्हें रात छोड़ा था, मेरी प्यारी दोस्त, उसी तरह लेटी हुई थी। तभी मैं चौंका डाक्टर बोल रहे थे,लगता है इनकी मृत्यु9.10 बजे के बची हुई होगी। पर मैंने तो इन्हें होश में आते 11 बजे के करीब देखा था। मन में सोचा अभी डाक्टर अंदाजा लगा रहे हैं। ठीक से देखा तो है नहीं। पर ये मेरी अपनी सोच थी। बाद में भी यही सच निकला कि 10 बजे के करीब उनकी मृत्यु हो गई थी। मैं सिर पकड़ कर बैठ गया। आखिर मेरे कारण मेरी पत्नी के लिए ही तो उन्होंने जान की बाजी लगाई। मेरे लिए रूलाई रोकना कठिन हो रहा था। गला खुश्क हो गया था और सिर घूम गया था। तब तक पत्नी भी उठ गई थी। कैसे बताया, कैसे संभला, कैसे उसे नींद की दवाई देकर दोबारा सुलाया ये बातें दोहराने से क्या।

अपनी दोस्त के बेटों को सूचना भेजी और इंतजार करने लगा। रात से हुई मृत्यु और शाम होने आई पर 200 किलोमीटर से अभी तक दोनों में से कोई नहीं

पहुंचा। थक हार कर मैंने फिर फोन किया। देखा दो गाडिय़ां गेट तक आ हई थी। शाम के धुंधलके में मेरी अच्छी दोस्त का अंतिम संस्कार हुआ। मैं बहुत व्यथित था पर मेरी पत्नी गुम सी थी। पता नहीं सोच रही हो, उसके कारण ये हादसा हुआ पर जो होना था, होता तो वही है।

दोनों बेटों को वसीहत की पड़ी थी। किसी तरह वे इस एक रात रूके कि अगले दिन वकील ने आने को कहा था। दस बजे से 11 बजने को आए थे। वकील साहब न खुद आए थे और न फोन उठा रहे थे। वे करीब 12 बजे बीच दोपहर आए। बेटों का उतावलापन देख थोड़ा मुस्कुराए फिर बोले- अभी तेरहवीं तक रूकना है। आपको फिर इतनी जल्दी भी क्या है। सुनते ही दोनों भाईयों से ज्यादा उनकी पत्नियां अचकचा उठी। वकील साहब अब मां तो नहीं रही। हम दोबारा आ जाएंगे। बच्चों के भी एग्जाम होने वाले हैं, फिर अचानक आना पड़ा।

आखिर उनकी बातों से चोट खाकर वकील साहब बोल ही पड़े, आपकी मां की मृत्यु हुई है, ये कोई मामूली घटना नहीं है। खैर आप लोगों की मर्जी । मैं आपको कल वसीयत पढ़ कर सुना दूंगा। अभी कुछ औपचारिकताएं पूरी होनी है। किसी ने चाय को क्या पानी को भी नहीं पूछा वकील साहब चले गए।

मेरी पत्नी ने अभी अस्पताल में ही रहना था। मैं घर कुछ सामान लेने गया तो वह पीला लिफाफा याद आया। बैग मेरे पास ही था। मैंने ढूंढा तो वह लिफाफा मिल गया।

मेरी प्यारी मुन्नी,

तुमने मेरी कोख से जन्म नहीं लिया पर यह इत्तेफाक रहा कि जब मैं तुम्हारे पति के साथ तुम्हारे घर आई तो ऐसा लगा था जैसे तुम किसी जन्म में मेरी बेटी होंगी। मैने तुम्हारी आंखों में अपने लिए प्यार सम्मान के बाद उलाहने और अनदेखापन भी महसूस किया। कुछ न कहा, बीमारी का बहाना कर खुद को

धीरे-धीरे के तुम लोगों से दूर कर लिया। पर तुम्हारी बीमारी के बारे में सुन मैं रूक नहीं पाई। तुरंत तुम्हारे पास आ गई। इसी दौरान जो सम्मान तुमने मुझे दिया, वही मेरी जिंदगीभर की कमाई है। तुम सोचती होंगी मैने तुम्हारे ऊपर कोई अहसान किया- जिंदगी बचा कर, पर नहीं ऐसा कभी मत सोचना और न ही कभी सोचना कि तुम नाजायज हो। जानना चाहोगी अपने बारे में तुम, अपने पिता, मेरे पति की बेटी हो। मेरी कोख से नहीं, उनकी पहली पत्नी से तुम्हारा जन्म हुआ पर वो तुम्हारे आते ही चली गई। इसके बाद तुम्हारे चाचा- चाची ने तुम्हें पाला क्योंकि अपना घर तुम्हारे पापा ने उनके नाम कर दिया था। कुछ भी कहो तुम बेरी ही बेटी हो। मेरा शरीर बहुत कमजोर हो गया। मुझे अहसास है कि शायद मै न बच पाऊं। इसलिए यह पत्र लिख रही हूं। मेरा छोटा सा घर, जमीन जो भी थोड़ा बहुत है, तुमको देती हूं। बेटों को मैने बहुत कुछ दिया न अब उनको जरबरत है। वो सब कुछ बेच देंगे पर तुम तो संभाल लोगी ना। बस अब नहीं लिखा जा रहा। वकील साहब के पास वसीयत है, उन्हें सब समझा दिया। अगला जन्म हुआ तो मेरी कोख से ही जन्म लेना।

तुम्हारी मां।

मेरी सिसकियां रोके नहीं रूक रही थी। किसी तरह खुद को संभाल अस्पताल गया।

वकील साहब ने किसी न किसी बहाने बेटों को रोके रखा। उनका कोई भी बहाना चलने नहीं दिया। तेरहवीं के बाद जब वसीयत पढ़ने का समय आया तब तक बेटे बहुएं बुरी तरह पस्त हो चुके थे। वसीयत सुन कर उनमें इतना भी जोश नहीं आया कि वे सुनकर लड़ सकें। वैसे भी कुछ हो नहीं सकता था।

आज आपकी दोस्त का जन्मदिन है। इसी घर को खूब सजाएंगे। पत्नी आज बहुत खुश थी। मैंने भी कह दिया- दोस्त वो मेरी थी पर मां तो तुम्हारी थी ना,

जो तुम कहोगी वैसा ही होगा। भीगी आंखों के कोरे एक दूसरे से छिपाते हुए हम तैयारियों में लग गए।

……..000000000……..

मन अब उदास नहीं होता

आज बहुत उदास हूं

जानती हूं दुनियां में

सभी अपने आप में

अकेले हैं

फिर भी कभी-कभी मन

बहुत उदास होता है

मानव मन है तो सानिध्य तो पाना चाहेगा।

उसे साथ भी ऐसा होना चाहिए जो उसके मनोभाव को समझ सके, उसकी बातों में दिलचस्पी ले पर उसका विश्लेषक हो। उस दिन जब वह अपने पुराने शहर में अपने मुख्य कार्यालय में किसी कार्यवश गई तो बीच में काफी समय अतिरिक्त था। अब यह समय व्यतीत करूं। पल दो पल बातें ही कर लूं या जहां निधडक़ जा सकूं।

जब कहीं कोई आवाज न सुने

कहीं कोई दीपक न दिखे

राहें अकेली तपती दोपहर हो

मन बहुत उदास होता है।

भाभी को फोन किया तो जवाब मिला। आज न ही आओ तो बेहतर रहेगा। घर का माहौल बहुत खराब है। तुम्हारे भैया ने सुबह से ही पी रखी है और पूरे घर

में उधम मचा रखा है। पता नहीं यह बात सही थी या मुझे टालने की कोशिश थी।

जब भीड़ में अपना न हो

आंखो में ही आंसू सूख जाएं

आसपास उजाला नजर न आए

अपने भीतर का अंधेरा गहरा जाए

मन बहुत उदास होता।

इसी शहर में पैदा हुई। बचपन का स्कूल, फिर कॉलेज यहीं से किया। फिर भी कोई एक भी ऐसा एक भी द्वार नहीं , जहां बिना हिचक जाऊं। सच है मां-बाप न रहे तो कोई भी नहीं रहता। सब अपने-अपने स्वार्थ में मशगूल हो जाते हैं। सांझ को लौट तो आई पर एक बोझ सा बना रहा। लाख खुद को व्यस्त रखने की कोशिश की पर, बोझ बना ही रहा।

जानती हूं राह अकेले ही

पार करनी है

साथ किसी के होने

राह भटकती है

साथ तो अपना ही होता है

किसी के छूट जाने से तो मन और अकेला होता है।

सुबह जल्दी ही उठ गई। बाहर आंगन में आई तो मेरा मनपसंद मौसम मुस्कुरा रहा था। काले बादल उमड़-घुमड़ आए थे मानो कालीदास का संदेश लाए हों। सफेद पक्षी इधर-उधर उड़ रहे थे और हवा में महक के साथ ही हल्की ठण्डक

मेरे बाल उड़ा रही थी। आंचल बादलों की नकल करने लगा। यदाकदा बूंद भी पडऩी शुरू हो गई। यकायक मेरा मन-तन बिल्कुल हल्का हो उठा। काश छोटे ही पर होते तो मैं काले घुमड़ते बादलों की ओर उड़ जाती। मेरा अस्तित्व प्रकृति के साथ एकसार हो गया था। मैंने खुद को स्वतंत्र कर लिया। उस शहर के उन घरों में जाने की मजबूरी से।

बंधनों की जकडऩ

हौसलों की उड़ान

ये सब मैं खुद कर सकती हूं

मैं समर्थ हूं, सबल हूं

अपने ही विचारों में कैद थी

अब खुद ही स्वतंत्र हूं

मन मेरा अब उदास नहीं होता।

……..000000000……..

तरंग

रांग नंबर मैडम

ओह सॉरी

जी

अच्छा सुनियेगा

उसे लगा भला सज्जन हो सकता है ये

कितने सम्मान से बात कर रहा है

तभी दूसरी तरफ से आवाज गूंजी

हां जी, कहिएगा

आप मेरे दोस्त बन सकते हो

जी..जी मैं समझा नहीं

वह कुछ असहज हो गया

देखिए आप एक सज्जन पुरूष लगते हो

और अचानक से मुझे लगा, हम अजनबी

रहकर भी दोस्त बन सकते हैं।

जी समझा नहीं दोस्त भी अजनबी भी

इसके स्वर में उलझन थी।

बिल्कुल अजनबी दोस्त, न हम एक दूसरे का नाम पता, शहर, परिवार तक के बारे में जानेंगे या बात करेंगे

बस एक मोबाइल नंबर ही गवाह होगा।

वैरी इंटरस्टिंग मैम

येस

पर कारण

कुछ नहीं जस्ट दोस्ती के तरीकों में बदलाव

पर बातें किस विषय पर होगी, सब कुछ तो आपने किनारे कर दिया।

जो विषय चाहे शुरू हो जाए, उसी पर बात करेंगे।

ओके मैडम, अगली कॉल कब?

अब उसकी आवाज में भी उत्सुकता आ गई थी।

कभी भी, इंतजार कीजिए

जी और कॉल कटने का आभास हुआ तो चेतना जागी।

मन ही मन सोचा वाह क्या बात।

पर इंतजार खत्म नहीं हुआ,न कॉल आई न रिप्लाई मिला। उसे खुद पर हंसी आई। कमबख्त दिल भी क्या चीज है यानि कोई भी औरत अजीब सी बातें कह दे और हमारे जैसे दिल से पिघल जाते हैं। पांवों से फिसल जाते हैं। उसने उसका मोबाइल नंबर ही डिलीट कर दिया पर उसके दिल से वो अनदेखा चेहरा, वो सुरीली आवाज डिलीट हुई क्या?

आजकल वो मस्त थी, कोई तो है, जो उसे याद करता हो। हैरान परेशान हो, यही अहसास बहुत था, उसे रोमांचित करने के लिए। क्या बस इतना ही- अपने दिल से वो गहरी आवाज का जादू मिटा पाएगी क्या।

……..000000000……..

सपने

आज फिर सपना आया, बहुत दिनों के बाद आया। जब भी वह भूलने लगती, सपना आ जाता। अब डर पर काबू पा लिया था पर खुद पर नहीं। उसके हाथ में कुछ भी नहीं था, वह वही करती जो सपने बोलते, वही सोचती जो सपने कहते, वही बन जाती जैसा आदेश होता। न तो किसी को बता सकती, न बोल पाती, बस कठपुतली की तरह सपनों के इशारों पर चलती।

बहुत हुआ, अब सुधर जाओ या जहां चाहे जाओ- भाभी ने कहा और उसने सुना पर न क्रोध आया, न चिंता हुई और न ही अहसास हुआ कि कितनी बड़ी बात उसे सुना दी गई। भाई को भी अब उससे कोई वास्ता नहीं रखना था। पता नहीं अपनी पूरी सैलरी का करती क्या है। घर में खर्च देना भी बंद कर दिया। घर में राशन-दूध, बच्चों का खर्चा तो है पर शराब, सिगरेट, जुआ का खर्चा कैसे पूरा हो। भाई के लिए अपनी छोटी इकलौती अविवाहित बहन अपने खर्चों के आगे नगण्य लगने लगी। पहले भाई- भाभी ने प्यार से समझाया और अगले माह की पगार मिलने तक सब्र भी किया। पर क्या करें वो कुछ दिनों से लगातार सपने आ रहे थे। वह डरी सहमी तो थी पर अबकी बार उसे मोहलत नहीं मिली और अगले दिन सुबह जब वह सपनों में उलझी उठी तो देखा मात्र एक बैग में उसका सामान भर दरवाजे के बाद की तरफ रखा था।

चलो निकलो, यहां हरामियों के लिए कोई जगह नहीं। उसने अचकचा कर भाई को देखा वह भी उसके निकलने या पैसे निकालने का इंतजार कर रहा था। वह क्या करती सब कुछ तो सपने पहले ही निगल चुके थे।

भावहीन स्वर में पूछा, कहां जाऊं

जहां मर्जी मर- भाभी दांत पीसते बोल रही थी कि मोहल्ले तक आवाज भी न जाए और उसका काम भी हो जाए। ये कैसी भाषा, ये कैसा स्वर,ये कैसी नजरें, वह समझ नहीं पा रही थी। न उसने कभी ऐसी भाषा, नजरें देखी-सुनी थी।

ला दे कुछ रुपए , भाई ने मानो उसे पुचकारा कि डर से वह निकाल कर दे देगी।

भाई नहीं है मेरे पास। उसका स्वर रूआं था। फिर पूरी की पूरी पगार किस-किस को खिलाती है। उसका मन किया वह जोर से चिल्लाए कहे, मुझे नहीं पता, पर जानती है वह कोई यकीन नहीं करेगा। पागल करार दी जाएगी, तब क्या सारी जिंदगी पागलखाने के नाम हो जाएगी।

अब भाई-भाभी के सब्र का बांध टूट गया था। उसे बाजू से खींच कर गली में ले जाकर खड़ा कर दिया पर पहले इधर-उधर देखा- भाला। कोई देख तो नहीं रहा। उन्होंने लौट कर दरबाजा बंद कर लिया। काफी देर खड़ी रही। दिमाग अपने वश में होता तो कुछ करती भी। वह छोटा सा बैग उठाये चलती गई। लोग मुड़- मुड़ कर देखते रहे पर वह बिना इधर-उधर ध्यान दिए, बस बढ़ रह थी।

सपनों कहां हो तुम, बोलो बोलो क्या करूं मैं। उसे अनायास हंसी आई। अब कहां सोऊंगी, जो तुम आओगे।

जैसे मैं भटक रही तुम भी भटकोगे।

तभी उसे ठोकर लगी, वह गिर पड़ी, पत्थर नुकीला था। पैर से खून बह रहा था, वह अर्ध बेहोशी में भी आंखे खुली रखने की कोशिश कर रही थी कि सपने न आएं। इसी कोशिश में जब वह बेहोश हो गई। सपने एकत्रित हो गए।

सुन ए लडक़ी, अब तू हमारे भी किसी काम की नहीं रही। तेरा सारा पैसा, जेवर, कीमती सामान भी हमें संतुष्ट नहीं कर पाया। एक बार भी खुद का

आत्मविश्वास जगाती तो हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। हम बोलते रहे, तू करती रही। यहीं तेरी सजा है।

अब हमने भी क्या करना, तुम्हारे पास आकर , बताना कोई नहीं मानेगा, सपने भी ऐसा कर सकते हैं। हा हा हा हा...

हा हा हा हा... वह भी हंस रही थी, रो रही थी पर कोई भी उस पर ध्यान नहीं दे रहा था। अब किस -किस पर ध्यान दें, सभी तो पागल है यहां।

……..000000000……..

न जाने क्यों...

अपने जिस्म में लगे दानेदार लाल दाग को उसने अचानक नहाते हुए देखा तो मस्तिष्क में कौंधा, हे राम। ये कोई बीमारी तो नहीं। उत्साहित चंदना ने सुबह ही उठकर घर का सारा काम समेट लिया था। आज तन्मय ने कहा था कि वह दिन में घर आएगा और दोनों कहीं घूमने चलेंगे। बहुत दिनों बाद आज कहीं बाहर घूमने के उत्साह से चंदना के हाथ मशीन की तरह चल रहे थे। ये क्या हुआ, चंदना ने थरथराते हाथों से उस हिस्से को दबाया तो कुछ महसूस नहीं हुआ, वह तडफ़ड़ा उठी जोर से अपने बड़े-बड़े नाखूनों से दबाया तो दर्द से बिलबिला उठी। शंका उसके मस्तिष्क में घर कर चुकी थी। विचारों को लाख झटकने की कोशिश की तो अवश रही। इसी असमंजस में वह नहाई, तैयार भी हुई पर मन का उत्साह मर सा गया था।

तन्मय के आने का समय हो गया। वह ड्रेसिंग टेबल के सामने बुत सी बैठी रही । तभी उसकी तंद्रा टूटी। बाहर डोर बेल लगातार बज रही थी। वह उठी, थके कदमों से दरवाजा खोला- तन्मय ही था। क्या बात मैम साहिब लगता है, जमकर तैयार हो रही हो। तन्मय झुंझलाहट के बावजूद हंस रहा था। हां, बस ऐसे ही, उसने स्वयं को संभालने का प्रयास किया। फिर वे गाड़ी में घूमने निकले। कहां डिनर किया और वह यंत्रवत सी बोलती हंसती रही पर, लेकिन उसका मस्तिष्क कहीं दूर किसी ज्ञात- अज्ञात बीमारी में अटका रहा।

रात को सोते वक्त जब उसने नाइटी पहनी फिर वे दाग दिखाई दिए। मानो वे उसे ही घूर रहे थे। सुनो मुझे तुमसे कुछ कहना है। उसने थोड़ा सहमते हुए तन्मय से कहा। वह रोमांटिक अंदाज में ठहाका लगाते हुए कह उठा - मुझे तुमसे कुछ कहना है, पहले तुम, पहले तुम...।

मजाक नहीं, तन्मय जरा देखो तो उसने अपने बाजू की बगल में उभरते दागों को दिखाते हुए शंका की। कहीं ये कोई गंभीर बीमारी तो नहीं। वह सिसक उठी, मन का गुब्बार आंखों में वाष्प बनकर बहने लगा। अगर ये कोई बीमारी निकली। अगर उसकी बीमारी कुछ ऐसी-वैसी हुई तो वह क्या करेगी, कहां जाएगी। क्या तन्मय इसी तरह उससे प्यार करेगा या वह कहीं दूर किसी सेनिटोरियम में चली जाएगी या आत्महत्या कर लेगी- क्या करेगी।

उसकी सोच को विराम लगा, जब तन्मय ने कहा तुम चिंता मत करो कल सुबह ही डाक्टर से मिलते हैं। उट-पटांग मत सोचो। तुम थकी हुई हो, सो जाओ। तन्मय ने उसे दुलारते हुए कहा पर चंदना को तन्मय के शब्द सपाट से लगे। यूं ही सोचते-सोचते कब सो गई पता ही नहीं चला।

सुबह सारा घर का काम निपटा कर तन्मय के साथ ही शहर के सबसे प्रसिद्ध डाक्टर सूर्यप्रकाश के पास गई। डाक्टर ने गहनता से उसका चिकित्सीय परीक्षण किया और फिर सारे टेस्ट लिए। सायं तक रिपोर्ट लेने को कह दिया। तन्मय उसे घर छोड़ और सांत्वना देकर अपने ऑफिस चला गया। यह कह कर कि शाम को आते हुए रिपोर्ट ले आएगा।

शाम को जब तन्मय आया तो ड्राइंगरूम में बैठी वह उसी का इंतजार कर थी। तन्मय आते ही उसे अजब सी नजरों से ताकने लगा था। क्या रिपोर्ट आई तन्मय? वह मानो अपराधी हो उठी थी।

चंदना चिंता मत करो मैं तुम्हें किसी और बड़े अस्पताल में ले जाउंगा। डाक्टरों की लाइन लगा दूंगा। तुम्हारा खूब अच्छे से इलाज करवाउंगा, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होने दूंगा।

तन्मय मुझे पूरी बात बताओ। उसका दिल डूबा जा रहा था, आखिर मुझे हुआ क्या है।

देखो मुझे लगता है कि या तो डाक्टर की रिपोर्ट सहीं नहीं है या मशीनों में कोई प्रोब्लम आ गई हो या किसी और की रिपोर्ट गलती से थमा दी हो। तुम सारी बातें छोड़, मुझे यह बताओ कि आखिर मुझे बीमारी है क्या? उसकी आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे। तन्मय की चुप्पी, उससे सही नहीं गई। वह उठी और उसने तन्मय को झकझोक डाला, मुझे क्या बीमारी है तन्मय प्लीज बताओ तो डाक्टर ने क्या बताया। मैं बहुत परेशान हो गई हूं।

असल में चंदना, डाक्टर खुद पसोपेश में है कि यह बीमारी क्या है। कहीं कुष्ठ रोग या एड्स जैसी किसी बीमारी की शुरूआत तो नहीं है। अनायास ही तन्मय का स्वर ऊंचा हो गया। मद्रास तक ही क्यों न जाना पड़े मैं जाऊंगा। तुम तो मेरी जान हो, तुम्हें तकलीफ में देखकर मैं कैसे चैन से रह सकता हूं।

चंदना खुद को रोक नहीं पाई- हे ईश्वर किस जन्म का बदला है ये, जिंदगी के सारे सुख आराम तो दिए हैं, मुझे तन्मय ने, बदले में, मैं उन्हें क्या दे पाई।

दिन व्यतीत हो रहे थे। तन्मय कभी किसी अस्पताल में, कभी किसी मेडिकल कॉलेज में किसी से चर्चा करता। वह किस तरह व्यस्त और व्याकुल हो चुका है, चंदना देखती, महसूस करती और अपनी बीमारी से ज्यादा तन्मय की परेशानी से सिहर हो उठती। वह कर भी क्या सकती थी, सिवाय आसूं बहाने और प्रार्थना करने के। ये दाग अब कुछ और फैलने लगे थे। कभी लगता खारिश हो रही है, कभी लगता इन दागों की जड़े अंदर की ओर गहरा रही है। तन्मय ने कितनी ही खाने-लगाने की दवाइयां, मलहम ला कर दिए। मन ही मन वह अनुग्रहित हो उठती, जब-जब तन्मय स्वयं ही मलहम लगाने लगता।

आखिर एक दिन तन्मय जब ऑफिस से घर आया तो उसे अपने पास बिठा कर मानो कुछ सोचने लगा। कैसे वह अपनी बात कहां से और किन शब्दों में पूरी करे। क्या कहना है तन्मय, चंदना के स्वर में आशंका थी।

डालिंग मुझे लगता है। सभी रिपोर्ट फॉरेन न भेजनी पड़े। जॉन मेरा बहुत अच्छा दोस्त है। तुम जानती ही हो, वह अमेरिका में है। यहां आता-जाता रहता है। उसी से बात की थी, वह कह रहा था कि अभी मेरी ही रिपोर्ट लेकर जाना ठीक रहेगा और डाक्टर रिपोर्ट देखकर जो भी निर्णय लेता तब तुम्हें भी आना पड़ेगा। तुम जानती हो चंदना मेरे पास कुल जमा पूंजी तीन-चार लाख होंगी। अमेरिका जाना, ठहरना, अस्पताल,डाक्टर का कुल खर्चा इतना कम से कम इतना होता होगा ही। फिर क्या करेंगे समझ नहीं आ रहा। तन्मय बेचैन होने लगा और चंदना उसे देख परेशान। उसी कारण तो यह सब कुछ हो रहा है। तन्मय यदि तुम कहो तो मेरे जेवर, बैंक बेलेंस या पापा से मदद भी लूं तो दस लाख तो हो जाएंगे। तुम चिंता न करो, मेरा सब तुम्हारा ही तो है।

तन्मय एक बहुत बड़ी कंपनी का शेयर होल्डर और एमडी भी था। जो भी चंदना का अपना था वह भी तो इसी घर का था और वह स्वस्थ हो जाए, पहले तो ये जरूरी था।

आज ही तन्मय जॉन के पास अमेरिका चला गया था। उसे ढेरों हिदायतें देकर और रोज-सुबह शाम अपनी तबीयत बारे बताने को कह कर।

अब बात घर से बाहर पड़ोस तक फैल गई थी। अब यह महानगरों वाला शहर तो था नहीं कि पड़ोसी घर की भी खबर न हो। कोई सहानुभूति जताता, कोई आशंका जाहिर करता, कोई लगता जैसे उसने मुंह पिचका दिया हो, कोई खोजने वाली निगाहों से तोलने लगा पर भाव तो एक ही था। पता नहीं क्या बीमारी है। कुछ लोगों के भाव, कुछ अपनी ज्यादा सोच के कारण वह चिड़चिड़ाहट, झुंझलाहट और फिर अवसाद से गुजरने लगी। तन्मय का फोन आया। चंदना चिंता मत करो, मुझे कुछ भी करना पड़े करूंगा। कर्जा लेना पड़े, घर गिरवी रखना पड़े , सब कुछ करूंगा। बस तुम ठीक हो जाओ, यही ईश्वर से प्रार्थना है। तन्मय का स्वर उदासी से भरा होता और चंदना लाख न चाहने

पर भी सिसक उठती। चंदना के दिन खर्चे, बीमारी, उलझनों और तन्मय इन्ही की उधेड़बुन में बीत रहे थे। कोई गंभीर बीमारी हुई तो वह घर छोड़ कहीं चली जाएगी या आत्महत्या कर लेगी पर तन्मय को ज्यादा परेशान नहीं होने देगी। तन्मय का चिंतित चेहरा उसके सामने आ जाता और वह उसे सहलाती कहीं खो जाती।

तन्मय को गए कुछ दिन तो हो ही गए थे। एक दिन सुबह डोर बेल बजने की आवाज से उसकी नींद खुली। बेल लगातार बजे जा रही थी। वह अनेक आशंकाएं समेटे दरवाजे की तरफ दौड़ी। सामने जॉन खड़ा था। मुस्कुराता और थका चेहरा लिए। सफर की थकान चेहरे पर थी पर उसकी मुस्कान उसे राहत भी दे रही थी। भाभी तन्मय कहां है ? उसने समझा वह मजाक कर रहा है। वह तो स्वयं जॉन के पीछे तन्मय को खोज रही थी। कहां है तन्मय। उसने खोजती निगाहों से जॉन को ताका तो उसे लगा, जॉन की आंखे कुछ कह रही थी और जुबान कुछ पूछ रही थी। तुम अमेरिका से ही आए हो न जॉन? तन्मय को अमेरिका तुमने ही तो बुलाया था मेरी बीमारी बारे-

भाभी में बिल्कुल अभी अमेरिका से पहुंचा हूं , पर भीतर तो आने दो। चंदना को शर्मिंदगी हो आई। सचमुच उसने दरवाजे पर ही जॉन को रोक लिया था। प्लीज आप बैठो, हाथ -मुंह धो लो मैं कॉफी बनाती हूं। तब कहना जो कहना हो। अब जॉन का मुस्कुराता चेहरा कुछ मौन सा हो गया था। लगा थकान चेहरे के साथ ही सारे शरीर पर छा गई थी। वह सूटकेस रख, वहीं सोफे पर पसर गया। भाभी कॉफी बना दो बस।

अपनी बीमारी, तन्मय और जॉन के बारे में सोचते हुए वह कॉफी बना लाई और स्नेक्स भी। जॉन सच-सच बताओ न क्या बात है। सचमुच तन्मय तुम्हारे पास अमेरिका नहीं गए थे या मेरी बीमारी के कारण तुम मुझे सही बात नहीं बता रहे हो।

उसके पीले पड़ गए चेहरे को ताक जॉन अब ज्यादा अभिनय नहीं कर पाया। भाभी भूमिका बांधने, शब्दों के हेरफेर या फिर झूठ बोलने की मेरी आदत नहीं है। मैं सही कह रहा हूं, कि तन्मय से मेरा किसी भी रूप में संपर्क पिछले 4-5 वर्षों से नहीं रहा है। हम सभी कॉलेज में साथ पढ़े हैं। मैंने आपकी और तन्मय की दोस्ती को प्यार और फिर शादी में बदलते देखा है। आपके विश्वास, प्यार और श्रद्धा ने मुझे कुछ भी कहने से रोके रखा। सोचा तन्मय विवाह के बाद बदल जाएगा। पर उसने न बदलना था और न ही वह बदला। मैं जानता हूं उससे ज्यादा अभिनय करने वाला हम में से कोई नहीं है। उसने इतने वर्षों में आपको भनक भी नहीं लगने दी और जिसे आप उसका प्यार, विश्वास समझती रही वो सिर्फ धोखा था। आपको घर की सीमाओं में बांध, वह क्या नहीं करता था। चंदना का दिल बैठा जा रहा था। दिमाग कुछ भी न सोच पा रहा था। शंका-आशंका से घिरा उसका स्वर सच में दयनीय था। जॉन, आखिर तुम कहना क्या चाह रहे हो।

यही कि वह अमेरिका नहीं आया। वह भारत में ही है। मुंबई के एक पॉश फ्लैट में वह एक फ्लॉप अभिनेत्री के साथ रहता है। आपको आपकी बीमारी में उलझा कर वह ऐश कर रहा है। आपने जो भी उसको दौलत दी होगी, उससे। मेरी बीमारी, चंदना विवश सी होकर फूट पड़ी थी।

आपको कोई बीमारी नहीं है। स्किन इंफेक्शन है और ये कोई गंभीर बीमारी नहीं। उसने जो आपको दवाइयां दी होंगी, वह सिर्फ आपको बीमारी का यकीन दिलाने के लिए। आप अपनी बीमारी में उलझी रहो और वह ईलाज के बहाने कहीं-कहीं जाता रहे।

आप एक बात बताएंगे, जब आप तन्मय से मिले ही नहीं तो ये सब बातें आपको कैसे पता है।

मेरी भोली भाभी, हम मिले नहीं पर फोन पर तो बातें हो सकती है। असल में पिछले सप्ताह ही तन्मय का मेरे पास फोन आया था। उसने ही ये सब बातें मुझे बताई थी कि जब मैं भारत आऊं तो हम दोनों साथ ही आपके पास आएंगे ताकि आपको उसकी बातों पर पूरा यकीन हो सकें। पर भाभी मैं सचमुच आपको पूरा सच बताना चाहता था, इसीलिए मैंने आते ही तन्मय के बारे में आपसे पूछा था। मैं एक दिन पहले ही आ गया हूं कि आपको सच्चाई बता सकूं। मैं नहीं जानता मैंने सही किया या गलत। दोस्त का विश्वास तोड़ा या एक इंसान की जिंदगी का विश्वास जोड़ा। भाभी जिंदगी बहुत खूबसूरत है। तन्मय के आने तक आने जो निर्णय लेना हो ले लेना। बातें बहुत हैं पर फिर कभी जिंदगी में तो होगी। जॉन चला गया, कई प्रश्न छोड़ कर रास्ता भी दिखाया।

चंदना भाव शून्य होकर रह गई। क्या किसी पर विश्वास करने का मतलब उसे तोडऩा ही होता है। वह जानती थी तन्मय शुरू में ऐसा ही था पर वह बदल जाए। इसी विश्वास पर उसने अपना प्यार, अपना विश्वास, उस पर न्यौछावर किया। तन्मय की जरा सी उदासी भी उसे उदास कर देती। तन्मय की मुस्कुराहट उसकी खुशी बनी रहे, उसने हमेशा यहीं सोचा। उसकी लापरवाहियों, उदासीनताओं को वह उसकी अदा समझती रही। तन्मय ही उसकी जिंदगी का सिरा था। उसकी बातें उसके व्यवहार पर वह जी जान से कुर्बान थी और वह उसे पड़ा-पड़ा डसता रहा। कभी मानसिक रूप से कभी शारीरिक रूप से और अब तो उसने कंगाल भी बना डाला।

ढेरों बातें सोचते-सोचते रात होने को आई। सारी रात जाग कर उसने कुछ निर्णय ले लिए, जिनको अमल करने के लिए उसे समय और धैर्य की जरूरत थी। ईश्वर के आगे विश्वास और अपनी समस्त चेतना, श्रद्धा के साथ नतमस्तक होकर अपने निर्णयों को अंतिम रूप दे दिया।

अगले दिन जब तन्मय आया तो वह बिल्कुल पहले की तरह उसे देकर पुलकित हुई। प्रश्नों की बौछार से तन्मय को पहले बोलने ही नहीं दिया। मन में सोचा- वैसे भी तुमने झूठ ही तो बोलना। दौड़ कर उसके नहाने के लिए गीजर ऑन कर आई, फिर आराम से बैठ कर तन्मय को उसी तरह अश्रुपुरित नजरों से ताकने लगी। रोना तो उसकी बेवफाई पर खुद व खुद आ रहा था। तन्मय तुमने मेरे लिए क्या-क्या नहीं किया। मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मुझसे इतना प्यार करते हो तन्मय भी उसे बहलाता रहा- चंदना मैं दुनियाभर के अस्पताल छान डालूंगा, तुम्हें कुछ भी नहीं होने दूंगा। काश, यह बीमारी तुम्हारी जगह मुझे ही लग जाती। उसके घाव जैसे हो गए निशानों को छूते हुए, वह मानो बहुत चिंतित हो गया था।

कई बार चंदना को तन्मय की चालाकी और धूर्तता पर हंसी आ जाती। एक मामूली दाग लेकर उसने अमेरिका के डाक्टरों को भी कसौटी पर ला खड़ा किया और एक देश से दूसरे देश तक की काबलियत को ही ललकार दिया। कितना मासूम बन तन्मय ने उसे मानसिक आघात दिया कि वह कुछ भी सोच नहीं पाई। न जान पाई कि वह तो तन्मय के बनाए चक्रव्यूह में घूमती रही। किसी अंजान बीमारी के छूत भय ने इसे न किसी से मिलने दिया और न उसे स्वयं कहीं जाने दिया। कई बार अपनी ही चतुराई इंसान को खुद खा जाती है। जॉन न आता तो क्या उसे कभी असलियत का पता चलता। फिर सोचती पता तो जरूर चलता पर न जाने कब और किन हालातों में पता चलता। अब उसने भी अपने बाहरी आववरण से अपने भीतर के आवरण से अलग होकर जीना शुरू कर दिया था। नकली मेडिकल रिपोर्ट, दवाइयां और तन्मय के नकली हालातों में वह भी वैसी ही हो जाती, पर भीतर से उतनी ही मजबूत भी।

तन्मय का काइंयापन बढ़ता चला गया। वह चंदना के भावों, व्यवहार को बदलना तो तब समझता, अगर वह सही होता।

वह कंपनी के कार्यों के कारण और कभी चंदना की बीमारी के कारण कहां जाता था, अब चंदना जानती थी। कभी न कभी पाप का घड़ा स्वयं ही फूटेगा पर चंदना खुद घड़े को ठोकर मारना चाहती थी। मान गई तन्मय सोचा, उसने बीमारी से आहत देख, क्या शानदार प्लान बनाया कि उसे उसी में उलझा कर, अपना खेल खेलता रहा। कुछ लोग किसी की कमजोरी का किस कद्र फायदा उठा लेते हैं, वह उसका पति था, सर्वस्व पर उसका असली रूप कितना घिनौना था, उसे उसी की चाल में मात देना चाहती थी।

आज 18 जून थी, उनके विवाह की सालगिरह। चंदना ने तन्मय को मनाया लिया था कि पता नहीं इस बीमारी के कारण कितने और जी पाएगी। क्या पता उसे अस्पताल में ही रहना पड़े तो क्यों न इस वर्ष अपने विवाह की सालगिरह ऐसी मनाई जाए कि वह वर्षों तक यादगार रह सकें। तन्मय ने भी भावुक होते हुए आंखों में पानी भर मानो सिर्फ चंदना की खुशी के लिए हां कर दी।

उस शाम उनकी कोठी और लॉन की सजावट किसी विवाह समारोह से कम नही लग रही थी। मेहमान आते जा रहे थे। दोस्त, रिश्तेदार, पड़ोसी तो थे ही तन्मय के ऑफिस से भी सभी आ गए थे।

केक काटने, खिलाने की रस्म चल रही थी तभी डाक्टर सूर्यप्रकाश भी अपने परिवार सहित आ पहुंचे। तन्मय उन्हें देखकर हैरान हुआ- ये कैसे आए, किसने बुलाया इन्हें- सोचता हुआ उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा कि सभी चंदना भी चहकती हुई आ पहुंची। आइए, डाक्टर साहब आपका ही इंतजार था, मेरे पति को तो आप जानते ही हैं-तन्मय। जो मेरी बीमारी के बारे में आपसे अक्सर मिलते रहे थे। आप इतने बड़े स्किन एक्पर्ट होकर भी बता नहीं पाए कि मुझे किस तरह की बीमारी है, बेचारे तन्मय अमेरिका तक जा आए।

पर चंदना, आपको तो कोई बीमारी ही नहीं है। मैंने तन्मय को बताया था कि मामूली स्किन इंफेक्शन है। परेशान होने की कोई बात नहीं है। डॉ. सूर्यप्रकाश

ने हैरानी से कहा। चंदना ने तन्मय की दी सभी रिपोर्ट, दवाइयों की सूची उन्हें थमा दी। सभी लोग तब तक वहीं आ गए थे। डॉ. सूर्यप्रकाश सभी मेडिकल रिपोर्टस देख समझ नहीं पा रहे थे कि इन नकली रिपोर्टस व दवाइयां की सूची का क्या करें। तन्मय जड़वत आवाक, उसी तरह खड़ा रह गया था।

माफ करना डाक्टर साहब मैंने आपको बैठने तक को नहीं कहा और अपनी बीमारी की बात शुरू कर दी, लेकिन मैं जानती हूं डाक्टर साहब अगर यह मसला थोड़ी देर बाद उठाती तो तब तक तन्मय अपना कोई न कोई खेल, खेल चुका होता। इन्होंने एक मामूली निशान को एक खतरनाक बीमारी में ढाल दिया था कि मैं मानसिक रूप से ही अपंग हो जाऊं। वैसे भी मैं बहुत टूट चुकी थी कि जिसे अपना संबल समझा। उसी ने मुझे पागल होने की हद तक पहुंचा दिया मेरा सर्वस्व छीन खुद कैसे ऐश करता रहा तन्मय। सबको अपनी बीमारी और तन्मय की क्रूरता की बातें कहती। औरत कितनी भी निर्मल हो, उसके दामन को दागदार बनाने में कोई भी पीछे नहीं रहता। इस बीमारी के कारण पिछले वर्ष से कितनी मानसिक यातना भोगी है, मैं ही जानती हूं। कोई भी सरल सीधा व्यक्ति अपने ही मार्ग पर चलता, लेकिन जब अपना ही भीतर तक अज्ञात कर देता है तो प्रतिशोध की भयंकता की कोई सीमा भी नहीं रहती। तन्मय की कहीं छोटी से छोटी बात भी मेरे लिए पत्थर की लकीर होती थी। खुदा माना था मैंने इसे, पर मिला क्या- अपमान और जलालत भरी जिंदगी।

आज आप सभी मेरी व्यथा के साक्षी हैं। हो सकता है यहां मौजूद कुछ लोग मुझसे सहमत न हों, लेकिन मुझे परवाह नही। इतने समय में कौन था, जिसने मुझे मानसिक रूप से सहारा दिया हो। जो लोग मुझसे सहमत हैं, वे मेरी भावनाएं, मेरी व्यथा और मानसिक स्थिति को समझेंगे। अब मैं तन्मय के साथ नहीं रहूंगी। यह अपनी प्रेमिका के साथ , जहां चाहे जा सकता है। मैं इसी घर में अपने ही रूम में रहूंगी। आप चाहें तो भोजन कर सकते हैं। इससे मुझे खुशी होगी। विवाह की वर्षगांठ के रूप में नहीं, मेरे निर्णय की सहमति के रूप में।

कुछ लोग वहां से गए। शेष ने बेशक कहा कुछ नहीं, पर वह भोजन करके गए। उनमें डॉ. सूर्यप्रकाश भी शामिल थे।

सब लोगों के जाने के बाद चंदना ने भोजन व्यवस्था में लगे लोगों के साथ काम समेटा। रात के 2 बज चुके थे। थकी, पर हलकी हो चंदना ने भीतर आकर दरवाजा बंद कर लिया। वह नहीं जानती तन्मय कब वहां से चला गया था।

……..000000000……..

मन से मन तक

वह एक साधारण परिवार से आया स्ट्रगलर था। माता-पिता बचपन में ही चल बसे थे। एक अविवाहित चाचा थे, जिन्होंने उसे पाला था। अपने वंश का वही एकमात्र चिराग था। कट्टर ब्राह्माण परिवार का वह युवक जो धार्मिक कथा वाचक ही बन कर रह जाता। आज सिनेजगत का सबसे चमकदार सितारा था। इसके पीछे, जहां उसकी सोच मेहनत और व्यक्तित्व का हाथ था, वहीं उसका भाग्य भी उसके साथ था।

पढ़ाई में अव्वल रहने वाला मानस जब कॉलजे की पढ़ाई के लिए शहर आया तो चाचा ने उसे गले लगाते हुए भरे गले से यहीं कह पाया- बेटा, पहले माता-पिता, फिर मेरा और अपना ख्याल रखना। साधारण शब्दों में बांधे व्रतव्यबोध को चाचा ने कितनी सरलता से समझा दिया था।

चाचा मैं कही भी रहूं आप सबका आर्शीवाद बना रहे। चाचा अपने आंसू रोकने की चेष्टा में कुछ न बोल पाए।

स्कॉलरशिप के आधार पर मानस विदेश भी हो आया था। कम्प्यूटर इंजीनियर मानस कभी भी अपना गांव व लोगों को नहीं भूलता था। दोस्तों के आग्रह पर जब सपनों की नगरी मुंबई आया तो भाग्य मानो वहीं बैठ उसे पुकार रहा था। अब वह पहले जैसा मानस नहीं था। शरीर सौष्ठव में श्रेष्ठ उसकी गहरी आंखें मानो किसी को भी बांध लेने में समर्थ थी। उसका व्यवहार, व्यक्तित्व, उच्च शिक्षा और सबसे बढक़र उसका निर्दोष सांवला चेहरा किसी भी कसौटी पर उतरने को तैयार था। शुरूआती सफलता औसत रही पर फिर उसकी फिल्में एक के बाद एक हिट होती रही। आज वह सफलतम स्टारों की अग्रिम पंक्ति का सितारा बन गया।

चाचा उसकी सफलता देखने के लिए नहीं रहे थे। गांव की जो थोड़ी बहुत जमीन थी, उसे उसने दान कर दिया था। अब पूरा आकाश उसका था। पूरी जमीं उसके पांव तले थी। जिंदगी में अब दोस्तों के सिवाय दूसरा कोई नहीं था। मेहनत और मेहनत उसका मूलमंत्र था। भीड़ से घिरे भी वह मानो अकेला रहता। युवतियों के निमंत्रण, अभिनेत्रियों के आमत्रणों को वह अनदेखा कर देता। इन सबके लिए तो बाकी का सारा जीवन है ही, वह अक्सर दोस्तों से यह कहता था।

समय अपनी रफ्तार से चल रहा था और मानस अपनी रफ्तार से बढ़ रहा था। आज उसे न पैसों की कमी थी, न किसी और चीज की। उसके कहने भर से उसे सब कुछ प्राप्त था। अपने जन्मदिन पर वह जरूर अपने गांव जाता। मंदिर में पूजा करता और सभी को भोज करवा कर रात तक लौट आता था। यही एक दिन उसने सिर्फ अपने लिए रखा था। कोई भी मौका हो, कैसा भी अवसर हो, वह उस दिन गांव आना नहीं भूलता।

इस बार वह विदेश शूटिंग के लिए गया हुआ था। उसने निर्माता को पहले ही कह दिया था, उसे गांव जाना है। इसलिए वह अपनी शूटिंग शैड्यूल ऐसा रखें, कि वह गांव भी चला जाए और उसे नुकसान भी न हो। पर पता नहीं कैसा मौका था कि निर्माता-निर्देशक ने ध्यान नहीं दिया, सोचा क्या फर्क पड़ता है। एक दिन लेट गांव जाना पड़े। करोड़ो का सैट लगा है, तो इसे एक दिन नहीं टाल सकते। प्रात: जब काफी देर तक मानस सेट पर नहीं आया तो उसे बुलाने खुद निर्माता गए। उसके कमरे में चिट पड़ी थी। मैंने गांव जाना है, आपको पहले ही बता दिया था, परसों लौट आऊंगा। सिर पीटते हुए निर्माता कभी अपनी सोच को कोस रहे थे। इसके बाद किसी ने भी उसे उस दिन बांधने की कोशिश नहीं की। सब जान गए थे मानस ने उस दिन गांव जाना ही है।

गांव में आकर मानस ने पूजा की और भोज की तैयारियों का निरीक्षण करने लगा। उसे लगा कोई उसे धीरे से पुकार रहा है। चारों तरफ इसे कोई ऐसा चेहरा नजर नहीं आया। उसने सोचा शायद वहम हुआ है। वह लौट आया। फिर अक्सर उसे लगते कोई उसे पुकार रहा है। आवाज बहुत मधुर, शांत और धीमी होती थी। मा...न...स। पता नहीं कोई है या उसका वहम बढ़ता जा रहा है। जब भी वह अपने आप में गुम होता, एकांत में होता या सो रहा होता आवाज उसी सुमधुर रूप में उसके कानों से होकर उसके दिल में उतर आती- मा...न..स।

पहले वह चौंकता था, फिर ख्यालों को इटकने का प्रयास करता, फिर अपना ध्यान बांटने की कोशिश करता पर आवाज उसी तरह कभी-कभार आ कर उसे बैचेन कर जाती। बहुत सोचा उसने फिर सोच-विचार कर निर्णय ले लिया। सममुच इतनी मधुर-शांत आवाज उसे थपथपाती ही तो है, जब वह अशांत होता है, परेशान होता है। जब उसे नींद आती। यही आवाज उसका नाम पुकार उसे सुला भी जाती है। उसने इस बारे में किसी से कोई चर्चा नहीं की। बस उसने अपने मन के कोनों में ही छुपा लिया। कितनी ही बार इस पुकार ने उसे किसी दुर्घटना से आगाह किया, कितनी ही बार उसे पूर्वाभास करवाया और कितनी ही बार उसे खुशियां दी। बस उसे यही ध्यान रखना होता कि उसने उसका नाम किस तरह पुकारा।

वह फिल्मी जगत का एक कामयाब सितार तो था ही उसके साथ यह मिथ भी जुड़ गया था कि वह जिस व्यक्ति के साथ खुश होता है, उसके वारे-न्यारे हो जाते हैं और जिससे नाराज होता है वह डूब कर रह जाता है।

दोस्तों के आग्रह पर कभी उसे ख्याल आता, वह विवाह कर लें। दोस्तों का आग्रह बढ़ता जा रहा था और उससे विवाह की इच्छुक युवितयों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। दीवानेपन की हद को पार कर कई युवतियों ने उसके घर पर ही धरना दे दिया था। मानस किसी एक मनपसंद लडक़ी से शादी कर तुम

कई झंझटों से बच जाओगे। इन सब बातों से मानस वास्तव में परेशान हो गया था। इस बार गांव जाकर, फिर विवाह के बारे में सोचूंगा। इसने यह निर्णय ले लिया था।

जब वह गांव के लिए चला तो मौसम की मार से सडक़ जगह-जगह से टूट गई थी। इसलिए गांव पहुंचने में काफी देर गई थी। सारी रात अजीब सी बैचेनी में गुजारता रहा। प्रात: पूजा के बाद गांव को भोज करवा कर, जब वह कुछ समय निकाल फुर्सत से बैठा तो फिर वही पुकार आई- मानस। पहली बार इतनी स्पष्ट आवाज सुनी उसने। इसने बिना चौंके सावधानी से चारों तरफ देखा। अनायास उसकी नजर एक कंबल ओढ़े आकृति पर पड़ी। वह धीरे से उठा और उसके पास मानो अनायास सा आकर खड़ा हो गया। बैठो मानस, स्वर बोला। वह मंत्रमुग्ध सा जमीन पर ही बैठ गया। मानस तुम कुछ मत बोलना सिर्फ मैं बोलूंगी, तुमने बीच में टोका तो मैं कभी भी अपनी बात पूरी न कर पाउंगी।

मानस ने हुंकार भी नहीं किया। प्रश्नचिन्ह आंखों से सिर से पांव तक ढके उसे देखने लगा।

मैं बचपन से ही छाया बन तुम्हारे साथ रही हूं। तुम मुझे इसलिए नहीं जानते क्योंकि तुमने कभी मुझे महसूस करने की कोशिश नहीं की। तुम गांव से शहर गए, विदेश गए, जो भी संघर्ष तुमने यहां तक पहुंचने में किए, मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही रही। मैंने अपना भाग्य, अपना आप, सर्वस्व, उम्र यहां तक कि कोई भी सुख मैंने तुम पर वार दिया। बिना तुम्हारे जाने। तुम्हारी सोच, इच्छाएं, कामनाएं मुझ तक पहुंच जाती थी। मैं उन्हें मूर्त रूप में लाने के लिए जुटी जाती थी। मेरा अपना कुछ भी तो नहीं था। मेरा इसमें कोई स्वार्थ नहीं था। मानस तुम सही नहीं सोच रहे हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए। मुझे किसी चीज की जरूरत भी नहीं होती। मैं बस तुमसे प्यार करती हूं और ये तो तुम जानते होंगे कि जब कोई किसी से सच्चा प्यार करता तब उसके लिए खुद की अहमियत से ज्यादा

दूसरे की चिंता रहती है। तुम्हारी चिंता, परेशानी, दुख जो भी हुआ उसके आगे मैंने खुद का आस्तित्व भूला दिया। अब मुझे जाना है मुझसे कोई भी प्रश्न मत करना जवाब देने, मेरे लिए संभव नहीं है। अब तुम मेरी ओर से स्वतंत्र हो- चाहो तो विवाह कर सकते हो। मानस आवाक बैठा रह गया। दिमाग में बवंडर मच रहा था, वह कुछ भी सोच नहीं पा रहा था। कौन थी यह क्या थी, कैसी थी- क्या कोई आत्मा थी या उसका वहम। सोच-सोच-सोच पर जवाब कुछ नहीं।

इस बार जब मानस गांव से लौटा तो बहुत बदलाव लग रहा था। उसके हाव-भाव, विचार और व्यवहार में दार्शनिकता का पुट था।

जिन दिन दोस्तों ने विवाह का दिन पंडित से पूछा और निश्चित दिन विवाह की तैयारियां शुरू करने से पूर्व मानस से मिलने गए तो देखा मानस कहीं भी नही था।

दोस्तों ने खुद से फोन कर, हर तरह से पता लगाने की कोशिश की पर मानस का कुछ भी अता-पता नहीं चला, फिर तो पूरे शहर में भूचाल ही आ गया। सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा सितारा। एकदम गायब हो गया। मीडिया को तो व्यस्त रहने का बहाना मिल गया।

वहीं, टीवी, समाचार पत्रों में हर जगह मानस ही था। उससे जुड़ी घटनाओं का ब्यौरा, अकूत धन-संपति, मान-सम्मान और भी बहुत कुछ को दर-किनार कर वह ऐसा गायब हुआ कि फिर कभी नहीं मिला।

पर इतना जरूर है कि वह जहां भी है, जीवित है। वह कायर नहीं है।

कभी लगता है, वह सुदूर कोने में जो किसान गुनगुनाते हुए हल चलाता है, वही मानस है।

कभी लगता किसी मंदिर की टनटनाती घंटियों के साथ जो सुमधुर भजन गाता पंडित है, वही मानस है।

और कभी लगता बीमार, अपाहिज लोगों की सेवा दिन-रात करता युवा, वही मानस है।

पर वह जहां भी हो, अपने लिए नहीं, किन्ही जिंदगियों को संवार रहा होगा। आखिर उसकी आत्मा ही तो है, जो छाया की तरह साथ है आत्मा ही तो हे जो हमारे साथ जन्म लेती हे और हमारे साथ ही हमेशा रहती है,

……..000000000……..

तुम पलका हो....

अपने सामने खड़ी उस निहायत बदसूरत सी, जले हुए काले चेहरे वाली युवती को देख मैं चौंकी। वह हंसी। मलीन सी बेतुकी हंसी से उसका चेहरा और भी भयानक लगा सफेद झांकती दंतपंक्तियों को देख कर मैंने फिर आश्चर्य से पूछा। तुम पलका ही हो ना? जिसे नाम दिया था सौंदर्य समाज्ञी मिस पलका।

उसकी हंसी थम चुकी थी। उसने इस तरह कहा मानो अपना गुनाह कबूल कर रही हो।

मेरा मन सहानुभूति से भर उठा, ममत्व सा जाग उठा। चाह थी उसके सारे दुखों आत्मसात कर लूं। मुझे पहले वाली पलका की याद हो आई। वह पलका जो सुंदरता की साक्षात प्रतिमा थी। सांचे में ढला शरीर, सुंदर सुतवां नासिका, काली-चमकीली आंखों वाली पलका की लंबी-लंबी पलकें। उसके नाम को और सार्थक कर रही थी। इसी रूपसी का ये वर्तमान रूप मुझे कहीं भीतर से कचोट रहा था।

कहो पलका ये सब कैसे और क्यों हुआ?

वह चौंकी, तुम कुछ नहीं जानती

मेरे मन में भावुकता छा गई। मैं कह उठी। तुम्हारे मुंह से ही सुनना चाहती हूं। ताकि तुम्हार मन हल्का हो जाए और तुम्हें किसी और से अपना दुख न कहना पड़े। फिर पलका किसी के पास इतना समय और इच्छा ही कहां कि किसी का दुख सुन सकें। मैं अगर दर्द न बांट सकूं तो दुनियादारी की खातिर हंस ही लूंगी। मेरा स्वर भर्रा गया था।

मेरे अंतर्मन को विश्वास और अविश्वास के घेरे ने ठेस पहुंचाई। मेरी प्रश्नचिन्ह आंखों के भाव समझ, वह आगे बोल पड़ी। एक बात बताओ विश्वास का बदला अविश्वास क्यों होता है। अब अविश्वास की गहरी खाई में गिर गई हूं कि स्वयं पर भी विश्वास नहीं रहा। वह पल भर चुप रही फिर स्वयं ही अपने प्रवाह में बह कर बोलने लगी। विश्वास जिंदगी के हर मोड़ पर सहारा देता है।

यह दुनिया ही दो हिस्सों में बांट दी गई है। एक है विश्वास, त्याग और इंसानियत का। दूसरा हिस्सा है- धोखा, लालच और विश्वासघात का। आदमी तब तक धोखा देता और खाता, जब तक उसमें सहनशक्ति हो। जब वह हार जाता है, तो मेरी ही तरह इस कद्र निराश हो उठता है।

वह बोलते -बोलते सुबकने लगी। मैं चाह कर भी उसे चुप न करा पाई। मुझे लगा मानो धोखे का मुखौटा मेरे चेहरे पर लगा है।

जानती हो माई डियर, अपने मित्रों की मदद करने, उनके दुख दूर करने में मेरा हृदय असीम आनंद और संतोष से भर उठता था। परीक्षा के दिनों में जब आधी-आधी रात पढ़ कर भी वे मुझे बताते कि उनकी पढ़ाई किताबों और नोट्स न बना पाने के कारण नहीं हो सकी, तो अपनी किताबें व नोट्स देकर स्वयं उपेक्षित रह जाती। उन मित्रों के स्वार्थीपन ने मेरी आंखें खोली, जब उन्होंने मेरे चरित्र पर भी अफवाहों का दायरा फैलाना शुरू कर दिया। सफाई देनी व्यर्थ थी और उन्हें न बदलना था न वे बदले।

मेरे पिता व्यवसाया थे। मैं उनकी अकेली जीवित बची संतान थी तो मुझे कोई कमी तो थी नहीं। तुम भी सब जानती ही हो। अचानक हुई पिता की मौत से मैं संभली भी नहीं थी, कि चचेरे भाईयों ने अनायास ही मिली संपति से मुझे दूर करने के लिए एक अटैची और चंद नोट थमा दिए। उन पर विश्वास कर पिता जी ने और मैंने कितना बड़ा धोखा खाया। तब पहली बार अपने लिए रोई थी। अपने लिए सोचा था, पर काफी देर हो चुकी थी। समय की दौड़ में हारने लगी।

तुम सुहास के पास नहीं गई। मैंने उसकी विचारधारा को मोडऩा चाहा। जरूर गई थी। वही एकमात्र सहारा लगा था मुझे। किन परिस्थितियों में उससे मिली थी। एक बार दोहराना चाहती हूं, तब शब्द नहीं थे बताने के लिए पर अब शब्दहीन नहीं हूं।

कई बार कोई हमें इतना अपना सा लगने लगता है कि हम उसकी और आकर्षित हो उठते हैं। उससे बातें कर, समझने की इच्छा होती है और सुख-दुख बांटे। एक खूबसूरत पवित्र दोस्ती का नाता बनाएं। ऐसे रिश्तों को लोग स्वार्थ के जाल में लपेट कर खोखले प्यार का नाम दे देते हैं। पर जानताी हो मेरी प्यारी दोस्त- वह पल भर रूक कर हंसी फिर बोली। कोई अच्छा लगते - लगते कब मन के अंतर्मन को छू जाए पता नहीं चलता कि दिल में कब उसका नाम खुद गया।

पंजाब की सुप्रसिद्ध लेखिका अमृता प्रीतम ने लिखा था- औरत अपनी जिंदगी की सबसे निजी बातें अगर किसी के साथ करना चाहती है तो फिर मर्द के साथ, लेकिन कभी-कभी एक्सैपटिड रूप बदल भी जाता है , जब औरत-औरत को समझने के काबिल हो।

मैंने सुहास से सब कुछ कह सुनाया। अपनी मन:स्थिति। भाईयों का अत्याचार, परिचितों मित्रों का फरेब। पर जानती हो क्या हुआ।

पलका की आंखे भर आई। मेरी तरफ पल भर ताककर, वह फिर बोली, सुहास विवश था अपने भरे-पूरे परिवार के साथ। समाज को ठुकराना उसके लिए सहज न था। शब्दों आश्वासनों के जाल में वह मुझे फंसा न सका। बार-बार मुझे कुछ समय देने की बात कर रहा था। मैं अब नासमझ नहीं थी। उससे टूट कर हमेशा के लिए चली आई। विश्वास का सबसे मजबूत सहारा मैंने अपने ही दुखों के भार से तोड़ दिया था। पलका की आवाज कहीं गहरे में खो गई थी।

उसकी तंद्रा तोडऩे हुए मैनें पूछ ही लिया, तुम्हारे सूर्य रश्मि चेहेरे पर पड़े थे काले घाव लाल धब्बे किस अविश्वास की चोट है पलका। मैंने उसके अंतर्मन की नाजुक नस पर हाथ रख दिया पर उसने स्थिर भाव से कहा।

तेजाब से।

तेजाब, ओह यह किस भावशून्य मनुष्य के हदृय की परिचायक है।

सुनोगी, खुद मैंने अपना चेहता कलुषित किया। मेरे लिए कोई आशचर्य इतना बड़ा नहीं था, जितना आश्चर्य और दुख मुझे ये जानकर हुआ। संसार की कोई नारी ऐसा दुसाहस अपने साथ नहीं कर सकती। वह अपने साधारण रूप की रक्षा अपने नवजात शिशु की तरह करती है। शायद पलका भी इस स्थिति से गुजर रही है, तभी तो रात-रात भर जाग कर, जिन श्वेत कणों को आईने में ढूंढती हैं, भला वहां मिल करते हैं।

अपनी भर आई आंखों को बहने से रोकते हुए मैंने पूछा। कारण न बताओगी पलका। जरूर, नारी अपने जीवन में कुछ चीजों से प्राकृतिक रूप से प्यार करती है। अपने रूप से, अपने बच्चों से और तुम जैसी दोस्तों से भी।

मैंने विवाह नहीं किया पर अपना ममत्व यहां के नादान, अनपढ़ बच्चों को पढ़ा कर तृप्त कर लेती हूं। पिता की मृत्यु, चचेरे भाइयों का फरेब और सुहास की तथाकथित मजबूरी के बाद मेरा रूप, खुद में ही एकमात्र पूंजी मेरे पास थी। लोगों की नापाक नजरों से बचने में असमर्थ थी। मेरा रूप ही मेरे लिए बाधक बन रहा था। बेरोजगारों की भीड़ में मैं भी थी, पर नौकरी से ज्यादा मेरे रूप कीअहमियत थी। ये रास्ता मुझे स्वीकार नहीं था। एक दिन विवश हो, मैंने अपना चेहरा तेजाब से भिगो लिया। अगले दिन भयंकर बन गई थी। अस्पताल के बैड पर एक मैं ही अकेली थी और नर्सें मेरा ईलाज कर रही थी। घूरे नहीं जा रही थी। जब थोड़ा ठीक हुई तो अगली प्रात: ही वह शहर छोड़ दिया और यहां पहाड़ों में आ गई। कहने को पिछड़ा और दुर्गम क्षेत्र है पर नैसर्गिक सौंदर्य सब

कुछ भूला देता है। यहां मेरी मां का कभी मायका था। अब कोई नहीं रहा। लोग ईमानदार और कर्मठ हैं। उस पुराने बिखरे घर को रहने लायक बना दिया, जहां मेरी मां पैदा हुई थी, खेली और बड़ी हुई थी। मुझे योग्यता के बल पर सरकारी नौकरी मिल गई। यहां इतनी दूर कोई आने को तैयार नहीं था सो मैंने अपनी स्वीकृति दे दी। मैं यहां कभी नहीं आई थी। यहीं आकर पता चला कि ये मेरा ननिहाल है। मेरी मां का घर। मां मेरी बचपन में ही गुजर गई थी पर पिता ने भी दूसरा विवाह नहीं किया और आज देखो मेरी मां का आर्शिवाद मेरे सिर पर है। अनायास ही सब कुछ मिल गया मुझे।

जानती हो, जब ठंडी हवा मेरे शरीर से टकराती है, मुझे बहुत सुकून मिलता है। अपने कुरूप होने का अहसास ही नहीं होता। सब लोग आदर करते हैं। यहां गुरू-शिष्य की पुरातन आदरभाव का पालन होता है। गुरू-शिष्य के पवित्र रिश्ता भीतर तक महसूस होता है। मैं आहलादित हो जाती हूं। मैंने खुद को यहां की परिस्थियों में ढाल लिया है। इसके बावजूद भी दोस्त कभी-कभी मैं बहुत बेचैन हो उठती हीं। खुद को बदलकर भी बदल नहीं पाती। असहाय, कमजोर हो जाती हूं। डर जाती हूं। एकाएक सब पर से विश्वास उठ जाता है, कितनी भयंकर स्थिति हो जाती है। कोई बाहर से आवाज भी लगाता है, तो कहीं छिप जाती हूं। काश तुम मेरी इस हालत अंदाजा लगा सको।

पलका का स्वर असंयत हो गया था। मानसिक संघर्ष, उसे चेहरे पर झलक रहा था और उसकी आंखों में अंजाना भय तैरने लगा था। फिर भी मुझे पूरे विश्वास है पलका के रिश्तेदार लौटे न लौटे, सुहास आए न आए पर एक दिन पलका का आत्मविश्वास जरूर लौट आएगा और यही नादान, अजनबी परी निर्दोष पहाड़ी लोग अपने व्यवहार से अवश्य पलका की आत्मविश्वास को इसके शरीर से जोड़ देंगे।

कहा मैंने, माना पलका तुम्हारा शरीर, तुम्हार चेहरा कुरूप हो गया है पर रूप ही जीवन की निधि नहीं है। देखना एक दिन ये हरी-भरी पहाडिय़ां भी तुमसे छोटी हो जाएगी। तुम्हारे कर्मों की, गुणों और तुम्हारे मन की महक इन पहाडिय़ों को भी पार कर जाएगी। तब संसार भी तुम्हें भली प्रकार से जानेगा। पर यह स्वर्णिम भविष्य तभी संभव है, जब तुम्हारे भीतर, आत्मविश्वास पैदा होगा। अब न सुहास लौटेगा, न तुम्हारा रूप। जिंदगी में बहुत कुछ होता है। ये ही जिंदगी के मूल में नहीं है। तुम्हें तुम्हारा आत्मविश्वास ही तुम्हें सहारा देगा, यहीं तुम्हें सबल और समर्थ बनाएगा। हर वस्तु हर घटना अपने समय पर ही होती है। तुम्हें अब जो ज्ञान ज्योति प्राप्त है, वह शहर की गलियों में दुलर्भ थी। अब नारी अबला और असमर्थ नहीं रही।

पलका जो नारी हर बात को भाग्य की बिडंबना मान बैठी रहे या पुरूष द्वारा दिए गया अलंकार सुकुमारी, भोली, अबला या मातृत्व वहन करने वाली नारी मात्र बनी रहे। आज पुरूष से कम दर्जा प्राप्त नहीं। वैसे भी प्राकृतिक रूप से उसका दर्जा बड़ा है। इसके लिए तुम्हें आत्महीनता या विगत से निकलना होगा तभी आत्मनिर्भरता और विश्वास पैदा होते हैं।

आओ पलका , मान लो मैं तुम्हारी आत्मा हूं और तुम मेरा शरीर हो। हमारा शरीर आत्मा के बिना मृत है। मैं समा जाऊं तो संपूर्ण व्यक्तित्व बन जाओ। मेरा हाथ थामो पलका। मेरा हाथ आगे बढ़ा और किसी सख्त चीज से टकराया। मैं चौंकी मानो गहरी नींद से जागी हूं। देखा सामने आदमकद आईना। मैं और मेरा प्रतिबिंब झिलमिला रहा है। मुझे पलका कुरूप न लग कर वैसी ही सौंदर्यमयी रूपसी लगी, जिसमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की महक थी।

……..000000000……..

श्वास-विश्वास

कई बार सोचा था कुछ लिखूं, कोई कहानी, कोई कविता, कोई लेख या एहसासों के पलों का हिसाब-किताब। पर लिख पाना क्या इतना सरल होता है, जो तन-मन को झंकृत कर दें, दिलो-दिमाग को उकसा दें या फिर यादों को ही शब्दों में बांध दें।

जब मन और दिमाग एकसार होकर शब्द भावनाओं विचारों में प्रवाहित होने लगते हैं , तभी कुछ सार्थक लिखा भी जाता है। कौन था वह- क्या लगता था वह मेरा। मैं कभी भी उसका परिचय न पा सकी। कभी भी उसके बारे में जान नहीं पाई पर वह हमेशा मेरे साथ ही रहा। मेरे करीब और इतने करीब की-कभी लगाता हमारा अस्तित्व एक ही है।

उससे मेरी भेंट फोन पर हुई थी। रांग कॉल थी। वह तब मेरे लिए। उसकी धीर-गंभीर और गहरी आवाज से बातें करने का लोभ मैं संवरण न कर पाई थी।

हैलो, मन कैसी हो ?

आपने किससे बात करनी है, मेरे स्वर में उलझन थी।

आपसे ही बात करनी है,

बस अपना मित्र समझो, स्वर में दृढ़ता थी

नाम तो होगा आपका कुछ, मुझे झुंझलाहट हो आई।

डार्लिंग नाम में क्या रखा है, तुम्हारा नाम तो मन ही है ना।

हां है तो, मेरी समझ में कुछ न आ रहा था।

दिमाग कई-किसी को याद कर रहा था। पर ऐसा मधुर-मीठा स्वर तो किसी का नहीं था, फिर कौन है यह।

देखिए आपको शायद गलतफहमी हुई है, नाम तो मेरा सही है पर...।

उनसे मेरी बात फौरन काट दी। मेरे बारे में, मेरे, घर, पड़ोस, कार्य क्षेत्र, यहां तक कि पिछले दिनों की मेरी दिनचर्या सब उसे मालूम था। अब हकबकाने की बारी मेरी थी।

यदि आप आपना परिचय दें तो मैं आपसे मिलना चाहूंगी। हार कर मैंने उसका परिचय जानना चाहा, लेकिन उसके मन में न जाने क्या था कि मेरे लाख चाहने पर भी उसने न तो फोन नंबर दिया और न ही अपना कुछ अता-पता। फिर फोन करने का वायदा कर, उसने फोन काट दिया।

उसने क्या कहा- क्यों कहा कि जगह मेरे जहन में एक ही बात थी कि उसकी आवाज कितनी गहरी, मधुर ,शांत और दिल को छू लेने वाली थी। यही आवाज उसका परिचय थी। मैं रोज फोन का इंतजार करती थी,कब मैं दोबारा वह आवाज सुनूं।

उस दिन मैं काफी परेशान थी। समझ नहीं पा रही थी। इन उलझनों से कैसे निकलूं। शाम को मैं इन्ही उलझनों, परेशानियों और उदासियों में खोई थी कि फोन बज उठा।

कैसी हो मन, वही आवाज वैसी ही शांत और मधुर।

मैं ठीक हूं पर तुम कैसी हो, मेरे उदास मन को राहत मिली।

तुम ठीक कहां हो, उस दिन जब विश्वास तुम्हें अनदेखा कर,कतरा कर निकल गया था, तभी से तो तुम परेशान हो।

मैं यकायक जमीं पर आ गिरी। जिस बात को मैंने सात तालों में छिपा कर रखा था, उसे ये कैसे जान गया।

क्यों हैरान हो ना, पर क्या करूं तुम्हें मैं परेशान होते नहीं देख सकता। इसलिए फोन किया। देखो मन, बिल्कुल परेशान मत होना। वह कभी भी तुम्हारे योग्य नहीं रहा, मैं जानता हूं। प्लीज, तुम एक बार मुझेसे मिल तो लो। मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है। मेरे स्वर में दयनीयता थी। पर वह न जाने किस मिट्टी का बना था, जो मेरी परेशानियां तो बांटना चाहता था पर, मुझसे मिलना नहीं।

कारण पूछने पर हंस पड़ता और उसकी हंसी की खूबसूरती में डूबी मैं कुछ पूछ नहीं पाती और वह फोन काट देता।

फिर तो यह अक्सर होने लगा। वह मेरी उलझनों पेरशानियों को पता नहीं कैसे जान लेता। उसके तर्कों-वितर्कों को भेद पाना मेरे लिए मुनासिब नहीं हो पाता। शुरू में सोचा एक्सचेंज से फोन नंबर का पता करूं कौन है? पर फिर सोचा क्यों। वह मेरी जिंदगी का ऐसा हिस्सा बन गया था कि उसकी इच्छा के बिना कुछ करने की सोच भी न पाती थी। वह अपरिचित, अंजान, अजनबी ही रहना चाहता है तो यही सही। जो मेरे दुख-दर्द, परेशानियों में तो शरीक होता पर जब मैं खुश होती, संतुष्ट होती तो उसे मुझसे कोई वास्ता नहीं होता। कुछ भी जानना चाहती तो फोन काट देता। फिर मैंने सोच लिया उससे संपर्क बनाए रखना है तो अपनी ही कहे जाओ- प्रश्न किया तो बात ही खत्म। मेरी शिकायतें, मेरे व्यंग्य यहां तक कि मेरे क्रोध की भी उसे परवाह नहीं थी।

मन जानती हो, कितने माह हो गए हमारी दोस्ती को- पर तुम हो कि मेरे परिचय पर ही अटक जाती हो। चलो डियर मेरा कोई परिचय नहीं है। है तो बस इतना कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं। मैं तुमसे अलग कहां हूं। यकीन रखों , जिस दिन तुम्हें लगेगा मैं तुम्हारे लिए जरूरी नहीं हूं। मैं स्वयं तुम्हारी जिंदगी से चला जाऊंगा।

इससे पहले की उसकी बात पूरी होती मैं सिसक पड़ी। फिर मैंने खुद ही उसका नाम रख दिया- मनन। अब मैं तुम्हारे शब्दों, तुम्हारी आवाज के बिना नहीं रह पाउंगी। मेरी किसी बात से तुम्हें दुख पहुंचा हो तो क्षमा कर देना। उस दिन मैं फिर बहुत ज्यादा उदास थी। इस दुनियां में मेरा था ही कौन? मां-बाप रहे नहीं। अब तो दोस्त भी न था कोई। विश्वास के दिए घावों को सहलाती । मैं अपना रास्ता खुद बना रही थी। अपनी मंजिल पता नहीं थी और अब जिंदगी ने किस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। मैं नहीं जानती।

वैसे मैं शांत थी। सुख-सुविधा के नाम पर जो कुछ चाहिए, मुझे प्राप्त था। मेरे चारों तरफ का आकाश निश्चिल था, हवा में खुशबू और जमीन समतल थी। जिंदगी से शिकायत भी नहीं थी। पर पता नहीं क्यों कहीं से बहुत घायल और आहत थी। मेरे घाव जिन्हें न बता पाती थी और न ही दिखा पाती थी। सिर्फ महसूस कर रह जाती हूं। वे ही घाव जब रिसने लगे, दर्द से मैं कराहने लगती, तभी मनन का फोन आ जाता। दिन बीते, माह बीते और वर्ष भी बीते-कितने? समय का हिसाब कौन रख पाया, जो मैं रख पाती। अब तो नजर भी धुंधला गई, आवाज लड़खड़ाने लगी और यादाश्त भी कभी-कभार धोखा दे जाती है। नहीं भूलती तो मनन और उसकी आवाज।

मन अब हम शीघ्र ही मिलेंगे। अब तुम्हें वास्तव में मेरी जरूरत है। अब हमेशा साथ रहेंगे। हमारे मरते दम तक। एक दिन दिन प्रात: ही उसका फोन आया और कट गया। बिना मेरी प्रतिक्रिया जाने। कई-कई दिन मैं उत्साहित रही। शायद वह शीघ्र आज ही हो। इसी उत्साह में, मैं चैतन्य होने लगी। पर कई दिन गुजर गए और उसका फोन भी नहीं आया।

अरे ये तो देखा-भाला चेहरा है। चेहरा और पास आया तो पहचाना। ये तो विश्वास है। तुम तुम्हारी कैसे इतनी हिम्मत हुई आने की। मन पहले मेरी बात तो सुनो, समझो फिर जो बोलोगी मान जाऊंगा।

मेरे लाख आग्रह पर भी तुम न मानी।

जिन बहनों और उनके बच्चों के लिए तुमने अपनी जिंदगी की यह हालात बना दी, आज वो कहां है। हां मैं हमेशा साये की तरह तुम्हारे साथ ही रहा। तुमने ही मुझे सदैव ठुकराया मन।

पर विश्वास तुम्हारी पत्नी बच्चे? विश्वास हंसा, तुम मुझसे शादी कर लेती तब होते न पत्नी और बच्चे। मैंने सदैव तुम्ही से प्यार किया मन। अब भी ठुकराओगी तो भी मरते दम तक तुम्हें चाहूंगा।

और वह फोन। हंसा विश्वास फिर उसी आवाज बोला। तुम जैसी भी हो हमेशा वैसी ही मेरी रहोगी। शरीर का क्या संवर जाएगा। पर जिद्दी, गर्विली और थोड़ा गुस्सैल मन तो वैसी ही रहेगी न।

अविश्वसीय पर राहत भरी नजरों से, उसे ताकती हुई मन यह बोल पाई- चलो विश्वास मैंने भी क्या तैयार होना ऐसी ही स्वीकार करो तो चलो।

……..000000000……..

याद आएंगे वो पल.....

विशेष ने घर में एकाएक घोषणा कर दी थी कि अब वह विदेश जाना चाहता है। कालेज का टॉपर, खेलों का बादशाह और मॉडलिंग का सरताज। पर उसके सपने बहुत बड़े थे। वह ऐसा कुछ करना चाहता था,जो उस पिछड़े इलाके के लोग सोच भी नहीं सकते थे। क्योंकि फसल भरपूर होती थी। सेब के छोटे-मोटे बगीचे भी थे पर खर्च नगण्य थे। पैसे होते ही थे। अपने इकलौते पुत्र को वे खुश देखना चाहते थे पर विवाह के बाद पिता ने स्पष्ट, सशर्त स्वीकृति दी। विशेष किसी बंधन बंधने को तैयार नहीं था तो मां ने पिता को मना ही लिया कि अभी सगाई कर लेते हैं। शादी अगली बार आएगा तब हो जाएगी। विशेष में समझ के साथ धैर्य भी था। वह ऊंची-ऊंची ईमारतें, मॉल और खूबसूरत अंग्रेज युवतियों से दोस्ती करने में नहीं उलझा। वह दिन में यूनिवर्सिटी और शाम को कोई भी जॉब कर लेता पर उसे पसंद आई लाइब्रेरी में पार्ट टाइम जॉब। किताबें पढ़ने के साथ ही वो काम भी करता। अभी माह ही व्यतीत हुआ था कि उसकी भेंट अनायास ही ऐनी से हुई। उसने कई बार उसे लाइब्रेरी में चुपचाप पढ़ते और जाते हुए देखा। वो न किसी से बात करती थी, न किसी से कोई मतलब रखती थी।

एक पुस्तक की खोज से ही विशेष ने उसकी सुमधुर आवाज सुनी थी। इतनी महीन पर आत्मविश्वासी आवाज से वो प्रभावित हो उठा। कभी कभार हॉय-हैलो करते हुए कुछ दिनों में दोस्ती हो गई, उन्हें इसका आभास भी नहीं हुआ। एक बार ऐनी उसे अपने फ्लैट पर ले गई थी। अपने माता-पिता और छोटे भाई भी उसे मिलवाया। जब उसने अपना कमरा दिखाया तो आवाक रह जाने की बारी विशेष की थी। यहां तो पूरा इंडिया बसा था। कश्मीर से कन्या कुमारी

तक।

विशेष मुझे इंडिया बहुत पसंद है, कभी मौका मिला तो फिर जाना जाहूंगी। अब विशेष तो कायल हो गया था, वो भी बहुत खुश थी, उसके जन्मदिन पर विशेष ने जब उसे डायमंड जड़ी अंगूठी पहनाई तो वो कुछ भी न पूछ सकी पर उसकी आंख के आंसू सब बयां कर रहे थे। 6 माह बीत चुके थे एक दिन खबर आई मां बहुत बीमार है। उसे देखना भर चाहती है। कुछ निर्णय ले। ऐनी को भरोसा दिलाकर वो वापिस इंडिया आ गया। मां पहले से बेहतर थी, पर कमजोरी के कारण उठना अभी कठिन था।

कुछ दिनों बाद ही दीपावली थी। त्यौहार में सभी व्यस्त थे। शाम को नाच-गाने का प्रोग्राम भी था। विशेष का ध्यान उस लड़की की तरफ गया ही नहीं, जो सुबह से शाम तक घर के काम किए जा रही थी। वो शायद भूल ही गया था कि कोई है जो पल-पल उसका इंतजार करती है। उसके लिए व्रत रखती है और उसके बूढ़े हो चले माता-पिता की सेवा में व्यस्त रहती है। वो आंख तक उठाकर विशेष को नहीं देखती। इतनी संस्कारी पुत्रवधु पाकर मां-बाप पुलकित थे।

ऐनी ने सोचा क्यों विशेष को सप्राइज दिया जाए, वो खुश हो जाएगा। ऐनी ने उसके परिवार के लिए मंहगे उपहार लिए और इंडिया आ गई। उसके सपनों का भारत। वह विवाह के बाद कभी भारत से बाहर नहीं जाएगी। खूब घूमेगी और इंडिया की आत्मा में लीन हो जाएगी। कोई देखा सपना, कोई महसूस किया अहसास, अनायास ही पूरा हो ते आत्मा तक हर्षित हो जाती है। इंडिया जाने की बात पर वह रोमांचित हो उठी। उसके रोंगटे खड़े हो गए। जब दिल्ली के एयरपोर्ट पर उतरी तो कुछ पल आंखे बंद कर अनुभव किया वह इंडिया की जमीन पर है।

विशेष ने उसे अपने घर परिवार के बारे में सब कुछ बताया हुआ था। सो टैक्सी ले वह सीधे उसके गांव, जो दिल्ली दूर शिमला में था, पहुंची। दूर से ही एक घर ही हलचल से उसे लगा, यही हो सकता है विशेष का और उसका घर। टैक्सी ड्राइवर भला मनुष्य था। उसने उसका सामान उठा लिया था। चलिए, आपको छोड़ देता हूं। दीपावली की जगमगाहट में आधुनिक गांव सपनों सा लग रहा था। उसके पहुंचते ही, सब लोग काम छोड़ उसे ही देखने लगी थे। कौन हो तुम, एक ने पूछा। मैं विशेष की दोस्त। कहां है विशेष। उसकी शानदान हिंदी सुन हैरानी भी हुई और कहीं खुशी भी थी अंग्रेजी मैम देख सभी खुश हुए। कुछ उलझन में पड़े और कुछ उसके बारे में जानने के बारे उत्सुक हुए। तभी एक युवती ने उसके पास आकर उसका सामान भीतर रखा और पानी ले आई। विशेष पहुंचा तो उसे लगा ऐनी को ऐसे नहीं आना चाहिए था पर फिर नॉर्मल हो, उसके सत्कार में लग गया।

आराम कर जब अलगी सुबह ऐनी उठी तो वही प्यारी सी युवती उसे पूछ रही थी कि वो नाश्ते में क्या पसंद करती है। विशेष, यह कौन है? तुम्हारी रिश्तेदार है क्या? तुमने बताया ही नहीं वरना इसके लिए कोई गिफ्ट तो लाती। तभी पास बैठी गांव की महिला बोल उठी। अरे विशेष ने बताया नहीं यह लक्ष्मी है साक्षात। लक्ष्मी, विशेष की होने वाली पत्नी और इस घर की पुत्रवधु। विशेष तो बाहर चला गया अब इसके मां-बाप को यही देखती है। बहुत ही अच्छी और संस्कारी है। ऐनी ने सुना, विशेष ने सुना। ऐनी विशेष के पास बैठी थी। उठकर उस महिला के पास जा बैठी। और बताइए ना। इस खूबसूरत लक्ष्मी के बारे में सब जानना चाहती हूं। उसने आंख तक उठाकर विशेष को नहीं देखा। वह नॉर्मल रही। उसने न शिकायत की, न शिकवा कोई पर फिर विशेष से अलग वो लक्ष्मी से ही जुड़ी रही। अगले ही दिन उसकी फ्लाइट थी। विशेष की टिकट वो फाड़ चुकी थी।

विशेष के पास कोई शब्द नहीं थे। न उनके अर्थ थे। वो तो खुद लक्ष्मी को भूल गया था। उसे लगा कोई उसके सामने खड़ा है। गर्दन उठाकर देखा तो वह ऐनी थी, मुस्कुराती हुई। एक पैकेट उसे पकड़ाकर बोली। विशेष मेरी फ्लाइट है, मुझे वापिस जाना है। जब तुम्हारा विवाह होगा तो यह भेंट अपनी तरफ से अपनी पत्नी को दे देना। मैं उसके लिए कुछ भी न ला पाई थी। पर अभी मत खोलना, तभी खोलना जब पत्नी भी साथ होगी।

अब पिता कहां मानने वाले थे, विवाह बस अभी करना होगा। ऐनी के आने से ही वह सबसे ज्यादा उद्वेलित थे। विवाह के बाद जब विशेष और लक्ष्मी बैठे थे। विशेष ने अनमनेपन से वो पैकेट लक्ष्मी को ही पकड़ा दिया। पति से पहला उपहार पाकर लक्ष्मी थरथरा उठी। कांपते हाथों से पैकेट खोला तो एक बेहद खूबसूरत रिंग थी। उसने विशेष के आगे रख दी। पलभर के लिए विशेष किसी कोहरे में डूब गया। फिर उसने कोहरे को पार कर रिंग लक्ष्मी को पहना दी। अरे इसे तो बिल्कुल सही आई। ऐनी के हाथों में तंग थी।

……..000000000……..

मालती

जिंदगी उतनी सरल नहीं होती,जितनी दिखती है। अक्सर जब समतल मार्ग पर चल रहे होते हैं। सामने पहाड़ आ खड़े होते हैं। जब सब कुछ सुलझा हुआ लगता है। अचानक कहीं से कठिनाई अक्सर घेर लेती है, जब कभी जिंदगी बिना उलझन के लगती है।

यही हुआ था मालती के साथ भी। जब सुंदरता के साथ बुद्धि का मेल होता है तो अपने आप में अद्वितीय हो जाता है। मालती का बचपन अपने पूर्ण रूप में बीता। मालती बढ़ रही थी, उम्र की सीढ़ियां चढ़ रही थी। जब कॉलेज से निकली तो वह भविष्य के बारे में सोच पाती,रिश्तों का लाइन लगी थी। यह उसका ही आत्मविश्वास था कि जब तक उसने अपनी शिक्षा पूर्ण कर कॉलेज में लैक्चरर की नौकरी नहीं पा ली,तब तक किसी की नहीं सुनी। वह अपने लक्ष्य को सामने रखकर शिक्षा ग्रहण कर रही थी। सब कुछ सामान्य चल रहा था।

कॉलेज में ही उसकी भेंट मधुर से हुई थी। वह उसी कॉलेज में मालती से सीनियर था। एक दिन वह जब ड्यूटी से घर पहुंची तो देखा कि कुछ लोग भीतर बैठे हैं। छोटी बहन दौड़ती हुई आई। दीदी आपका रिश्ता आया है। अच्छे घर का लडक़ा है, सरकारी नौकरी लगी है, पर थोड़ा तुतलाता है। अभिनेत्री रेखा की नकल करते हुए उसे बताने लगी। तभी उसकी नजर मधुर पर पड़ी और वह सब कुछ समझ गई।

वह ख्यालों में थी इधर, वकील पूछ रहा था- श्रीमती पर जोर देते हुए बोला- श्रीमती मालती शर्मा जी आप कैसे कह सकती हैं कि शादी के दो वर्ष तीन

माह बाद भी आप कुंआरी है। आपके पति और आप क्या एक ही कमरे में एक ही बैड पर नहीं सोते रहे।

मालती का मन किया कि इस एक थप्पड़ तो इस वकील के मुंह पर जड़ दूं। बड़ी कठिनाई से खुद को संभाला और बोल पड़ी,जी। फिर आप कैसे कह सकती है कि आपके पति नामर्द है... नहीं वो। सोना, साथ रहना अलग बात है।

वकील ने जोर देकर कहा, बस जितना पूछूं हां-ना में जवाब दीजिए?

माननीय अदालत का समय बर्बाद मत कीजिए।

श्रीमती मालती शर्मा जी, ये भी तो हो सकता है कि आप किसी और से इश्क लड़ा रही हो और इल्जाम पति पर लगाकर छुटकारा पाना चाहती हो।

क्यों मैं क्यों इल्जाम गलत लगाऊंगी। आप भी बिनाप्रमाण के मुझे किसी और से इश्क होने बारे नहीं कह सकते, वह फूटने लगी। तभी मालती का वकील बोल पड़ा, दोनों की मेडिकल रिपोर्ट को भी देख लो मेरे काबिल दोस्त। तभी जज ने ब्रेक का संकेत दिया।

इस दौरान मालती को याद आया। जब उसके विवाह की बात चली थी, तो उसने भी कोई विरोध नहीं किया। पिता सरकारी विभाग में क्लर्क थे और अपनी बड़ी बेटी की शादी धूमधाम से की। क्या भाव होते हैं पिता के। पुरूष हैं तो क्या भावुक नहीं हो सकते, रो नहीं सकते और मालती तो अपने पिता के सबसे ज्यादा करीब थी। अपने जिगर के टुकड़े को विदा करना कठिन होता है, बहुत असहनीय। दोनों परिवार पहले से एक दूसरे को जानते थे और रिश्तेदारी में ही विवाह हो रहा था, पिता के लिए यह पल जहां भावुक होने वाला था, वहीं राहत भरा भी। वह अपनी बेटी का हाथ, जिस युवक के हाथ में दे रहा है, वह कोई अजनबी नहीं था।

विवाह के बाद सब कुछ सामान्य नहीं था। शादी को एक माह होने को आया, लेकिन मधुर कभी थकने के बहाने, कभी नींद और कभी गुस्सा दिखाकर सो जाता। मालती को तो कोई शिकायत नहीं थी। समय अपनी गति से चल रहा था। मालती को कभी-कभी अजीब तो लगता, जब वह अपनी सेहलियों से किस्से सुनती। वह सोचती मधुर धैर्यवान और महान है। शायद वह उसे मानसिक रूप से तैयार होने के लिए समय दे रहा हो या उसकी सहमति की प्रतीक्षा कर रहा हो। घर में दोनों का व्यवहार सामान्य था, किसी को भी इस बात का भान नहीं हुआ कि पति-पत्नी के बीच सबकुछ सामान्य नहीं चल रहा।

जब मां ने बच्चे की बात शुरू की तो उसे लगने लगा आखिर बात क्या है। सास-ससुर तो नहीं थे, चाचा-चाची ने पाला-पोसा था। इसी तरह अपने में ही गुमसुम सा रहता था मधुर, लेकिन पढ़ाई में हमेशा अव्वल आता था। आखिर एक दिन मालती ने कह दिया। मधुर मां और जानने वाले पूछ रहे थे... क्या? मधुर की आंखों में आशंका थी। यही कि बच्चे के बारे में। वह एकाएक चुप हो गई।

आज मधुर अपने ही मूड में था। उसने बांह पकड़ कर मालती को अपने साथ ही सोफे पर बिठा दिया। दोनों मौन थे। मालती सोच रही थी, आज इतने पास वह पहली बार बैठी और मधुर सोच रहाथा कि बात कैसे और कहां से शुरू करें।

आखिर मधुर धीमे-धीमे रूक-रूक कर बोलने लगा। देखो मालती तुम मुझे शुरू से ही बहुत पसंद थी। मेरे सपनों की राजकुमारी की तरह। मेरी चाहत में तुम ही प्रथम और अंतिम हो। मैं स्वार्थी हो गया और परिवार का भी दबाव था कि मैं शादी करूं। मैं विवाह ही नहीं करना चाहता था, लेकिन तुम्हें देखकर मैंने सबकुछ पीछे छोड़ दिया। इस दुनियां में, मैं था और तुम थी। पर ये न सोचा

कब तक। वह रूका, मालती आंखे फाड़े बात समझने की कोशिश कर रही थी। उसे कुछ नहीं पता चल रहा था कि मानो शब्दों के रूप में एक गाज आ गिरी। मैं इस काबिल नहीं हूं कि मैं तुम्हें वैवाहिक सुख दे संकू। विवाह के उपरांत मैंने चिकित्सीय जांच करवाई है। दवाइयां भी ले रहा हूं, मुझे थोड़ा वक्त दो सामान्य होने में सब कुछ ठीक हो जाएगा। वो जितना समय दे सकती थी दिया, लेकिन रोज-रोज की मानसिक प्रताडऩा ने मालती को भीतर तक झकझोर कर रख दिया था। वह अब उस घर में ज्यादा समय नहीं रूक सकती थी। वह अपने पिता के घर आ गई थी।

जब तक मालती के मन का ज्वार-भाटा कम होता, तब तक अदालती आवज पड़ गई थी। फिर वह कटघरे में थी। मी लार्ड, यह श्रीमती मालती किसी न किसी बहाने पति से छुटकारा पाना चाहती है, इसलिए झूठी मेडिकल रिपोर्ट पेश की गई। अपने चरित्र पर पर्दा डालने के लिए अपने पति पर आरोप लगा रही है।

मालती से अदालत में अश्लीलता की हद तक प्रश्न पूछे जाते। पिता ने तो आना ही छोड़ दिया, वह तो बाहर ही बैठे इंतजार करते। पहले छोटी बहन को साथ लाती थी, अब अकेले ही आने लगी। कोर्ट में मधुर भी होता, लेकिन उसने एक बार भी उससे नजर नहीं मिलाई। आखिर कब तक। आखिर वह क्या करती। मधुर ने अपने ईलाज के नाम पर मालती के पिता का लाखों रुपए खर्च करवा डाला। जब कोई फर्क नहीं पड़ा और रोज की मालती को होने वाली मानसिक पीड़ा से बेटी को निजात दिलवाने के लिए कोर्ट में तालाक की अर्जी दी थी। तालाक लेना भी तो इतना आसान नहीं , मधुर की जगह मालती पर ही वार होने लगे।

दोनों पक्षों की दलीलें सुनकर जिला अदालत ने अब अपना फैसला सुनाना था। मालती का हृदय बैठा जा रहा था, कहीं फिर से उस नामर्द के साथ न रहना

पड़े, लेकिन जज साहब का फैसला मालती के पक्ष में आया। मधुर के वकील इस फैसले को हाईकोर्ट में चैलेंज करना चाहता था।

इसी दौरान मालती के वकील ने सलाह दी कि आप जब तक मधुर का वकील हाईकोर्ट पहुंचे तब तक अपनी बेटी की शादी किसी दूसरे लडक़े से करवा दो। तभी मालती के पिता ने एक युवक को खोज लिया, जो बचपन में उसका सहपाठी था और उनके घर उसका आना-जाना था। वह इस सारे मामले से भी परिचित था कि मालती के साथ क्या हो रहा है। उसने शादी के लिए हां कर दी। आनन-फानन में दोनों ही परिवार के लोग, उस शहर से दूर, दूसरे शहर में गए, जहां युवक के पिता नौकरी करते थे। विवाह की सारी तैयारियां हो चुकी थी। दोनों पक्षों के करीब 20 लोग इस विवाह में शामिल हुए। आज बेटी को विदा करते हुए सभी हंस रहे थे, प्रफुल्लित थे।

……..000000000……..

जिन रिश्तों के नाम नहीं होते

मैडम जी, अभी बहुत व्यस्त हूं- आप जानती हो, काम ही ऐसा है। इतने लगों को अटेंड करना होता है। पानी पाने की भी फुर्सत नहीं, प्लीज आपसे बाद में बात करता हूं। समझने की कोशिश कीजिए।

ये बात, सुबह से अब शाम के सात बजने वाले हैं और पांच बार दोहरा चुका है।।तो क्या पूरे दिन इतना व्यस्त रहा, फिर उसके सामने रीरियाता क्यों है। उसको ये अचानक क्या हो गया, कभी फोन नहीं उठाता। कभी फोन पर आवाजें सुना देता कि बहुत लोग आए हैं और कभी झुंझला जाता। आखिर पिछले दो वर्ष से दोनों दोस्त हैं। हमेशा से दिनभर में एक-दो बार तो बात कर लिया करते थे। ऐसा नहीं कि अब रिश्तों की कद्र है। ये जो दोस्ती प्यार-प्रेम का रिश्ता है। इसका रूप बिल्कुल ही बदल गया है। कोई भी किसी से कहीं भी बिना उम्र, हैसियत और सूरत के दोस्ती कर सकता है। ज्यादातर इसमें आपसी समझदारी, भावनाओं का प्रवाह कम है और भीतरी स्वार्थ, लालच और कभी भी दूसरे को झटक देने का अहसास दोनों को ही रहता है। किसी की एक तरफ से ऐसा हो तो इस बेनाम, स्वार्थी रिश्ते से निकलने की गुंजाइश बन जाती है पर दूसरा साथी ईमानदारी से रिश्ता निभा रहा हो तो उसके लिए मानसिक रूप से संभलने में उतना ही ज्यादा समय लग जाता है।

यहीं तो हुआ दोनों के बीच में। महानगरी में, आधुनिकता की आड़ में या लीव-इन रिलेशन में ऐसे रिश्तों की कोई परवाह नहीं करता। इसलिए युवती पात्रों के नाम न रखकर, केवल पुरूष और स्त्री ही कहा जाए तो बेहतर रहेगा क्योंकि पुरूष से काफी कम उम्र थी उसकी।

बालकनी में खड़े- खड़े उस लडक़ी को काफी देर हो गई पर सोच थी कि पिछली बातों का सिरा जो पकड़ा तो खत्म ही नहीं हो रहा था। घड़ी में समय देखा भलामानुष अभी तक नहीं आया था। रात के दस बजने वाले थे। सोचा फोन कर पूछूं पर दिनभर की घटनाएं याद हो आई। लडक़ी ने फोन टेबल पर रख दिया। बिना कुछ बनाएं खाए सोने चली गई। वह समझ गई कि उसका पुरूष अब किसी और का हो गया।

बेड पर लेटे भी उसे नींद नहीं आ रही थी। उसे दुख से ज्यादा हैरानी हो रही थी कि औरत इतनी आसानी से मानसिक रूप से अलग नहीं होती ,जितनी आसानी से पुरूष।

दो वर्ष, हां-हां इसी जुलाई को 2 वर्ष पूरे हो गए थे, उस दिन पुरूष ने पूरा दिन उसी को तो दिया था। साथ घूमे, पिक्चर देखी, डीनर किया और रात तक लौटे थे। सब कुछ तो सही लग रहा था। यहां तक कि अपने भीतर के डर को उसने खुद निकाल दिया था। उसे उम्मीद थी शीघ्र ही वे विवाह कर लेंगे।

दो वर्ष पहले की तो बात है, जब पुरूष ने युवती का जीना मुहाल कर रखा था। हर जगह, हर मौके पर वह युवती से टकरा जाता। थक हार कर युवती ने एक दिन उसे रेस्टोरेंट में बात करने लिए बुला ही लिया था।

-आप क्या चाहते हो

-क्यों परेशान करते हो मुझे

-आपसे दोस्ती करना चाहता हूं

-इसमें परेशानी किस बात की।

-पर मुझे कतई पसंद नही

-क्या मैं या मेरी दोस्ती

-दोस्ती करना किसी पुरूष से

-तो इश्क कर लेते हैं।

-हंसते हुए पुरूष का चेहरा हंसी से भर उठा

कहा न मुझे पसंद नहीं। नारी का स्वर उकताहट भरा था।

दोनों ही बिना कुछ खाए-पीए ही रेस्तरां से निकल कर अपने-अपने रास्ते चल दिए। पुरूष ने हार नहीं मानी, वह अक्सर युवती से कहीं भी टकरा जाता। बिना बोले, ंबिना देखे, बिना मुड़े और एक दिन दोनों छोटे शहर के बड़े पार्क में बैठे बतिया रहे थे। हंस रहे थे और दुनियां से बेदखल हुए जा रहे थे।ं

अगले सप्ताह ही दोनों ने साथ रहना शुरू कर दिया। वह फिर यथार्थ में लौट आई।

क्या इंसान भी सामान की तरह हैं या कपड़ों की तरह, अगर अमीर हुए तो कार की तरह, महंगी चीजों की तरह कि अब बोर हो गए। उक्ता गए, क्यों न चेंज किया जाए। ये चीजें निकाल कर नई ले ली जाए। या फिर क्या नारी इंसान नहीं है,उसकी मर्जी के बिना ,जब चाहो साथ निभाओ,जब चाहो दूसरी ले आओ।

उसे फ्लैट खाली करने का नोटिस आ गया था। सही भी था, जब वह साथ नहीं रहना चाहता तो तो वह कौन सी ब्याहिता थी , जो कानून का सहारा ले पाती। अगले दिन अपना सामाने लेकर वहअपनी दोस्त के पास चली गई।

पुरूष इस बार ब्याह कर लाया था। बहुत हुआ उसने सोचा अब जिंदगी सुकून से जीनी चाहिए। उम्र बढ़ती जा रही है। स्थायित्व भी जरूरी है।

पुरूष के हिसाब से जिंदगी ठीक-ठाक चल रही थी। वह खुश भी था- ये लड़कियां कितने नखरे दिखाती है। कई बार तो उसे ही चाय बनानी पड़ती।

अब बीबी आराम से सब कार्य खुद कर देती है, उसे तो मौका ही नहीं मिलता। पानी का गिलास तक खुद ले कर पीने का। दिन सप्ताह माह बीते अब सुगबुगाहट भी शुरू होने लगी परिवार में बच्चा तो होना ही चाहिए। दरियादिली दिखाते हुए, उसकी मां बोलने लगी थी। बेटा भले ही बेटी हो जो पर अब तो बच्चा होना चाहिए।

मंदिर, गुरूद्वारे, मस्जिदें यहां तक कि कई डाक्टरों को भी दिखा दिया। कोई संभावना नहीं थी। उस दिन भी वह एक डाक्टर से रिपोर्ट लेने जा रहा था, जब उसे एक लडक़ी दिखाई दी। भीड़ में कभी -दिखती, कभी ओझल हो जाती थी। बड़ी मुश्किल से वह उस तक पहुंच पाया। वह अकेली ही थी, उसके साथ रहने वाली युवती की सहेली थी वो।

वो कहां है, हड़बड़ा कर पूछ पाया। उसे खुद समझ नहीं आ रहा था, वह क्या कर रहा है। वो तो अपने गांव चली गई, सहेली बोली - क्यों और उसकी नौकरी, वह पता नहीं।

परेशान सा हो उठा था।

नौकरी छोड़ दी, पेट से थी। अब सहेली झुंझला उठी। उसको तो बिना मिले निकाल दिया, अब क्यों पूछते हो और वह एकदम चली गई।

वह और भी चिंतित हो उठा। सड़क के किनारे ही बैंच बैठ गया। सुन्न जैसा उसका चेहरा बार-बार याद आ रहा था। कितना ध्यान रखती थी उसका। उससे लेती कुछ भी नहीं थी, फिर कितनी बेकद्री की । मिली भी नहीं सीधे नोटिस भिजवा दिया था। अचानक उसे याद आया, वह तो बाप बन गया होता। अब तक बहुत से विचार आ जा रहे थे। आखिर कुछ निश्चय कर वह थके कदमों से अपने फ्लैट लौटा तो रात के दस बजे चुके थे, जब वह इंतजार करती रही पर वह नहीं लौटा।

पत्नी किसी काम का बहाना बना। वह गांव चल पड़ा। सब कुछ तो जानता था, वह उसके बारे में फिर भी उसे, उसी अंधकार में धकेल दिया, जहां से वह किसी तरह बच कर निकली थी।

विधवा मां की इकलौटी पुत्री थी। बड़े जतन से मां ने पाला पोसा था। जब वह 13-14 वर्ष की भी न हुई थी। मां लोगों की नजरें देखकर हैरान परेशान थी। एक रात जब जोर-जोर से बोलते लगे तो मां ने बेटी को अच्छी तरह समझाया और झोंपड़ी की पिछली तरफ की कच्ची दीवार को तोड़ बेटी को भगा दिया था। मामा-मामी के पास सुबह गांव वालों ने उसकी लाश के हाथ में डंडा देखा, खून- भरा- लगता है पूरा मुकाबला कर मरी है।

मामा-मामी का घर ज्यादा दूर तो नहीं था पर उस बच्ची के लिए रात के अंधेरे में बहुत दूर लग रहा था। भले थे दोनों मामा-मामी उसे पढ़ाया लिखाया। फिर वह शहर आ गई और एक कंपनी में उसे नौकरी मिल गई थी। तभी उन दोनों की भेंट हुई थी।

अचानक चलते-चलते उसका ध्यान भंग हुआ। उसे लगा, वही आ रही है सामने से। अब वह दिखने लगी थी। कितनी कमजोर हो गई, न चेहरे पर तेज और न ही चाल में मजबूती। मानो एक थकी हारी इंसान मात्र हो जैसे। जरूर इसकी सहेली ने फोन किया होगा इसे।

क्यों आप हो- उसकी आंखों में आंखे डाल मानो वह गुर्राई।

अचानक वह उसे देखते ही फिर कठोर अनमना हो गया। अपने बेटे को देखने आया हूं।

देखने...

उसने चबाते हुए कहा

-देखने आए हो या लेने आए हो?

-कुछ भी समझ लो- मेरा बच्चा है।

-वह कुछ क्रूर हो कर बोली- कैसा बच्चा।

कौन सा बच्चा, जब रातोंरात छोड़ भागे थे।

तब मुझे भी नहीं पता था वरना तभी अस्पताल चली जाती। देर में पता चला- पर बचा फिर भी, मर गया। निर्विचार चेहरा था उसका।

पुरूष का तो सब कुछ लुट गया था। तूने ही मारा होगा। बोल दिया होगा डाक्टर को कुछ भी।

अब वह घुटने के बल जमीन पर हताश बैठ कर सिसकने लगा।

जो सोचना सोच, जो समझना समझ। अब जा यहां से। किसी ने देख लिया तो मेरी जीना हराम हो जाएगा। उसके स्वर में ऐसी बेताबी थी कि उस पुरूष को भी लगा। अब क्या करना रूक कर। ये तो अब पानी भी नहीं पिलाने वाली।

रात को किसी तरह एक मंदिर की धर्मशाला मिली तो उसने राहत की सांस ली वरना कहीं जमीन पर ही सोना पड़ता। मेरा बच्चा फिर उसे याद हो आई और वह सिसकता कब सो गया पता भी नहीं चला।

उधर, उस युवती को जब पूर्ण विश्वास हो गया कि पुरूष जा चुका है, तब अपने मामा-मामी के घर जाकर उस नन्हें से बच्चे को सीने से लगा कर बहुत देर तक शांति से बैठी रही। बच्चे की भूख लगी थी। मामी दूध की बोतल लेकर, जब वापिस आई तो देखा पहली बार उसकी मां उसे अपना दूध पिला रही थी।

……..000000000……..